04 - कर्नाटक में लोकप्रियता की चाह में हुआ हादसा

05 - संवेदनहीनता की राजनीति का बढ़ता संकट

A Daily News Magazine

इंदौर

शुक्रवार, 6 जून, 2025

06 - विश्व पर्यावरण दिवस पर केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने पौधारोपण कर...

07 - मेपकास्ट द्वारा पूरे प्रदेश में पैंतीस सहयोगी संस्थाओं के माध्यम...

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 236, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

ड्रोन तकनीक से बदल रही है युद्ध की तस्वीर

पंकज श्रीवास्तव

ड्रोन तकनीक ने आधुनिक युद्धों की रणनीति और परिणाम को पूरी तरह बदल दिया है। जानिए कैसे ड्रोन युद्धक्षेत्र में क्रांति ला रहे हैं, और इसकी सैन्य, तकनीकी और नैतिक चुनौतियाँ क्या हैं।

रूस-यूक्रेन युद्ध ने आधुनिक युद्ध की तस्वीर को पूरी तरह बदल दिया है। इस बदलाव का सबसे बड़ा कारण है ड्रोन तकनीक, जिसने न केवल युद्ध की रणनीति को नया रूप दिया, बल्कि विश्व शक्तियों के बीच तकनीकी होड़ को भी तेज कर दिया। यूक्रेन ने अपनी ड्रोन रणनीति से रूस जैसे महाबली देश को भारी नुक़सान पहुंचाया है, जिसने दुनिया को हैरान कर दिया। भारत-पाकिस्तान के हालिया सैन्य तनाव में भी इसका इस्तेमाल हुआ था।

ऑपरेशन स्पाइडर वेब: क्षेत्रफल के लिहाज से दुनिया का सबसे बड़ा देश रूस इस समय यूक्रेन के ड्रोन हमलों से कराह रहा है। दोनों देशों के बीच दस साल से तनाव चला आ रहा है, जो 2022 में पूर्ण युद्ध में बदल गया। मई 2025 में तुर्की के इस्तांबुल में शांति वार्ता हुई थी, और दुनिया को युद्ध रुकने की उम्मीद थी। लेकिन 1 जून 2025 को यूक्रेन ने 'ऑपरेशन स्पाइडर वेब' के तहत रूस के पांच प्रमुख एयरबेस–बेलाया, ड्यागिलेवो, इवानोवो सेवरनी, ओलेन्या, और यूक्रेनका–पर ड्रोन हमले किए। इस हमले में रूस के 40 से ज्यादा स्ट्रैटेजिक बॉम्बर्स यानी बमवर्षक विमान (जैसे Tu-95, Tu-22M, और Tu-50) नष्ट हो गए, जिससे रूस को 7 अरब डॉलर का नुक़सान हुआ और उसकी 34 प्रतिशत क्रूज मिसाइल वाहक क्षमता प्रभावित हुई।

यूक्रेन की सुरक्षा सेवा (एसबीयू) ने 18 महीने की गुप्त योजना के तहत 117 FPV (फर्स्ट पर्सन व्यू) ड्रोन्स को लकड़ी के कंटेनरों और मोबाइल केबिनों में छिपाकर रूस में तस्करी की। हमले के समय इन कंटेनरों की छतें रिमोट से खोली गईं, और ड्रोन्स ने रूसी विमानों पर सटीक हमला किया। इस ऑपरेशन को यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर ज़ेलेंस्की और SBU प्रमुख वासिल मालियुक ने व्यक्तिगत रूप से देखा। ज़ेलेंस्की ने एक्स पर लिखा, 'दुश्मन की जमीन पर एक शानदार ऑपरेशन चलाया गया। इस हमले में सिर्फ रूस के सैन्य लक्ष्यों को निशाना बनाया गया, जिनका इस्तेमाल रूस ने यूक्रेन पर हमले के लिए किया था।'

यूक्रेन का दावा है कि इस हमले में 12 रूसी सैनिक मारे गए और 60 घायल हुए। हालाँकि रूस ने इन आंकड़ों की पुष्टि नहीं की, लेकिन नुक़सान की बात स्वीकारी है। यह ऑपरेशन न केवल यूक्रेन की तकनीकी क्षमता का प्रदर्शन है, बल्कि यह भी दिखाता है कि ड्रोन युद्ध में कितने प्रभावी हो सकते हैं।

ड्रोन क्यों पड़ा नाम?: ड्रोन, या अनमैन्ड एरियल व्हीकल (यूएवी, एक बिना पायलट का विमान है, जिसे रिमोट या सॉफ्टवेयर के जरिए नियंत्रित किया जाता है। ये छोटे ड्रोन्स से लेकर हथियारों से लैस सैन्य ड्रोन्स तक हो सकते हैं। 'ड्रोन' शब्द की उत्पत्ति 1930 के दशक से हुई, जब ब्रिटिश नौसेना ने 'Queen Bee' नामक मानवरहित विमान विकसित किया। इसकी उड़ान की आवाज मधुमक्खी की तरह थी, और मधुमक्खी के नर को अंग्रेजी में 'ड्रोन' कहते हैं। इसलिए, इस तकनीक का नाम ड्रोन पड़ गया।

आज ड्रोन युद्ध का रंग-ढंग पूरी तरह बदल चुके हैं। अब न तो आमने-सामने की लड़ाई की जरूरत है, न ही सैनिकों को जोखिम में डालने की। कंप्यूटर पर बैठकर ड्रोन उड़ाइए और सटीक हमला कीजिए। ड्रोन युद्ध को डिजिटल और हाई-टेक बना रहे हैं। ड्रोन तकनीक ने युद्ध को कई मायनों में बदल दिया है। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएं हैं-

खुफिया और सटीकता– ड्रोन्स में हाई-डेफिनिशन कैमरे और सेंसर रियल-टाइम जानकारी देते हैं, जिससे निगरानी और सटीक हमले संभव हैं।

कम लागत, ज्यादा प्रभाव– ये लड़ाकू विमानों से सस्ते हैं, लेकिन भारी नुकसान पहुंचा सकते हैं।

जोखिम में कमी– चूंकि ड्रोन्स में पायलट नहीं होते, सैनिकों की जान सुरक्षित रहती है।

लंबी दूरी– यूक्रेन ने साइबेरिया जैसे दूर के लक्ष्यों पर हमला किया।

मनोवैज्ञानिक प्रभाव– ड्रोन हमले दुश्मन के मनोबल को तोड़ते हैं।

भारत-पाकिस्तान और ड्रोन– हालिया भारत-पाकिस्तान सैन्य तनाव में भी ड्रोन का इस्तेमाल देखा गया। ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान ने तुर्की के बने ड्रोन्स का उपयोग किया। जम्मू-कश्मीर में आतंकियों को हथियार पहुंचाने के लिए भी ड्रोन्स का सहारा लिया गया। 2021 में जम्मू एयरबेस पर ड्रोन हमला इसका उदाहरण है। 8-9 मई 2025 की रात को पाकिस्तान ने भारत के हवाई क्षेत्र में करीब 500 सस्ते ड्रोन्स का झुंड भेजा, जो लद्दाख से लेकर गुजरात के सर क्रीक तक देखे गए।

विशेषज्ञों का मानना है कि इन ड्रोन्स का मकसद नुकसान पहुंचाने से ज्यादा भारत की वायु रक्षा प्रणाली, रडार कवरेज, और प्रतिक्रिया समय को परखना था।

हालांकि, भारत ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के एंटी-ड्रोन सिस्टम से कई पाकिस्तानी ड्रोन्स को मार गिराया। 2023-2025 के बीच भारत ने ड्रोन डिफेंस में अपनी श्रेष्ठता साबित की है।

ड्रोन तकनीक में अग्रणी देश– ड्रोन तकनीक में अमेरिका अग्रणी है, जिसके MQ-9 Reaper और Predator ड्रोन्स विश्व प्रसिद्ध हैं। तुर्की अपने Bayraktar TBw के लिए जाना जाता है, जबकि चीन सस्ते ड्रोन्स (जैसे CH-4) में आगे है। इजराइल खुफिया ड्रोन्स (जैसे Heron) में माहिर है। भारत भी DRDO के रुस्तम और CATS Warrior जैसे ड्रोन्स के साथ इस क्षेत्र में तेजी से उभर रहा है।

भारत के लिए सबक– ड्रोन अब युद्ध का सबसे अहम हथियार बन चुके हैं। युद्ध जीतने के लिए तकनीकी अनुसंधान और विकास में निवेश जरूरी है। इसके लिए स्कूलों से ही विज्ञान और तकनीक पर जोर देना होगा। भारत जैसे देश के लिए, जो तेजी से उभर रहा है, यह निवेश राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक मंच पर उसकी स्थिति को मजबूत करने के लिए अनिवार्य है।

ड्रोन तकनीक ने युद्ध के मैदान को डिजिटल और रणनीतिक बना दिया है। यूक्रेन ने रूस के खिलाफ इसका शानदार उपयोग किया, और भारत भी तकनीकी विकास और वैज्ञानिक शिक्षा पर ध्यान देकर भारत न केवल अपनी रक्षा क्षमता को मजबूत कर सकता है, बल्कि वैश्विक मंच पर एक तकनीकी महाशक्ति के रूप में उभर सकता है।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

बेंगलुरु भगदड़ मामला

'हाई' हुआ हाईकोर्ट का पारा

राज्य सरकार को भेजा नोटिस, अगली सुनवाई 10 जून को

बेंगलुरु (एजेंसी)। पहली बार आईपीएल विजेता बनने वाली रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु का जश्न बुधवार को बड़े हादसे में बदल गया। विजेता खिलाड़ियों के स्वागत में यहां चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर जुटी भीड़ में

- **भगदड़ में मरने वाले 11 लोगों की उम्र 35 साल से भी कम**

भगदड़ मचने से 11 लोगों की मौत हो गई। 33 घायल हैं। सभी मरने वाले 35 साल से कम उम्र के थे, 3 टीनएजर हैं। कर्नाटक हाईकोर्ट ने इस हादसे पर ऐक्शन लिया है। कर्नाटक सरकार ने कोर्ट में कहा,भगदड़ के बाद घायलों को तुरंत इलाज मुहैया करवाया। 1380 पुलिसकर्मी तैनात किए गए। बेंच ने अटॉर्नी जनरल एक रिपोर्ट पेश करने का आदेश दिया है। अगली सुनवाई 10 जून को होगी। इस मामले की सुनवाई एक्टिंग चीफ जस्टिस वी कामेश्वर राव और जस्टिस सी एम जोशी की बेंच कर रही है। सामाजिक कार्यकर्ता स्नेहमयी कृष्णा ने कब्बन पार्क थाने में शिकायत दर्ज कराई है। शिकायत में सीएम सिद्धारमैया, डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार और कर्नाटक क्रिकेट बोर्ड पर लापरवाही का आरोप लगाया है। बेंगलुरु हादसे में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) का प्रबंधन भी जांच के दायरे मे आ गया है। दरअसल, एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में भगदड़ के कुछ घंटे पहले आरसीबी के सोशल मीडिया अकाउंट से विक्ट्री जुलूस का ऐलान किया गया था।

हाईकोर्ट ने कहा, हमने इस मामले में एडवोकेट जनरल के सामने अपनी चिंता व्यक्त की है। उन्होंने स्टेटस रिपोर्ट दाखिल की है, जिसे रिकॉर्ड पर ले लिया गया है। हाईकोर्ट ने रजिस्ट्री को आदेश दिया गया है कि इस स्वप्रेरित संज्ञान को स्वप्रेरित रिट याचिका की तरह ही पंजीकृत किया जाए। अगली सुनवाई 10 जून, मंगलवार को होगी। यह बयान इस बात का संकेत है कि हाईकोर्ट ने मामले की गंभीरता को देखते हुए स्वतः संज्ञान लिया है और अब इसकी न्यायिक निगरानी में विस्तृत जांच की जाएगी। बेंगलुरु भगदड़ हादसे के ज्यादातर घायलों को बॉरिंग और लेडी कर्जन अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है अस्पताल में भर्ती 10 मरीजों में से केवल दो का ही अभी भी इलाज चल रहा है। चिकित्सा अधीक्षक टी केम्पाराजू ने बताया कि चिन्नास्वामी स्टेडियम में भगदड़ के बाद अस्पताल में कुल 18 मरीजों का इलाज किया गया। बेंगलुरु हादसे में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) का प्रबंधन भी जांच के दायरे मे आ गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 'एक पेड़ मां के नाम' - 2025 अभियान का किया शुभारंभ

हम पौधे को पुत्र समान मानते हैं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि विश्व पर्यावरण दिवस है और गंगा दशहरा भी आज है। दोनों भारतीय संस्कृति के लिए विशेष महत्व रखते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पर्यावरण संरक्षण को 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के साथ जोड़ा है। राज्य सरकार आज से इस अभियान की शुरुआत कर

रही है। हमारी संस्कृति में एक वृक्ष को सौ पुत्रों के बराबर माना है। परंपरागत रूप से कहा जाता है कि एक बावड़ी 10 कुओं के बराबर है, 10 बाबड़ी एक तालाब के बराबर है, 10 तालाब एक पुत्र के बराबर है और 100 पुत्र एक वृक्ष के समान है। पुत्रों की तुलना वृक्ष के साथ करना, प्रकृति की महत्ता को दर्शाता है। अगर प्रकृति संरक्षित रहेगी तो हमें अपने आप फलने-फूलने का अवसर मिलता रहेगा। वर्तमान दौर में भारतीय संस्कृति और प्राचीन ज्ञान को पुर्नस्थापित करने का समय है। आज रिसाइकिलिंग और री-यूज की चर्चा की जाती है, न्यूनतम संसाधनों से बेहतर जीवनशैली की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है। अगली पीढ़ी को बेहतर धरती और वातावरण सौंपने के लिए पर्यावरण संरक्षण के प्रति सभी को सचेत होना होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव विश्व पर्यावरण दिवस पर कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस वर्ष पर्यावरण दिवस का विषय 'प्लास्टिक प्रदूषण उन्मूलन' है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सबको स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में योगदान देना होगा। वायु की गुणवत्ता मे सुधार, प्लास्टिक के उपयोग को कम करने और जल संरक्षण के लिए व्यक्तिगत जवाबदेही और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना जरूरी है। राज्य सरकार पर्यावरण अनुकूल उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। भारतीय पौराणिक कथाओं में वृक्षों, नदियों, पहाड़ों के साथ-साथ वन्यजीवों की पूजा के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा दी गई है, हमें इनसे प्रेरणा लेनी होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 19वीं शताब्दी में महान वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु ने लंदन में रायल सोसाइटी को वैज्ञानिक रूप से सिद्ध करके बताया कि पौधों में प्राण होते हैं। जबकि भारत के लोक मानस में यह ज्ञान सदियों से रचा-बसा है।

पीएम आज करेंगे दुनिया के सबसे ऊंचे ब्रिज का उद्घाटन

- **कटरा से श्रीनगर तक वंदे भारत एक्सप्रेस को दिखाएंगे हरी झंडी**

श्रीनगर (एजेंसी)। दुनिया में आपने कई जगह देखी होंगी, जो या तो विश्व की सबसे बड़ी कहीं जाती हैं या तो फिर एक अनोखे आकार के साथ इन्हें बनाया जाता है और तभी इन्हें दुनियाभर के लोगों के बीच में याद रखा जाता है। इस लिस्ट में अब भारत में बने चेनाब ब्रिज का नाम भी जुड़ने वाला है, जिसे दुनिया के सबसे बड़े ब्रिज के रूप में कश्मीर में बनाया गया है। अब जल्द ही इसे जल्द ही लोगों के लिए खोलने की तैयारी है। बता दें, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कल शुक्रवार, 6 जून को जम्मू-कश्मीर में चिनाब रेल

ब्रिज का उद्घाटन करेंगे। ये पुल दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है, जो भारत की रेलवे व्यवस्था के लिए एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। चिनाब रेल ब्रिज को देखकर आप कह सकते हैं कि ये इंजीनियरिंग का चमत्कार है, जो नदी की सतह से 359 मीटर (1,178 फीट) ऊपर बना है। बता दें, ये एफिल टावर से भी ऊंचा है!

हां, आपने एकदम सही पढ़ा। इस पुल की लंबाई 1,315 मीटर है। स्टील का आर्च ब्रिज जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में बक्कल और कौरि गांवों को जोड़ता है। साथ ही ये पुल उधमपुर-श्रीनगर-बारामुला रेल लिंक प्रोजेक्ट का भी एक अहम हिस्सा है।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में एक बार फिर बड़ा एनकाउंटर

बसवराजू के बाद एक और टॉप कमांडर ढेर, एक करोड़ का था इनाम

बीजापुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई है। पुलिस को इस मुठभेड़ में बड़ी कामयाबी मिली है। पुलिस ने बताया कि जिले के इंद्रावती नेशनल पार्क क्षेत्र में माओवादियों के बड़े कैडर की उपस्थिति की सूचना पर सुरक्षाबलों के संयुक्त दल को नक्सल विरोधी अभियान पर रवाना किया गया था। सूचना मिली है कि इस मुठभेड़ में नक्सली संगठन की सेंट्रल कमेटी का सदस्य सुधाकर मारा गया है। बताया जा रहा है कि सुधाकर नाम का माओवादी 30 साल से सक्रिय था। बृहस्पतिवार को सुरक्षाबलों ने उसे बीजापुर के इंद्रावती टाइगर रिजर्व में मुठभेड़ में मार गिराया। पिछले 6 महीनों में 3 सीसी सदस्य और नक्सल प्रमुख बसवराजू मारे गए हैं। सुधाकर पर 50 लाख का इनाम था। बताया जा रहा है कि मारे गए नक्सलियों की संख्या बढ़ भी सकती है। क्योंकि मुठभेड़ के बाद इलाके में लगातार सर्चिंग जारी है। मुठभेड़ में भारी मात्रा में हथियार और अन्य सामान भी बरामद किए गए हैं। बता दें कि इसके पहले पुलिस मुठभेड़ में टॉप नक्सली बसवराजू को सुरक्षबलों ने मार गिराया था। बसवराजू पर भी लाखों का इनाम रखा गया था। बसवराजू की मौत से नक्सलियों की कमर टूट गई। टीम जब सर्चिंग में निकली तो इसी दौरान घात लगाए बैठे नक्सलियों ने जवानों पर फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई में जवानों ने भी गोलीबारी की। मुठभेड़ के बाद पूरे इलाके में जवानों की सर्चिंग जारी है। नक्सलियों के तेलंगाना स्टेट कमेटी में प्रेस इंचार्ज बंडी प्रकाश समेत बड़े स्तर के नक्सलियों की मौजूदगी की खबर है। बीजापुर एसपी जितेंद्र कुमार यादव, डीआईजी कमलोचन कश्यप और एएसपी मयंक गुर्जर मुठभेड़ की मॉनिटरिंग कर रहे हैं। वहीं एडीजी नक्सल ऑप्श विवेकानंद सिन्हा, बस्तर आईजी पी. सुंदरराज, सीआरपीएफ आईजी राकेश अग्रवाल भी नजर बनाए हुए हैं।

सुप्रभात

मुझसे इक नज़्म का वादा है,
मिलेगी मुझको
डूबती नब्ज़ों में,
जब दर्द को नींद आने लगे
ज़र्द सा चेहरा लिए चाँद,
उफ़क़ पर पहुंचे
दिन अभी पानी में हो,
रात किनारे के क़रीब
न अँधेरा, न उजाला हो,
यह न रात, न दिन
ज़िस्म जब ख़त्म हो
और रूह को जब सांस आए
मुझसे इक नज़्म का
वादा है मिलेगी मुझको।

– गुलजार

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शुक्रवार, 6 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

मोदी ने पीएम आवास में लगाया सिंदूर का पौधा

गुजरात दौरे पर 1971 के भारत-पाक युद्ध की वीरांगनाओं ने दिया था

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर पीएम आवास पर सिंदूर का पौधा लगाया। ये पौधा उन्हें 25-26 मई को गुजरात दौरे के दौरान कच्छ में 1971 के भारत-पाक युद्ध में बहादुरी दिखाने वाली महिलाओं के ग्रुप ने भेंट किया था। दरअसल, इस सिंदूर के पौधे को ऑपरेशन सिंदूर से जोड़कर देखा जा रहा है। 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले का बदला लेने के लिए भारत ने 7 मई को पीओके और पाक में मौजूद 9 आतंकी ठिकानों पर एयरस्ट्राइक की थी। सेना ने 100 आतंकियों को मार गिराया था। इस ऑपरेशन का नाम सिंदूर रखा गया था। सिंदूर का पौधा एक खास पत्तेदार पौधा है, जो धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखता है। इसे शुभता और शक्ति का प्रतीक माना जाता है। यह पौधा पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद होता है और अक्सर मंदिरों और घरों में लगाया जाता है। इसकी देखभाल आसान होती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 26-27 मई को दो दिन के गुजरात दौरे पर पहुंचे थे। इस दौरान भुज में उन्होंने कहा था कि भारत पर आंख उठाने वाले को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। पाकिस्तान को चेतावनी दी कि सुख-चैन से जियो, अपने हिस्से की रोटी खाओ, नहीं तो मेरी गोली तो है ही। आज ही पीएम मोदी ने दिल्ली के भगवान महावीर वनस्थली पार्क में पौधा लगाकर 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान को आगे बढ़ाया और अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट की शुरुआत की। इस परियोजना का लक्ष्य गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली में फैली अरावली पर्वत श्रृंखला के आसपास 5 किलोमीटर चौड़े क्षेत्र में हरियाली बढ़ाने का है। इससे न केवल बंजर जमीन उपजाऊ बनेगी बल्कि थार रेगिस्तान का विस्तार भी रुकेगा। इस अभियान में एक हजार नर्सरी बनाई जाएंगी।

4 राज्यों में एक दिन में 100 से ज्यादा कोविड मरीज मिले

राज्य के अस्पतालों में हुई मॉक-ड्रिल, देश में 4866 एक्टिव केस, 51 मौतें

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में कोरोना के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बुधवार को 15 राज्यों में 564 मरीज मिले, इनमें से 437 मामले सिर्फ 4 राज्यों से हैं। केरल में सबसे ज्यादा 114, कर्नाटक में 112, पश्चिम बंगाल में 106 और दिल्ली में 105 केस सामने आए। इस तरह देश में एक्टिव केसेज की संख्या 4866 हो गई है। इसके अलावा, बुधवार को कोरोना से 7 और लोगों की जान चली गई। महाराष्ट्र में तीन और दिल्ली-कर्नाटक में दो-दो मौतें हुईं। इसके साथ देश में कोरोना से मौत का आंकड़ा 51 पहुंच गया है। इस बीच, केंद्र सरकार गुरुवार को देश भर के राज्यों के चुनिंदा अस्पतालों में मॉक ड्रिल करेगी। इस दौरान इन अस्पतालों में ऑक्सीजन सप्लाई, जरूरी दवाओं की स्थिति और वेंटिलेटर की व्यवस्थाओं को परखा जाएगा। इससे बनी रिपोर्ट में कोरोना की चौथी लहर आने की स्थिति में अस्पतालों की तैयारियों पर रेटिंग दी जाएगी। इससे पहले 2 जून को एक शुरुआती मॉक ड्रिल हुई थी। इसमें हेल्थ सर्विस इन्फ्रास्ट्रक्चर की उपलब्धता के लिए अस्पतालों की रेटिंग दी गई थी।

इवेंट की चमक नहीं, आम लोगों से जुड़ने की है जरूरत

- राहुल गांधी का पीएम मोदी पर तंज, महंगाई पर भी साधा निशाना

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने गुरुवार को केंद्र की भाजपा सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा है। उन्होंने बढ़ती महंगाई और देश की अर्थव्यवस्था में आई मंदी पर भी सरकार को घेरा है। इस दौरान राहुल गांधी ने कहा है कि देश को ऐसी राजनीति चाहिए जो इवेंट की चमक से नहीं, आम लोगों की जिंदगी

की सच्चाई से जुड़ी हो। उन्होंने कहा है कि देश में एक तरफ जहां मांगे घट रही हैं, वहीं दूसरी तरफ महंगाई और लोगों का कर्ज बढ़ता जा रहा है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, आंकड़े सच बोलते हैं। पिछले एक साल में दोपहिया वाहनों की बिक्री 17 प्रतिशत और कार की बिक्री 8.6 प्रतिशत घट गई है।

मध्यप्रदेश अपार संभावनाओं वाला प्रदेश: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

गंगा दशहरा और पर्यावरण दिवस पर 'स्पिरिचुअल और वेलनेस समिट' का आयोजन मध्यप्रदेश की वृहद प्राकृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का निरूपण

*** उज्जैन के विकास कार्यों के लिए मुख्यमंत्री का धार्मिक गुरु श्री चिदानंद सरस्वती ने व्यक्त किया आभार**

मध्यप्रदेश बहुत प्यारी धरती, यहाँ सब कुछ है: धार्मिक गुरु श्री सरस्वती

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश अपार संभावनाओं वाला प्रदेश है। मध्यप्रदेश को प्रकृति का पूर्ण स्नेह प्राप्त है। भारत के हृदय स्थल में स्थित मध्यप्रदेश में उत्कृष्ट एयर कनेक्टिविटी, रेल नेटवर्क और हाईवे हैं जो देश के हर कोने से मध्यप्रदेश की पहुँच को सुगम बनाते हैं। इन बुनियादी ढाँचों का सतत् विस्तार जारी है। हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सतना और दतिया एयरपोर्ट का शुभारंभ कर इन सुविधाओं को और समृद्ध किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वैदिक मन्त्रोचार की पवित्र ध्वनि के बीच दीप प्रज्वलित कर उज्जैन में स्पिरिचुअल और वेलनेस समिट-2025 के मुख्य सत्र का शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज गंगा दशहरा और पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्पिरिचुअल और वेलनेस समिट का आयोजन किया गया है। यह अवसर मध्यप्रदेश की वृहद प्राकृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का निरूपण भी है। उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति और जीवनशैली आज पूरे विश्व का ध्यान आकृष्ट कर रही है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति प्रेम और पूजन अभिन्न अंग है। भारतीय जीवनदृष्टि केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसी जीवनशैली को प्रोत्साहित करती है जिसमें व्यक्ति स्वस्थ रहे और रोगों की संभावना ही न हो। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश को मेडिकल हब बनाने की दिशा में ठोस प्रयास किए जा रहे हैं। उज्जैन में मेडिसिटी की स्थापना की जा रही है और मेडिकल कॉलेज की स्थापना हेतु मात्र ?1 में 25 एकड़ भूमि प्रदान की जा रही है। निजी क्षेत्र को अस्पताल संचालन में भी हरसंभव सहयोग दिया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में यह वर्ष उद्योग वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। रीजनल इंडस्ट्री कॉनक्लेव, ग्लोबल इन्वेस्टर समिट और सेक्टर आधारित समिट के आयोजन से हर क्षेत्र, हर सेक्टर में निवेश को प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्रदेश में 18 नवीन इन्वेस्टर फ्रेंडली पॉलिसी के माध्यम से निवेश प्रक्रिया को सहज और आकर्षक बनाया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जीआईएस में 30 लाख करोड़ से अधिक का निवेश प्रस्ताव और 21 लाख 40 हज़ार से अधिक रोजगारों के सृजन के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। उन्होंने कहा कि रोजगारपरक उद्यमों के लिए 5 हज़ार रुपए प्रति व्यक्ति के मान से विशेष प्रोत्साहन सरकार द्वारा दिया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश पॉवर सरप्लस है, शांति का टापू है, कुशल मैनपॉवर, उत्कृष्ट अधोसंरचना और प्राकृतिक, आध्यात्मिक स्थल इसे स्पिरिचुअल और वेलनेस क्षेत्र में निवेश के लिए आदर्श स्थल बनाते हैं। उन्होंने कहा कि नीतिगत सहयोग के साथ-साथ 100 करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्तावों के लिए विशेष सहयोग कस्टमाइज्ड नीति के रास्ते भी उपलब्ध हैं। उन्होंने समस्त निवेशकों से मध्यप्रदेश में निवेश करने का आह्वान किया।

ऑपरेशन ब्लू स्टार बरसी पर आज अमृतसर बंद

- दल खालसा का रोष मार्च, खालिस्तान की उठी मांग, जीएनडीयू ने सभी परीक्षाएं की स्थगित

अमृतसर (एजेंसी)। ऑपरेशन ब्लू स्टार की बरसी के मद्देनजर दल खालसा की तरफ से 6 जून शुक्रवार को अमृतसर बंद का आहवान किया गया है। इससे पहले आज शाम दल खालसा की तरफ से अमृतसर के आसपास के एरिया में रोष मार्च निकाला गया। जहां खालिस्तान की मांग रखी गई और इसे

लेकर नारे भी लगाए गए। खालिस्तान के झंडे लेकर दल खालसा समर्थक सड़कों पर उतरे। ब्लू स्टार ऑपरेशन की बरसी को लेकर सुरक्षा एजेंसियां भी सतर्क हो गईं और शिक्षण संस्थानों ने भी इसे लेकर सावधानी के तौर पर कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी ने अपने सभी कॉलेजों में 6 जून को होने वाली परीक्षाओं को स्थगित कर दिया है।

गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी में परीक्षाएं स्थगित- गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी की तरफ से जारी आदेशों के अनुसार, 6 जून को होने वाली सभी वार्षिक और सेमेस्टर परीक्षाओं को प्रबंधकीय कारणों के चलते स्थगित किया गया है।

टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा ने कर ली शादी

- बीजेडी के नेता पिनाकी मिश्रा बने जीवनसाथी

नई दिल्ली (एजेंसी)। तृणमूल कांग्रेस की तेजतर्रार लोकसभा सांसद महुआ मोइत्रा ने 3 मई को गुपचुप तरीके से शादी कर ली। महुआ मोइत्रा के जीवनसाथी बने हैं बीजू जनता दल के वरिष्ठ नेता और पुरी से लोकसभा सांसद रहे पिनाकी

मिश्रा। फिलहाल इस खबर को लेकर पार्टी और खुद सांसद ने पूरी तरह चुप्पी साध रखी है। द टेलीग्राफ की रिपोर्ट के मुताबिक, यह शादी जर्मनी में हुई। प्राप्त एक तस्वीर में महुआ मोइत्रा जर्मनी में मुस्कुराती हुई दिखाई दे रही हैं, पारंपरिक परिधान और सोने के गहनों से सजी हुई हैं। इसी तस्वीर ने इस गुपचुप शादी की पुष्टि कर दी है। हालांकि, अब तक आधिकारिक तौर पर ऐलान नहीं हुआ है।

अब भारत में बनेगी राफेल फाइटर जेट की मेन बॉडी

पहली बार फ्रांस के बाहर अन्य देश में होगी मैन्युफैक्चरिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। फ्रांस की कंपनी डसॉल्ट एविएशन और भारत की टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड ने मिलकर हैदराबाद में राफेल फाइटर जेट की मेन बॉडी (फ्यूजलाज) बनाने का ऐलान किया है। ये पहली बार होगा जब राफेल की मेन बॉडी फ्रांस के बाहर बनेगी। राफेल की पहली फ्यूजलाज यूनिट 2028 में असेंबली लाइन से बाहर आएगी। इस प्लांट से हर महीने दो पूरी फ्यूजलाज तैयार करने की उम्मीद है। टाटा और डसॉल्ट की ये साझेदारी भारत के रक्षा क्षेत्र में निजी कंपनियों की भागीदारी को बढ़ाएगी। डसॉल्ट ने बताया कि ये प्रोजेक्ट भारत और फ्रांस के बीच रक्षा सहयोग का एक बड़ा कदम है। इससे भारत में रक्षा उपकरण बनाने की क्षमता बढ़ेगी और स्थानीय इंजीनियर्स को विश्व स्तरीय तकनीक सीखने का मौका मिलेगा। टाटा ग्रुप पहले से ही डसॉल्ट के साथ मिलकर राफेल और मिराज 2000 जैसे विमानों के पुर्जे बनाता है। टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स के सीईओ सुकरन सिंह ने कहा,ये साझेदारी भारत के हवाई जहाज बनाने के सफर में एक बड़ा कदम है। भारत में राफेल की पूरी मेन बॉडी बनाना दिखाता है कि टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स की काबिलियत पर कितना भरोसा बढ़ रहा है और डसॉल्ट एविएशन के साथ हमारा रिश्ता कितना मजबूत है। ये इस बात का भी सबूत है कि भारत ने एक आधुनिक और मजबूत एयरोस्पेस मैन्युफैक्चरिंग सिस्टम तैयार करने में जबरदस्त तरक्की की है, जो दुनिया के बड़े प्लेटफॉर्म्स को सपोर्ट कर सकता है।

ट्रंप की दादागिरी के आगे नहीं झुकेगा भारत

दोस्त रूस के प्लान पर जल्द लग सकती है मुहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाल के महीनों में वैश्विक मंच पर भू-राजनीतिक समीकरण तेजी से बदल रहे हैं। एक तरफ अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपनी दूसरी पारी में आक्रामक व्यापार नीतियों और कूटनीतिक दबाव के साथ उभरे हैं, वहीं भारत अपनी स्वतंत्र विदेश नीति को और मजबूत करने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। इस बीच, भारत के पुराने और भरोसेमंद दोस्त रूस ने रूस-भारत-चीन (ऋष्ट) त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन को दोबारा खड़ा करने का प्रस्ताव रखा है, जिसे भारत ने सकारात्मक रूप से लिया है। यह कदम न केवल भारत की मल्टी-अलाइनमेंट नीति को दर्शाता है, बल्कि यह भी संकेत देता है कि भारत ट्रंप के दबाव के सामने झुकने को तैयार नहीं है। आइए, इस पूरे घटनाक्रम को समझते हैं और जानते हैं कि ऋष्ट की वापसी

भारत के लिए क्या मायने रखती है। ऋष्ट यानी रूस-भारत-चीन त्रिपक्षीय समूह की शुरुआत 1990 के दशक में रूस के तत्कालीन प्रधानमंत्री येवगेनी प्रिमाकोव के दिमाग की उपज थी। इसका मकसद था एक ऐसी व्यवस्था बनाना जो पश्चिमी देशों, खासकर अमेरिका के नेतृत्व वाली एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था को चुनौती दे सके। यह समूह बहुपक्षीयता यानी मल्टीलैटरलिज्म और संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक मंचों को मजबूत करने की वकालत करता है। हालांकि, 2020 में भारत-चीन सीमा पर गलवान घाटी में हुए हिंसक टकराव के बाद ऋष्ट की गतिविधियां लगभग ठप हो गई थीं। भारत और चीन के बीच तनाव इतना बढ़ गया था कि दोनों देशों के नेताओं ने एक-दूसरे से द्विपक्षीय बातचीत तक बंद कर दी थी। इस दौरान भारत ने अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ क्वाड (ऋष्ट) गठबंधन को और मजबूत किया, जिसे चीन के खिलाफ एक रणनीतिक कदम के रूप में देखा जाता है। दूसरी तरफ, रूस ने भारत और चीन के बीच मध्यस्थता की कोशिश की, लेकिन सीमा विवाद के चलते ऋष्ट की गति रुक गई। हाल ही में रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने ऋष्ट को फिर से सक्रिय करने की जोरदार वकालत की। पिछले महीने उन्होंने कहा कि भारत और चीन के बीच सीमा तनाव कम होने के बाद अब समय आ गया है कि ऋष्ट को दोबारा मजबूत किया जाए। लावरोव ने इसे बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था का प्रतीक बताया और कहा कि यह ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) जैसे समूहों का आधार है।

अब आम यात्रियों को आसानी से मिलेगा तत्काल टिकट

पहले 10 मिनट सिर्फ आधार ओटीपी से कर सकेंगे बुकिंग, कालाबाजारी कम होगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगर आप भी ट्रेन के तत्काल टिकट बुक करने की कोशिश करते हैं और हर बार नो टिकट अवेलेबल दिखाता है, तो अब तत्काल टिकट बुक करने की समस्या कम होने वाली है। रेलवे तत्काल टिकट बुकिंग में बड़ा बदलाव करने जा रही है।

जल्द ही टिकट बुकिंग के वक्त ई-आधार वेरिफिकेशन जरूरी होगा। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स के जरिए इसकी जानकारी दी है। उन्होंने कहा इस नियम से जरूरतमंद और सही यात्रियों को कन्फर्म टिकट मिल सकेगा। इससे फर्जी आईडी, एजेंट्स की धांधली और बॉट्स की बुकिंग पर लगाम लगेगी और आम यात्रियों को कन्फर्म टिकट मिलना आसान हो जाएगा।

हर दिन करीब 225,000 यात्री भारतीय रेलवे के ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के जरिए तत्काल टिकट बुक करते हैं। 24 मई से 2 जून तक ऑनलाइन तत्काल टिकट बुकिंग पैटर्न से पता चला है कि तत्काल विंडो खुलने के बाद पहले मिनट में औसतन 108,000 एसी क्लास टिकटों में से सिर्फ 5,615 ही बुक हुए। हालांकि, दूसरे मिनट में 22,827 टिकट बुक हुए। एसी क्लास में विंडो खुलने के पहले 10 मिनट के भीतर औसतन 67,159 टिकट ऑनलाइन बुक हुए, जो ऑनलाइन बुक किए गए सभी टिकटों का 62.5 फीसदी है। इसके अलावा, बाकी 37.5 फीसदी टिकट चार्ट बनने से 10 मिनट पहले बुक हुए, जिसमें 3.01 फीसदी तत्काल टिकट खिड़की खुलने के 10 घंटे बाद बुक हुए। वहीं, नॉन एसी श्रेणी में 24 मई से 2 जून तक रोजाना औसतन 118,567 टिकट ऑनलाइन बुक किए गए। इनमें से 4,724 टिकट - लगभग 4 फीसदी - पहले मिनट में बुक किए गए, जबकि 20,786 टिकट - लगभग 17.5 फीसदी - दूसरे मिनट में बुक किए गए। लगभग 66.4 फीसदी टिकट खिड़की खुलने के बाद पहले 10 मिनट के भीतर बिक गए। इसके अतिरिक्त, लगभग 84.02 फीसदी टिकट खिड़की खुलने के पहले घंटे के भीतर बिक गए, जबकि शेष टिकट अगले 10 घंटों में बिके। इससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि तत्काल टिकट यात्रियों को ऑनलाइन सिस्टम के माध्यम से उपलब्ध कराए जाते हैं और लगभग 12 फीसदी तत्काल टिकट ही बुक होते हैं। इसके अलावा, करीब 20 लाख अन्य खातों को संदिग्ध के रूप में चिह्नित किया गया है और उनके आधार और अन्य दस्तावेजों के आधार पर जांच की जा रही है। वर्तमान में, आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर 13 करोड़ से अधिक एक्टिव यूजर्स हैं, जिनमें से केवल 1.2 करोड़ ही आधार-सत्यापित हैं। आईआरसीटीसी ने उन सभी खातों के लिए विशेष सत्यापन करने का निर्णय लिया है जो आधार से प्रमाणित नहीं हैं। संदिग्ध पाए जाने वाले अकाउंट्स को बंद कर दिया जाएगा। रेलवे का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि वास्तविक यात्रियों को सभी प्रकार के तत्काल टिकट मिलें। जो यूजर्स अपने आईआरसीटीसी अकाउंट को आधार से जोड़ते हैं, उन्हें तत्काल टिकट बिक्री के पहले 10 मिनट के दौरान प्राथमिकता से बुकिंग मिलेगी।

सांप्रदायिक वीडियो पोस्ट मामले में शर्मिष्ठा को राहत

कलकत्ता हाईकोर्ट से मिल गई अंतरिम जमानत

कोलकाता (एजेंसी)। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर शर्मिष्ठा पनोली को कलकत्ता हाई कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। सांप्रदायिक वीडियो पोस्ट करने के मामले में कोर्ट ने शर्मिष्ठा को अंतरिम जमानत दे दी है। हालांकि, उसके देश छोड़ने पर रोक लगाई गई है। इससे पहले, मंगलवार को हाई कोर्ट ने पनोली को जमानत देने से इनकार कर दिया था, लेकिन गुरुवार को हुई सुनवाई में उसे बेल दे दी गई। पिछली सुनवाई के दौरान जस्टिस पार्थ सारथी चटर्जी की पीठ ने कहा था कि शर्मिष्ठा की टिप्पणियों ने एक समुदाय की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाई है और भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है, इसलिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दुरुपयोग दूसरों को ठेस पहुंचाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। जस्टिस ने राज्य सरकार को अगली सुनवाई पर केस डायरी पेश करने का आदेश दिया था। अदालत ने यह भी निर्देश दिया था कि गार्डन रीच पुलिस स्टेशन के उस मामले की जांच की जाएगी जिस संबंध में पनोली को गुरुग्राम से गिरफ्तार किया गया था।

मां ने ही की 8 माह की बच्ची की हत्या

इंदौर में हौज में डूबोकर ढक्कन बंद किया; बोली- सास गोद में नहीं देती थी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में बुधवार को घर के आंगन में बनी हौज (पानी की टंकी) में 8 माह की बच्ची का शव मिला। देर रात तक पुलिस ने बच्ची की मां से पूछताछ की। सख्ती दिखाने पर मां वर्षा चौहान ने कबूल लिया कि उसने ही बच्ची की हत्या की है। उसने बताया कि सास बेटी को गोद में लेने नहीं देती थी, इसलिए उसे मार डाला। द्वारकापुरी के प्रजापत नगर की रहने वाली आरोपी वर्षा चौहान ने पुलिस को बताया कि उसने बच्ची को हौज में डुबोकर मार डाला। इसके बाद हौज का ढक्कन बंद कर ऊपर पानी की मोटर रख दी, ताकि किसी को शक न हो। फिर खुद ही शोर मचाकर बच्ची के गायब होने की बात कही।

सात दिन पहले भी मायरा को पटका था- जांच में सामने आया कि वर्षा की मानसिक स्थिति पिछले कुछ समय से ठीक नहीं है। परिजनों ने बताया कि एक हफ्ते पहले भी वर्षा ने बच्ची को जमीन पर पटक दिया था। वो इस बात से नाराज थी कि सास ने उसे मायरा को गोद में देने से मना कर दिया था।

मां वर्षा के पास ही बिस्तर पर थी मायरा- बच्ची के पिता अविनाश चौहान रेडीमेड कपड़ों का कारोबार करते हैं। अविनाश ने पुलिस को बताया कि सुबह वह बाथरूम में थे। उस वक्त मायरा अपनी मां वर्षा के पास ही बिस्तर पर थी। थोड़ी देर बाद वर्षा अचानक चिल्लाने लगी कि बच्ची नहीं मिल रही है। परिजनों और पड़ोसियों ने घर और आसपास के इलाके में बच्ची को ढूंढा। बाद में जब आंगन में बनी हौज का ढक्कन हटाया गया, तो अंदर मायरा का शव पड़ा था।

बीमारी की वजह से टूटी पहली शादी

वर्षा की ये दूसरी शादी है। उसकी पहली शादी बड़ोद गांव में हुई थी, जहां उसकी ढाई साल की एक बेटी भी है। सालों से उसे भूलने की आदत है। साथ ही गुस्सा भी बहुत आता है। इस वजह से पहले पति से उसके झगड़े होते रहे और आखिरकार ससुराल वालों ने उससे रिश्ता खत्म कर लिया। फिर वर्षा की शादी अविनाश से हुई, लेकिन उसके गुस्से की वजह से हालात ठीक नहीं रहे। खासकर जब मायरा का जन्म हुआ, तो सास ने बच्ची को उससे दूर रखना शुरू कर दिया। इस बात को लेकर सास और वर्षा के बीच अक्सर झगड़े होते थे। कई बार वह गुस्से में घर का सामान भी फेंक देती थी। आस-पड़ोस के लोग भी उसकी हरकतों से परेशान थे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर हुए आयोजन

वॉकथॉन, सीड बॉल निर्माण और पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन, महापौर ने बच्चे के साथ बनाई पेंटिंग

इंदौर (एजेंसी)। विश्व पर्यावरण दिवस पर इंदौर के गांधी हॉल में जागरूकता पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। ये आयोजन नगर निगम के स्वच्छ भारत मिशन और राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। प्रोग्राम की शुरुआत में वॉकथॉन हुई। जिसे एडीसी अभिलाष मिश्रा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया था। वॉकथॉन में बड़ी संख्या में लोग, स्वच्छता मित्र, स्टूडेंट्स और स्वयंसेवक शामिल हुए। यह आयोजन स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था। इसके बाद स्वयं सेवकों के सहयोग के सीड बॉल बनाने की गतिविधि संपन्न हुई। जिसका उद्देश्य शहर में हरियाली बढ़ाना और युवाओं को प्रकृति से जोड़ना था।

पर्यावरण थीम पर पेंटिंग प्रतियोगिता, मेयर ने भी बनाई पेंटिंग- इसके बाद विश्व पर्यावरण दिवस की थीम पर पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें बच्चों और युवाओं ने भाग लिया और पर्यावरण संरक्षण संबंधी संदेशों को रंगों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। इसका आयोजन इंदौर नगर निगम ने किया। प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को 1500 रुपए नगद पुरस्कार और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। इस मौके पर महापौर पुष्य मित्र भार्गव, एमआईसी मेंबर अभिषेक शर्मा बबलू सहित निगम के अधिकारी शामिल हुए।

भस्म आरती दर्शन, साकार रूप में दिए दर्शन

महाकाल के मस्तक पर रजत त्रिपुण्ड और पुष्प मुकुट, भस्म आरती में किया राजसी श्रृंगार

उज्जैन (एजेंसी)। उज्जैन स्थित विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में गुरुवार तड़के भस्म आरती के साथ भगवान महाकाल का राजसी श्रृंगार किया गया। सुबह चार बजे मंदिर के पट खुलते ही पुजारी द्वारा गर्भगृह में स्थापित सभी देवी-देवताओं की विधिपूर्वक पूजा-अर्चना की गई। सबसे पहले भगवान महाकाल का जलाभिषेक कर दूध, दही, घी, शक्कर और फलों के रस से बने पंचामृत से स्नान कराया गया। इसके बाद प्रथम घंटाल बजाकर 'हरि ओम' जल अर्पित किया गया। कपूर आरती के साथ भगवान को रजत चंद्र, चंदन, भांग और गुलाब के फूलों की माला पहनाई गई। जटाधारी भगवान महाकाल को रजत मुकुट, त्रिपुण्ड और चंदन से सजाया गया। श्रृंगार पूर्ण होने पर ज्योतिर्लिंग को कपड़े से ढंका गया और इसके पश्चात पवित्र भस्म अर्पित की गई। भगवान महाकाल का श्रृंगार भांग, ड्रायफ्रूट, आभूषण और सुगंधित पुष्पों से राजा स्वरूप में किया गया। श्रृंगार के बाद भगवान को शेषनाग का रजत मुकुट, रजत मुण्डमाल, रुद्राक्ष की माला और गुलाब के सुगंधित फूलों की माला पहनाई गई। भगवान को फल और मिष्ठान्न का भोग अर्पित किया गया। भस्म आरती में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने शामिल होकर बाबा महाकाल के दिव्य दर्शन किए और आशीर्वाद प्राप्त किया। महा निर्वाणी अखाड़ा की ओर से भगवान को भस्म अर्पित की गई। मान्यता है कि भस्म अर्पण के पश्चात भगवान महाकाल निराकार से साकार रूप में दर्शन देते हैं।

शिलांग की होटल से सामने आया राजा-सोनम का सीसीटीवी फुटेज

इंदौर में माता-पिता ने 25 दिन में देखी बेटे की शादी और अर्थी, बहू लापता

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के साकार नगर में रहने वाले राजा रघुवंशी और उनकी पत्नी सोनम का एक सीसीटीवी फुटेज सामने आया है, जिसमें दोनों शिलांग के होटल के रिसेप्शन पर नजर आ रहे हैं। उन्होंने 22 मई की शाम को होटल से चेकआउट किया। यहां से सिसौरा की होटल पहुंचे। लगेज रखकर दंपती माउलाकया गांव की ओर चले गए। इधर, बुधवार शाम राजा का शव जैसे ही उसके घर पर पहुंचा, पिता जमीन पर गिर पड़े और दहाड़ मारकर रोने लगे। मां उमा बार-बार अपने बेटे को याद करती नजर आईं। रिश्तेदारों और आसपास के लोगों की भीड़ लग गई। परिवार ने बताया कि कुछ दिन पहले ही पिता अशोक को दिल का दौरा आया था। उन्होंने महज 25 दिनों में बेटे की शादी की खुशियां और उसकी मौत देखी। बता दें, हनीमून पर गए राजा रघुवंशी का शव 2 जून को शिलांग में वेइसाडोंग फॉल्स के पास रियात अरलियांग में करीब 150 फीट नीचे मिला था। पत्नी सोनम की अभी भी किसी तरह की जानकारी सामने नहीं लग पाई।

सोनम की तलाश में खून से सना जैकेट मिला

राजा की हत्या का पता लगाने और सोनम को ढूंढने के लिए पुलिस की तलाश जारी है। पुलिस सोहरारिम के पास स्थित मॉकमा गांव के खड़ी और जंगली इलाकों में सोनम रघुवंशी की तलाश कर रही है। सोहरा सिविल सब-डिवीजन के एसडीपीओ बाह पिनहुन सिएम के नेतृत्व में पुलिस टीम ने एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, एसआरटी, एफईएस, विशेष जांच दल (एसआईटी) के साथ सर्चिंग की। पुलिस ने बुधवार की सुबह एक जैकेट बरामद की है। हालांकि, अभी तक यह पुष्टि नहीं हुई है कि जैकेट सोनम की है या नहीं। राजा के परिवार ने भी कहा है कि जो जैकेट मिली है वो सोनम की नहीं है।

सोनम का भाई गोविंद पुलिस के साथ शिलांग में अब सोनम का भाई गोविंद रुका हुआ है। सोनम के पिता पैरालाइज्ड है। वहीं, परिवार में अब उसका एक भाई है। उसने दामाद राजा के शव को इंदौर भिजवा दिया। परिवार का मानना है कि वह सकुशल आ जाए बस इतना काफी है। वहां की स्थितियां अभी ठीक नहीं है। पुलिस के मुताबिक अभी सोनम को लेकर तलाश की जा रही है।

परिजन का आरोप- पुलिस सही से जांच नहीं कर रही

राजा रघुवंशी की हत्या का खुलासा होने के बाद पुलिस ने मामले में सीबीआई जांच की मांग की है। शिलांग से वापस आई भाई विपिन का भी कहना था कि वहां सब कुछ ठीक नहीं है। काफी कुछ संवेदनशील मामलों को दबाया जाता है। राजा के लापता होने के बाद से होटल मैनेजर, चाय-नाश्ते की दुकान वाला और गाइड संदेह के घेरे में है, लेकिन पुलिस ने उनसे ठीक से पूछताछ ही नहीं की। गाइड को जब पुलिस सामने लेकर आई तो वह एक रास्ते पर जाकर राजा और सोनम को छोड़ने की बात कहने लगा। जबकि आगे का रास्ता दोनों को भी नहीं पता था।

20 मई को हनीमून पर हुए थे रवाना

राजा और सोनम रघुवंशी की शादी 11 मई को इंदौर में हुई थी। वे 20 मई को हनीमून के लिए रवाना हुए थे। राजा इंदौर में ट्रांसपोर्ट का व्यवसाय करते हैं। दंपती इंदौर से बेंगलुरु होते हुए गुवाहाटी पहुंचे, जहां मां कामाख्या के दर्शन करने के बाद 23 मई को मेघालय के शिलांग रवाना हुए। शुरुआत में परिवार की दोनों से बात होती रही, फिर संपर्क टूट गया। राजा के बड़े भाई सचिन रघुवंशी को पहले लगा कि नेटवर्क का इश्यू होगा, लेकिन 24 मई से दोनों के मोबाइल बंद हो गए तो चिंता होने लगी। कई प्रयासों के बाद जब कोई संपर्क नहीं हो सका तो सोनम के भाई गोविंद और राजा के भाई विपिन इमरजेंसी फ्लाइट से शिलांग पहुंचे। इसके बाद वे सर्चिंग टीम के साथ जुड़े।

इंदौर में कोरोना के 7 नए मरीज

पांच की मथुरा, केरल, उड़ीसा, बद्रीनाथ और रायपुर की ट्रैवल हिस्ट्री, सभी होम आइसोलेट

इंदौर (एजेंसी)। शहर में कोरोना मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। बुधवार को सात नए कोरोना पॉजिटिव मरीज मिले हैं। ये सभी इंदौर के हैं। इन सभी को होम आइसोलेट किया गया है। इनमें से पांच की ट्रैवल हिस्ट्री मिली है। इंदौर में अब तक कुल कोरोना संख्या 31 हो गई है। इंदौर में इस साल कोरोना 24 मरीज मिले हैं जबकि 7 अन्य जिलों से हैं। वर्तमान में अब एक्टिव केसों की संख्या 14 हो गई है। इनमें से अधिकांश में केवल खांसी और जुकाम जैसे हल्के लक्षण ही दिखाई दे रहे थे। बुधवार को जो 7 नए मरीज मिले हैं उनमें 43 वर्षीय महिला की मथुरा, 69 वर्षीय महिला की केरल, 29 वर्षीय युवक की उड़ीसा, 48 वर्षीय महिला की बद्रीनाथ और 36 वर्षीय महिला की रायपुर की ट्रैवल हिस्ट्री मिली है। दो अन्य मरीज 45 और 36 वर्षीय पुरुष हैं। उनकी ट्रैवल हिस्ट्री नहीं है। इन मरीजों के कॉन्टैक्ट में आए लोगों की ट्रेसिंग की जा रही है। सभी मरीज होम आइसोलेट हैं और हालत ठीक हैं। सीएमएचओ डॉ. बीएस सेतिया ने बताया कि नए मरीजों के सैंपल जीनोम सिक्वेंसिंग के लिए भोपाल भेजे जा रहे हैं।

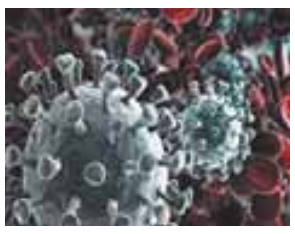

जल-गंगा संवर्धन अभियान

200 साल पुरानी बावड़ी का जीर्णोद्धार शुरू, नया रूप दे रहे

इंदौर (एजेंसी)। जल-गंगा संवर्धन अभियान के तहत नगर निगम ने जलस्रोतों के संरक्षण पर काम कर रहा है। अब तक 100 से ज्यादा पुरानी बावड़ियों और जलस्रोतों की सफाई और संरक्षण का कार्य पूरा किया जा चुका है। बुधवार को वार्ड 58 में बक्षीबाग की करीब 200 साल पुरानी ऐतिहासिक बावड़ी को पुनर्जीवित करने का काम शुरू हुआ। यह बावड़ी लंबे समय से उपेक्षित थी और खस्ताहाल हो चुकी थी। अब इसे नया रूप देकर क्षेत्रवासियों के लिए उपयोगी बनाया जा रहा है। महापौर पुष्यमित्र भार्गव बोले कि यह केवल सफाई नहीं, बल्कि भूजल संरक्षण की दिशा में ठोस कदम है। वर्षा जल के संरक्षण और भूगर्भीय जल स्तर बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। मौके पर महापौर के साथ क्षेत्रीय विधायक गोलू शुक्ला, एमआईसी सदस्य अभिषेक शर्मा, पार्षद संगीता चौधरी, सुरेश टाकलकर, प्रशांत बडवे और नगर निगम के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। रिचार्ज साफ्ट लगा रहे : महापौर ने बताया कि जल भराव वाले स्थानों पर रिचार्ज साफ्ट लगाए जा रहे हैं। इनसे बारिश का पानी फिल्टर होकर ज़मीन में जाएगा। अब तक 200 से ज्यादा रिचार्ज शाफ्ट बनाए जा चुके हैं।

कांग्रेस का संगठन सृजन अभियान

नेताओं-कार्यकर्ताओं से चर्चाओं का दौर, पूर्व गृहमंत्री शाम को देंगे जानकारी

इंदौर (एजेंसी)। कांग्रेस के संगठन सृजन अभियान के दौरान इंदौर में अगले दो दिन पार्टी के वरिष्ठ नेता कार्यकर्ताओं से संगठन की मजबूती पर चर्चा करेंगे। अभियान की शुरुआत आज से हो गई है। पूर्व गृहमंत्री बाला बच्चन इंदौर शहर कांग्रेस कमेटी कार्यालय (गांधी भवन) पहुंचेंगे और संगठन सृजन अभियान को लेकर नेताओं और कार्यकर्ताओं से जानकारी साझा करेंगे। बच्चन अभियान के लिए इंदौर के चीफ को-ऑर्डिनेटर बनाए गए हैं। वे कांग्रेस कार्यालय में प्रेसवार्ता भी करेंगे। बता दें कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश अनुसार इंदौर में संगठन सृजन अभियान की विधिवत शुरुआत कांग्रेस कार्यालय गांधी भवन में की गई है। जिसके अंतर्गत इंदौर की 6 विधानसभाओं के नेताओं-कार्यकर्ताओं से चर्चाओं का दौर चलेगा। केंद्रीय पर्यवेक्षक कांग्रेस सांसद गुरजीत सिंह ओजला, पूर्व मंत्री मध्यप्रदेश शासन बाला बच्चन, रवि जोशी, गजेंद्र सिसोदिया नेताओं कार्यकर्ताओं से चर्चा कर रहे हैं। शहर कांग्रेस अध्यक्ष सुरजीत सिंह चड्ढा ने बताया कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भोपाल में 61 पर्यवेक्षकों को जिलेवार नियुक्त करते हुए कांग्रेस संगठन को और अधिक सशक्त और मजबूती देने के लिए गुजरात के बाद मध्य प्रदेश और हरियाणा में इस अभियान की शुरुआत की है।

दो दिन चर्चाओं का दौर

इस प्रक्रिया को विस्तार देते हुए आज से लगातार दो दिवस तक विधानसभावार चर्चाओं का दौर चलेगा, जिसमे केंद्रीय एवं प्रादेशिक ऑब्जर्वर की उपस्थिति में कांग्रेस कार्यकर्ता अपनी बात रखेंगे। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता अमित चौरसिया ने बताया कि आज से कांग्रेस कार्यालय गांधी भवन में विधानसभावार चर्चाओं का आयोजन किया गया है, जिसके तहत 5 और 6 जून को विधानसभावार चर्चा होगी। गुरुवार को विधानसभावार चर्चाएं शुरू हो चुकी हैं, जो शाम तक चलेंगी। वहीं शुक्रवार को होने वाली चर्चाएं सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक चलेंगी।

इंदौर में चलती ट्रेन से गिरकर छात्रा की मौत

सहेली का हाथ पकड़ते वक्त पैर फिसला, प्लेटफॉर्म और ट्रेन के बीच फंसी, सिवनी लौट रही थी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर रेलवे स्टेशन पर बुधवार रात चलती ट्रेन में चढ़ने की कोशिश कर रही 21 वर्षीय छात्रा गुंजन की मौत हो गई। वह प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रही थी और अपने घर सिवनी लौटने के लिए स्टेशन पहुंची थी। जानकारी के मुताबिक, गुंजन अपनी सहेली रिषु के साथ इंदौर-जबलपुर ट्रेन से सिवनी जा रही थी। जैसे ही ट्रेन चलने लगी, रिषु तो चलती ट्रेन में चढ़ गई, लेकिन गुंजन ने उसका हाथ पकड़कर चढ़ने की कोशिश की। इसी दौरान उसका पैर फिसल गया और वह ट्रेन व प्लेटफॉर्म के बीच फंस गई। मौके पर मौजूद लोगों ने गुंजन को बाहर निकाला, लेकिन तब तक वह गंभीर रूप से घायल हो चुकी थी। तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। जीआरपी पुलिस ने बताया कि गुंजन इंदौर में रहकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रही थी। हादसे की सूचना परिजनों को दे दी गई है। फिलहाल मामले की जांच की जा रही है।

पारिवारिक विवाद में किसान ने खाया जहर, मौत

तेजाजी नगर क्षेत्र के असरावद खुर्द गांव में पारिवारिक विवाद के चलते एक किसान ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली। गंभीर हालत में दो दिन तक अस्पताल में भर्ती रहने के बाद बुधवार को उसकी मौत हो गई। तेजाजी नगर पुलिस के अनुसार, मृतक की पहचान 30 वर्षीय दीपक राजपूत पुत्र संतोष राजपूत निवासी असरावद खुर्द के रूप में हुई है। परिजनों ने उसे 2 जून की दोपहर हालत बिगड़ने पर ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया था। बाद में हालत में सुधार न होने पर बुधवार को एमवाय अस्पताल लाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। परिवार के अनुसार, घटना के वक्त दीपक घर पर अपनी पत्नी, बेटी और बेटे के साथ था। वहीं उसके माता-पिता खेत पर गए हुए थे और दोनों भाई काम से बाहर थे।

मौसम में ठंडक,तापमान सामान्य से 8 डिग्री कम

सुबह से छाए बादल, आज भी हो सकती है रिमझिम बारिश

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में इन दिनों दिन का तापमान कम होने से राहत है। रात में भी हल्की ठण्डक का एहसास हो रहा है। दिन का तापमान 32.3 (-8) डिग्री सेल्सियस रहा। यह सामान्य से 8 डिग्री कम है। गुरुवार सुबह से बादल छाए हुए थे। मौसम वैज्ञानिकों का अनुमान है आज भी प्री मानसून में इंदौर और आसपास के कुछ क्षेत्रों में हल्की बारिश हो सकती है। इससे पहले, मंगलवार को दिन का तापमान 31.3 (-9) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था जबकि रात का तापमान 23.5 (-2) डिग्री सेल्सियस था। फिर बुधवार को दिन के तापमान में एक डिग्री का इजाफा हुआ लेकिन ठण्डक में कोई खास अंतर नहीं था। इस दौरान सुबह से शाम तक बादल छाए रहे। बीच-बीच में धूप भी निकलती रही। कई बार बारिश जैसा नजारा भी रहा, लेकिन हवा चलने के साथ ही बादल भी छट गए।

रतलाम के सप्लायर सहित लोकल ड्रग्स तस्कर गिरफ्तार

इंदौर में 54.78 ग्राम MD ड्रग्स जब्त, अंतरराष्ट्रीय कीमत 54 लाख रुपए

इंदौर (एजेंसी)। क्राइम ब्रांच की टीम ने ड्रग्स सप्लायर सहित लोकल ड्रग्स तस्कर को पकड़ा है। उनके पास से 54.78 ग्राम एमडी ड्रग्स जब्त की। इसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत करीब 54 लाख रूपए है। टीम आरोपियों से पूछताछ कर ओर भी जानकारी निकाल रही है। एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच राजेश दंडोतिया ने बताया कि क्राइम ब्रांच की टीम लगातार अवैध मादक पदार्थ के खरीदी-बिक्री व इनकी गतिविधियों में संलिप्त लोगों के संबंध में गोपनीय रूप से लगातार जानकारी निकालकर उन पर कार्रवाई करती है। दंडोतिया ने बताया कि टीम बीमा अस्पताल रिक्शा स्टैंड के पीछे मरीमाता चौराहा पर पहुंची, जहां मुखबिर की सूचना पर टीम को दो संदिग्ध युवक नजर आए। टीम ने घेराबंदी कर उन्हें पकड़ा तो वे टीम को देख वे घबराने लगे। पूछताछ में उन्होंने अपने नाम मोहम्मद गनी पटेल (31) निवासी खजराना और मोहसिन मेव (31) निवासी जावरा जिला रतलाम होना बताया। शुरुआती पूछताछ में बताया कि आरोपियों में नशा करने की आदत है और एमडी ड्रग्स सस्ते दामों में लाकर शहर में अपने साथी और नशा करने वाले लोगों को सप्लाई करते है। आरोपियों के पास से 54.78 ग्राम एमडी ड्रग्स बरामद की गई है। जिसकी अंतरराष्ट्रीय कीमत 54 लाख रुपए है। दोनों पर केस दर्ज किया गया। उनसे पूछताछ की जा रही है।

आदतन ड्रग्स तस्कर है

एडिशनल डीसीपी ने बताया कि गनी पटेल से पूछताछ में पता चला कि वो 11वीं क्लास तक पढ़ा है और आरओ बोतल पानी बांटने का काम करता है। वो आदतन ड्रग्स तस्कर है। क्राइम ब्रांच में पहले भी गिरफ्तार हो चुका है। वह क्राइम ब्रांच के एक मामले में वांटेड अरबाज का साथी भी है। वहीं, मोहसिन 10वीं पास है और वेल्डिंग का काम करता था। वह 2 बार अवैध मादक पदार्थ की तस्करी में नागपुर और जावरा में जेल भी जा चुका है।

संपादकीय

अब चीन का 'कृषि आतंकवाद'

चीन अब अपने खतरनाक इरादों को पूरा करने के लिए कृषि आतंकवाद पर उतर आया है। इससे भारत सहित समूची दुनिया के सामने नया खतरा उत्पन्न हो गया है। चीन पर जैविक आतंकवाद फैलाने का आरोप तो पहले ही से लगता रहा है। दुनिया को कोरोना वायरस भी चीनी जैविक प्रयोगशालाओ में किए अनैतिक शोधों का ही परिणाम है, भले ही चीन इसे स्वीकार न करे। लेकिन जो ताजा खबर आई है, वह और भी भयानक है। अमेरिका में चीन के ऐसे ही षड्यंत्र का पर्दाफाश हुआ है। जिसमे दो चीनी रिसर्चर्स को अमेरिका में कृषि आतंकवाद फैलाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। यह गिरफ्तारी अमेरिका के डिपार्टमेंट ऑफ जस्टिस की एजेंसी फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (एफबीआई) ने की है। पकड़े गए दोनो रिसर्चर्स पर आरोप है कि वे फ्यूजेरियम हेड ब्लाइट (एफएचबी) नामक फंगस को तस्करी करके अमेरिका लेकर आए थे। इन रिसर्चर्स के नाम युनकिंग जियान और जुनयोंग लियू है। दोनों पर साजिश रचने और तस्करी और वीजा धोखाधड़ी के आरोप हैं। जबकि आरोपियों का कहना है कि उनके चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) के साथ संबंध हैं। इस फंगस पर रिसर्च करने के लिए उन्हें बकायदा आर्थिक मदद भी की जा रही थी। वैज्ञानिकों के अनुसार एफएचबी फंगस फसलों के लिए बेहद खतरनाक है। खासकर यह गेहूं की फसल को बर्बाद कर देता है, दुनिया में खाद्य संकट पैदा हो सकता है। इसे अब कृषि आतंकवाद के हथियार के रूप में भी देखा जाता है। यह गेहूं, जौ, मक्का और चावल की फसलों को नुकसान पहुंचाता है। यह फंगस पौधों में छोटे-छोटे छेदों से प्रवेश करता है, फिर यह दानों में फैल जाता है और जहरीले पदार्थ पैदा करता है। इनमें deoxynivalenol (DON) शामिल है, जिससे इंसानों को उल्टी हो सकती है। इसके अलावा, जेरालेनोन भी बनता है, जो जानवरों में प्रजनन संबंधी समस्याएं पैदा कर सकता है। एक अध्ययन के अनुसार दुनिया भर में यह फंगस हर साल 10 अरब डॉलर की फसलें बर्बाद कर देता है। इससे संक्रमित अनाज खाने लायक नहीं रहता। यह फंगस खाद्य आपूर्ति श्रृंखला के लिए खतरा है। अमेरिकी अटॉर्नी जेरोम गोर्गोन जूनियर ने इस योजना को गंभीर राष्ट्रीय सुरक्षा खतरा बताया है। उन्होंने कहा कि अगर इस फंगस को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया तो यह अमेरिकी खेती को बर्बाद कर सकता है। एफबीआई निदेशक कश पटेल के मुताबिक जियान इस फंगस को अपनी यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन की लैब में ले गई थी। वहीं, लियू ने जुलाई 2024 में डेट्रॉइट एयरपोर्ट के जरिए से इसे आयात करने की कोशिश की। जांच में पता चला कि जियान के CCP से संबंध हैं। साथ ही, उन्हें चीनी सरकार से ऐसे वायरस पर शोध करने के लिए पैसे मिलते थे। वाकई इस फंगस के जरिए चीन का प्लान दुनिया को भुखमरी में धकेलना है ताकि बाकी देश खाद्यान्न के लिए चीन पर निर्भर हो जाएं और बीआरआई प्रोजेक्ट की तर्ज पर चीन उन देशो को ब्लैकमेल कर सके। भारत जैसे देशों को लिए चिंता का विषय है कि कृषि हमारी अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि खाद्यान्नों की फसलें बर्बाद हो गई तो देश में भीषण खाद्यान्न संकट पैदा होगा। उसका परिणाम राजनीतिक अस्थिरता और अर्थव्यवस्था के ध्वस्त होने मे भी हो सकता है। जबकि चीन को फायदा ही होगा। कृषि आतंक के जरिए पूरी दुनिया को लाचार बना देने की चीन की यह नीति अमानवीय और अनैतिक भी है। हालांकि निष्ठुर चीनी नेताओं को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उनका एकमात्र लक्ष्य किसी भी तरह से पूरी दुनिया को मुट्ठी में कर लेने का है। इससे भारत सहित सभी देशों को सतर्क रहना होगा।

कर्नाटक में लोकप्रियता की चाह में हुआ हादसा

नजरिया

अशोक भाटिया
लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

चिन्नास्वामी स्टेडियम में हुई भगदड़ में कम से कम 11 लोगों की मौत हो चुकी है तो 33 लोग घायल बताए जा रहे हैं। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को 18 साल बाद आईपीएल जीते 18 घंटे भी नहीं गुजरे थे कि सारी खुशियां मातम में बदल गई। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर जीत का जश्न मनाने गए बेकसूरों की मौत का जिम्मेदार कौन हैं? आरसीबी के मालिक, कर्नाटक सरकार या खुद क्रिकेट फैंस।

बताया जाता है कि तीन जून की रात फाइनल जीतने के बाद चार जून को जीत का जश्न मनाने के लिए चिन्नास्वामी स्टेडियम में भव्य समारोह रखा गया। जब बाहर लोग अपनी जान गंवा रहे थे, तब आरसीबी मैनेजमेंट स्टेडियम के अंदर जीत का जश्न मना रहा था। जब रजत पाटीदार और विराट कोहली चिन्नास्वामी स्टेडियम में आए फैंस के सामने भाषण दे रहे थे, तब बाहर लोग जिंदगी और मौत की जंग लड़ रहे थे। भगदड़ में 11 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है। बावरिंग अस्पताल में 6 शव लाए गए, जिनमें 13 वर्षीय दिव्यांशी, 26 वर्षीय दिया, 21 वर्षीय श्रवण समेत तीन युवतियां और तीन युवक शामिल हैं। इनमें दो की पहचान अब तक नहीं हो सकी है। वायदेही अस्पताल में 4 शव पहुंचे- 20 वर्षीय भूमिक, 19 वर्षीय साहना, एक 20 वर्षीय युवक और एक 35 वर्षीय व्यक्ति की मौत हुई। मणिपाल अस्पताल में 19 वर्षीय चिन्मयी की मौत हुई है। हादसे में घायल 18 लोग अब भी विभिन्न अस्पतालों में उपचाराधीन हैं।

आरसीबी फ्रैंचाइजी से टूर्नामेंट जीतने के कुछ ही घंटे के भीतर इतने बड़े इवेंट की जरूरत पर सवाल पूछे जा रहे हैं। आईपीएल के इतिहास में ये पहला मौका था, जब किसी फ्रैंचाइजी ने जीत के बाद इतनी बड़ी विक्ट्री परेड की प्लानिंग की। भारत को 1983 में वर्ल्ड कप जिताने वाली टीम के मेंबर रहे पूर्व तेज गेंदबाज मदन लाल की माने तो इस कार्यक्रम को दो-तीन दिन बाद पूरी तैयारी के साथ भी किया जा सकता था। मदन लाल ने पूछा है कि जब मंगलवार की पूरी रात अहमदाबाद में पार्टी की गई तो बेंगलुरु में जश्न मनाने की क्या जल्दी थी?

आरसीबी की इस जीत को कर्नाटक सरकार ने कन्नाड़िगा अस्मिता से जोड़ने की भी कोशिश की। इस इवेंट में उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार सरकार के चेहरे के तौर पर सामने थे। एयरपोर्ट पर प्लेयर्स के स्वागत से लेकर उन्हें विधानसभा तक लेकर जाना, मुख्यमंत्री सिद्धारमैया से विराट कोहली समेत तमाम प्लेयर्स की मुलाकात करवाना, सम्मान दिलवाना, मीडिया का कैमरा हर वक्त डीके शिवकुमार पर ही फोकस रहा। जब बेंगलुरु पुलिस ने इतने बड़े इवेंट में सुरक्षा देने से अपने हाथ खड़े कर दिए थ। सूत्रों की माने तो पुलिस ने आयोजन टालने की सलाह दी थी। इसके बावजूद भीड़ जुटाने के पीछे सरकार की मंशा पर सवाल उठने चाहिए।

बेंगलुरु को 'पढ़े-लिखे' लोगों का शहर माना जाता है। देश की सबसे बड़ी आईटी इंडस्ट्री यहीं हैं। पूरे देश से बच्चे यहां पढ़ने आते हैं। मगर हमारे देश में तो क्रिकेट के आगे सब बेबस हो जाते हैं। 45 हजार लोगों की बैठना की क्षमता वाले स्टेडियम में चार-पांच लाख लोग घुसने की कोशिश करेंगे तो यही हश्र होगा। लोग किसी तरह बस एक-दूसरे पर चढ़कर अंदर घुसने को आमादा थे, ये अपनी मौत को खुद बुलावा देने से कम नहीं था।

जश्न के दौरान मची भगदड़ के बाद भाजपा ने कांग्रेस के नेतृत्व वाली कर्नाटक सरकार पर आपराधिक लापरवाही का आरोप लगाया। भाजपा ने आरोप लगाया कि भीड़ को नियंत्रित करने के लिए कोई उपाय या बुनियादी व्यवस्था नहीं की गई। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और डीके शिवकुमार पर हमला करते हुए पार्टी ने कहा कि वे सुरक्षा सुनिश्चित करने के बजाय रील बनाने में बिजी थे। भाजपा के अमित मालवीय ने बेंगलुरू भगदड़ को लेकर राज्य सरकार की आलोचना की है और खराब योजना और भीड़ के कुप्रबंधन का हवाला दिया है। उन्होंने इस घटना भाजपा ने दावा किया है कि आईपीएल में आरसीबी की जीत के जश्न के दौरान बेंगलुरु में भगदड़ मचने से 7 लोगों की मौत हो गई है और कई लोग जिंदगी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। सूत्रों के अनुसार, स्टेडियम परिसर के पास भगदड़ में सात से ज्यादा लोगों की मौत हो गई। इलाके में एक नाले के ऊपर एक स्लैब रखा हुआ था। जब भीड़ जमा हुई और उस पर खड़ी हुई, तो स्लैब गिर गया, जिससे अफरातफरी मच गई और जानलेवा भगदड़ मच गई। को प्रशासनिक लापरवाही के कारण होने वाली टाली जा सकने वाली त्रासदी बताया।

जिन 11 लोगों ने अपनी जान गंवाई, वे महज क्रिकेट प्रेमी थे, विराट कोहली के दीवाने, RCB के फैन थे। उन्हें नहीं पता था कि उनकी ये दीवानगी उन्हें अपनी जान की कीमत पर चुकानी पड़ेगी। 13 साल की दिव्यांशी से लेकर 26 साल की दीया और 21 साल का श्रवण, सभी उन लाखों लोगों में शामिल थे जो सिर्फ एक झलक अपने सितारों की पाने को आए थे। अपने स्टार के आंसुओं के लिए जो लाखों लोग पागल थे, उनके दर्द से उन स्टार खिलाड़ियों को कोई खास फर्क नहीं पड़ा। तालियां बजती रहीं। फ्लाइंग किस लुटाए जाते रहे। ऐसा कैसे हो सकता है कि इन स्टार खिलाड़ियों को जानकारी नहीं थी। और जानकारी नहीं थी तो दी क्यों नहीं गई? भगदड़ के बाद भी जश्न क्यों मनता रहा? और विजयी भाषण चलता रहा, पीठ थपथपाई जाती रही।

विराट कोहली को एयरपोर्ट पर रिसीव करने पहुंचने वाले कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार का कहना है कि जश्न सिर्फ थोड़ी देर चला. सोचिए लोगों की मौत के बाद अगर एक मिनट भी जश्न मना, तालियां बजीं, ठहाके लगे, फ्लाइंग किस दिए गए तो इससे ज्यादा अमानवीयता और निर्दयता क्या हो सकती है। जब खुद सरकार एक जश्न का नेतृत्व करेगी। खेल की लोकप्रियता को भुनाने की कोशिश करेगी। भीड़ को रोकने और उसके सही प्रबंधन की जगह खुद झंडा लेकर घूमेगी तो आम लोगों से क्या उम्मीद की जाएगी? जब नेता इस तरह जश्न मनाएंगे तो जनता तो उनके पीछे पागल होगी ही।

अब सरकार आयोजकों पर सवाल उठा रही है, आयोजक प्रशासन पर और बीच में फंसे हैं वो 11 परिवार, जो अपने अपनों को खो बैठे। हर जिम्मेदार अब कह रहा है कि हमें जानकारी नहीं थी। भगदड़ में सहाना की मौत के बाद उनके परिवार ने सरकार से नाराजगी जाहिर की है। बेंगलुरु में काम करने वाली सहाना यहां से 90 किलोमीटर दूर कोलार की रहने वाली थीं। पोस्टमार्ट्म के बाद नगर निगम के शव वाहन में उनकी बॉडी को शिफ्ट किया गया। परिवार ने कहा कि कोलार तक ले जाने के लिए फ्रीजर तक की व्यवस्था प्रशासन ने नहीं की। हॉस्पिटल में जब परिवार ने जबरदस्त तरीके से अपनी नाराजगी और गुस्सा जाहिर किया उसके बाद ही उन्हें फ्रीजर दिया गया। चिंतामणि के रहने वाले प्रज्वल की भी इस भगदड़ में मौत हो गई। प्रज्वल घर वालों से ये कहकर निकला कि बेंगलुरू में एक निजी कंपनी में उसका इंटरव्यू है और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के जश्न में शामिल होने चिन्नास्वामी स्टेडियम पहुंच गया। घर वालों ने जब मीडिया के जरिये मृतकों की सूची में उसका नाम देखा तो उन्हें पता चला कि प्रज्वल जॉब इंटरव्यू के लिए नहीं बल्कि आरसीबी के विजय जश्न में शामिल होने गया था।

मान भी लेते हैं कि जश्न मना रहे खिलाड़ियों को बाहर हुई भगदड़ और लोगों की मौत की जानकारी नहीं थी लेकिन क्या सरकार के कर्ता-धर्ता भी इससे अनजान थे? आखिर उपममुख्यमंत्री डीके शिवकुमार कप उठाने स्टेडियम के अंदर क्यों पहुंचे? उनका इस कप की जीत में क्या योगदान? क्या क्रिकेट और RCB की लोकप्रियता भुनाने के लिए उन्होंने सारी व्यवस्थाओं को दांव पर लगा दिया? जिस वक्त उनके भीड़ में दबते, जान गंवाते और घायल होते लोगों के साथ होना चाहिए था, उस वक्त वो RCB के कप के साथ थे। जब घायलों को उठाने की जरूरत थी, डीके शिवकुमार कप उठा रहे थे। बेंगलुरु में जो हुआ, उसकी भूमिका मंगलवार रात से ही तैयार हो रही थी। लेकिन उसके बाद भी शासन-प्रशासन बिल्कुल सतर्क नहीं हुआ। बेकाबू भीड़ और अनगिनत लोगों को रोकने के लिए पर्याप्त इंतजाम नहीं किए गए. ऐसी व्यवस्था नहीं की गई, जिससे उतने ही लोग स्टेडियम तक पहुंचें, जितना झेलने की क्षमता है। और अगर इन लोगों को रोकने की व्यवस्था नहीं थी तो क्या जश्न मनाना इतना जरूरी था? इस जश्न का आयोजन कर्नाटक सरकार और वहां के क्रिकेट एसोसिएशन ने कराया था। लेकिन अब कोई भी इसकी जिम्मेदारी उठाने के लिए तैयार नहीं है। सरकार कह रही है कि विधानसभा के पास कोई घटना नहीं हुई, हमारी तैयारी अच्छी थी। सरकार इसके लिए क्रिकेट एसोसिएशन की व्यवस्था पर सवाल उठा रही है। सरकार मान रही है कि 3 लाख से ज्यादा लोग आए थे जबकि चिन्नास्वामी स्टेडियम की क्षमता मात्र 35 हजार की है। अगर सरकार के पास इतनी व्यवस्था नहीं है तो जश्न के लिए लोगों को खुला न्योता क्यों था?

बताया जाता है कि मंगलवार रात में सड़कों पर जमकर डांस हुआ और धीरे-धीरे से हुड़दंग और हंगामे में बदल गया। लोग इस कदर खुमार में थे कि ट्रक रुकवाकर, उनका हॉर्न बजवाकर उस पर डांस किया। सोचिए ये किस तरह का पागलपन था। मंगलवार की पूरी रात बहुत से लोगों के लिए जश्न मनाते हुए निकल गई। फिर भी सुबह तक उनका जोश ठंडा नहीं पड़ा। और जब लोगों को चिन्नास्वामी स्टेडियम में जश्न की जानकारी हुई, फिर से वो सड़कों पर उतर आए। कुछ लोग स्टेडियम में नहीं घुस पाए, तो वो पेड़ों पर चढ़ गए। इस हादसे ने बता दिया है कि अगर आयोजन में मानवीय संवेदना गायब हो, तो कोई भी जीत जानलेवा बन सकती है।

भाजपा ने इस घटना को 'सरकारी विफलता' और 'राजनीतिक लालसा' का नतीजा करार दिया है। भाजपा की ओर से जारी बयान में कहा गया है, 'यह केवल भगदड़ नहीं थी, बल्कि मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री की आपसी खींचतान से पैदा हुई एक सरकार-निर्मित त्रासदी थी। भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि इस पूरे मामले की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए मुख्यमंत्री और उप-मुख्यमंत्री को तुरंत इस्तीफा देना चाहिए. साथ ही डीके शिवकुमार को जनता से माफी मांगनी चाहिए।'

पेट भरने की जिम्मेदारी से मुक्त रहता है सच्चा साहित्य

विचार

चेतनादित्य आलोक
लेखक स्तंभकार हैं।

'बर्बाद गुलिस्तां करने को बस एक ही उल्लू काफी था, हर शाख पे उल्लू बैठा है अंजाम-ए-गुलिस्तां क्या होगा।' देखा जाए तो यह शेर हममें से अधिकतर लोगों ने अपने जीवन में कभी-न-कभी अवश्य सुना होगा, लेकिन हममें से शायद कुछ ही लोग होंगे, जो इस शेर को लिखने अथवा अर्ज करने वाले शायर का नाम जानते होंगे। वैसे, उनका वास्तविक नाम तो शायद कोई भी नहीं जानता होगा। यही नहीं, उनके काम यानी उनकी लिखी रचनाओं के बारे में भी किसी को कुछ पता नहीं। बहरहाल, उपर्युक्त शेर का अधिकतर उपयोग देश और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद, अवसरवाद, अव्यवस्था, अराजकता एवं राजनीति या किसी अन्य क्षेत्र में मौजूद गलत व्यक्तियों के लिए किया जाता है। दरअसल, इस मशहूर शेर को लिखने वाले शायर शौक बहराइची ने भी चुभते हुए व्यंग्य-बान रूपी इस शेर को ऐसे ही परिप्रेक्ष्यों के लिए लिखा था। इसको पहली बार बहराइच की कैसरगंज विधानसभा से उस समय विधायक रहे और 1957 के प्रदेश मंत्री मंडल में कैबिनेट स्वास्थ मंत्री रहे हुकुम सिंह की एक स्वागत सभा में शायर शौक बहराइची ने स्वयं ही पढ़ा था। हालांकि, यह शेर वास्तव में उन्होंने वैसे नहीं लिखा था, जैसे कि यह आज पेश किया जाता है। उनके द्वारा लिखा गया शेर वास्तव में इस प्रकार है- 'बर्बाद ऐ गुलशन कि खातिर बस एक ही उल्लू काफी था, हर शाख पर उल्लू बैठा है अंजाम ऐ गुलशन क्या होगा।'

उक्त शेर में शायर का तात्पर्य यह है कि चाहे कोई उपवन हो या समाज, परिवार हो या संगठन, देश हो अथवा राजनैतिक व्यवस्था उसे नष्ट करने के लिए एक ही उल्लू अर्थात् नादान काफी होता है, किंतु अब जबकि सब तरफ उल्लुओं की भरमार है, समझना मुश्किल नहीं कि इसका परिणाम क्या होगा। आश्चर्य की बात यह है कि समय के साथ यह शेर तो नित्य-निरंतर और-से-और मशहूर होता चला गया, जबकि इसके विपरीत इसका शायर दिनोंदिन गुमनामी के अंधेरे मे खोता चला गया। बता दें कि शायर शौक बहराइची, जिनका वास्तविक नाम रियासत हुसैन रिजवी था, को दुनिया शायद आज भी नहीं जान पाती, यदि उनकी मृत्यु के 50 वर्ष पश्चात् बहराइच के ही रहने वाले एक रिटायर्ड इंजीनियर ताहिर हुसैन नकवी ने 09 वर्ष के परिश्रम से प्राप्त उनके संबंध में जानकारियां एवं इधर-उधर बिखरे उनके शेरों को इकट्ठा कर 'तूफान' नामक संग्रह के रूप में प्रकाशित नहीं कराया होता। शौक बहराइची का जन्म 06 जून 1884 को उत्तर प्रदेश स्थित भगवान श्रीराम की नगरी अयोध्या जिले के सैयदवाड़ा मोहल्ले में एक साधारण मुस्लिम शिया परिवार में हुआ था। हालांकि, उनके बचपन का नाम रियासत हुसैन रिजवी था, किंतु बाद में बहराइच में निवास करने के कारण वे 'बहराइची' के नाम से विख्यात हुए। गौरतलब है कि बहराइच में रहते हुए न केवल उन्होंने शायरी से अपना नाता लगातार बनाए रखा, बल्कि शौक बहराइची के नाम से वे शायरी के नित्य नए आयाम भी गढ़ते चले गए।

बता दें कि पूरा जीवन दैन्यता में बीताने वाले शायर शौक बहराइची का शायरी लेखन 13 जनवरी 1964 में हुई उनकी मौत तक बदस्तूर जारी रहा। हालांकि उनकी आर्थिक स्थिति बेहद खराब थी, किंतु उनका लेखन हमेशा उच्च कोटि का ही रहा। दरअसल, पक्के साहित्यकारों की यही पहचान होती है कि उनके जीवन में भले ही गरीबी का प्रकोप बना रहे, लेकिन साहित्य को वे हमेशा धनी-मानी बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध रहते हैं। जाहिर है कि शौक बहराइची भी एक दिन शायरी की दुनिया में अपने दौर के बड़े ही मशहूर शायर साबित हुए, लेकिन यह विडंबना ही है कि आज देश भर में उन्हें जानने वाले इने-गिने लोग ही मौजूद हैं। यहां तक कि साहित्य की दुनिया में भी उनके बारे में लिखने-पढ़ने वाले बहुत ही कम लोग हैं। बहरहाल, शौक की इस गुमनामियत पर उनका अपना ही एक और मशहूर शेर बहुत सटीक बैठता है, जो इस प्रकार है- 'अल्लाहो गनी इस दुनिया में, सरमाया परस्ती का आलम, बेजर का कोई बहनोई नहीं, जरदार के लाखों साले हैं।' अर्थात् जो गरीब और लाचार है, कमजोर है, उसकी सुध लेने वाला दुनियां कोई नहीं होता, जबकि धनी-मानी और सशक्त लोगों के लिए कदम-कदम पर सहयोगी और सलाहकार मौजूद रहते हैं। गौरतलब है कि शौक बहराइची के बहराइच में बीते हुए दिन काफी गरीबी और लाचारी भरे थे।

अक्सर ऐसा संदेह जताया जाता है कि जरूरत के समय उन्हें किसी प्रकार की कोई सहायता भी किसी से भी नहीं मिल पाई थी। वैसे, शौक ने स्वयं भी अपनी शायरी के माध्यम से अपनी दैन्यता और लाचारी को प्रकट करने का कार्य बखूबी किया था। हालांकि, स्वतंत्रता के पश्चात् सरकार की ओर से उनके लिए कुछ पेंशन देने की व्यवस्था किए जाने का उल्लेख अवश्य मिलता है, लेकिन उसके बाद भी आवश्यकता पड़ने पर जब पेंशन की राशि उन तक नहीं पहुंची तो बहुत बीमार चल रहे शायर शौक के दुखी और लाचार मन ने उस सरकारी व्यवस्था पर भी तंज कसने से परहेज नहीं किया था- 'सांस फूलेगी खांसी सिवा आएगी, लब पे जान हजी बराह आएगी, दादे फानी से जब शौक उठ जाएगा, तब मसीहा के घर से दवा आएगी।' देखा जाए तो शौक बहराइची की एकमात्र पुस्तक 'तूफान' के संग्रहकर्ता ताहिर नकवी को शौक के शेरों को ढूंढने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। नकवी की मानें तो निहायत ही गरीबी में जीने वाले शौक की मौत के बाद उनकी पीढ़ियों ने उनकी रचनाओं को सहेजा नहीं। यही कारण है कि नकवी को शौक की कई रचनाएं कबाड़ी की दुकानों में भी बिखरी पड़ी मिली थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि बेहद गरीबी और लाचारी में जीवन व्यतीत करने वाले शौक बहराइची के वंशजों ने उनके द्वारा लिखी गई सामग्री को कबाड़ के साथ बेच दिया हो, ताकि दो रोटियों का इंतजाम हो सके। जाहिर है कि जब भूख सताती है तो साहित्य से काम नहीं चलता। शेर-ओ-शायरी भी तभी अच्छी लगती है, जब पेट भरा हो। वैसें, सच्चा साहित्य पेट भरने की जिम्मेदारी से हमेशा मुक्त ही रहता है। पेट भरने के लिए साहित्य को बंधुआ या फुटपाथी बनना पड़ता है, जिसके लिए शौक जैसे रचनाकार तैयार नहीं होते।

बहरहाल, मशहूर शायर शौक बहराइची की (06 जून) 141वीं जयंती के अवसर पर प्रस्तुत हैं उनके कुछ चुनिंदा शेर- 'अल्लाहो गनी इस दुनिया में, सरमाया परस्ती का आलम, बेजर का कोई बहनोई नहीं, जरदार के लाखों साले हैं।' 'हर मुल्क इस के आगे झुकता है एहतिरामन, हर मुल्क का है फादर हिन्दोस्तां हमारा।'' 'वाइज ये गुलिस्तां ये बहारें ये घटाएं, सागर कोई ऐसे में खनक जाए तो क्या हो।'' 'सुकूं मिलता है उनको और न हमको चैन रातों को, परेशां कर रखा है आप के हाल-ए-परेशां ने।'(इतिश्री)

'मेड इन इंडिया' की तकनीकी विजयगाथा

ऑपरेशन सिंदूर

डॉ. भूपेंद्र कुमार

21 वीं सदी में जब युद्ध के स्वरूप, कूटनीतिक समीकरण और वैश्विक शक्ति संतुलन बदल रहे हैं, ऐसे में भारत ने "ऑपरेशन सिंदूर" के माध्यम से यह स्पष्ट कर दिया है कि तकनीकी आत्मनिर्भरता ही उसकी सबसे बड़ी ढाल और सबसे तीव्र भाला है। यह अभियान केवल एक सैन्य विजय नहीं, बल्कि मेड इन इंडिया रक्षा तकनीक की विजय है – एक ऐसी रणनीतिक उपलब्धि जिसने भारत को न केवल रक्षा क्षेत्र में सशक्त बनाया, बल्कि उसे वैश्विक मंच पर एक निर्णायक शक्ति के रूप में स्थापित किया।

भारत- एक विकासशील राष्ट्र से वैश्विक नवप्रवर्तन केंद्र तक- पिछले दशक में भारत की अर्थव्यवस्था 4.19 ट्रिलियन तक पहुँच गई है, और वह अब जापान के साथ चौथी सबसे बड़ी वैश्विक शक्ति के रूप में खड़ा है। इस परिवर्तन की जड़ें एक स्पष्ट रणनीतिक बदलाव में हैं – विनिर्माण पुनरुत्थान, रणनीतिक आत्मनिर्भरता और उन्नत नवाचार। मेक इन इंडिया की 2014 में हुई शुरुआत ने आत्मनिर्भर भारत का आधार मजबूत किया, विशेषकर रक्षा विनिर्माण में।

ऑपरेशन सिंदूर: रणनीतिक विजय की झलक- यह ऑपरेशन भारत की सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ चल रही लड़ाई में एक निर्णायक क्षण बनकर सामने आया। ऑपरेशन सिंदूर में ब्रह्मोस और आकाश मिसाइलों का सफलतापूर्वक प्रयोग, भारतीय रक्षा क्षेत्र की वर्षों की तैयारी और तकनीकी सशक्तिकरण का प्रतीक था। विशेषकर 'आकाशतीर' प्रणाली – भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड द्वारा विकसित एक डिजिटल नेटवर्क कमांड सेंटर – ने रीयल-टाइम खुफिया, लक्ष्य पहचान और समन्वय की एक मिसाल कायम की।

आत्मनिर्भर रक्षा विनिर्माण: संख्या से शक्ति तक- रक्षा उत्पादन (2023-24)- रू. 1.27 लाख करोड़। निर्यात (2025)- रू. 23,622 करोड़ – पिछले दशक में 10 गुना वृद्धि। निर्यात लक्ष्य (2029)- रू. 50,000 करोड़, 90+ देश भारतीय सिस्टम अपनाएंगे

निजी क्षेत्र का योगदान- 15,000 करोड़

स्टार्टअप्स- 1,300+ डीप-टेक कंपनियाँ एआई, रोबोटिक्स, क्वांटम और स्पेस में कार्यरत

इस डेटा से स्पष्ट है कि भारत केवल रक्षा उपकरणों का उपभोक्ता नहीं, बल्कि निर्माता और निर्यातक बन चुका है।

ड्रोन क्रांति: युद्ध की परिभाषा बदलता भारत- ऑपरेशन सिंदूर में 'कामिकेज़ ड्रोन' का प्रयोग यह दर्शाता है कि भारत अब ड्रोन युद्ध के क्षेत्र में अग्रणी बन चुका है। 2021 में भारत सरकार ने विदेशी ड्रोन के आयात पर प्रतिबंध लगाया और पीएलआई योजनाओं के माध्यम से घरेलू निर्माण को प्रोत्साहित किया। परिणामस्वरूप, 550+ कंपनियाँ और 5,500 ड्रोन पायलटों का नेटवर्क देश में उभर कर सामने आया है, जिसका लक्ष्य है – 2030 तक भारत को वैश्विक ड्रोन हब बनाना।

इसरो और राष्ट्रीय सुरक्षा की नई ऊँचाइयाँ- इसरो आज रक्षा निगरानी का अदृश्य प्रहरी बन गया है। 7,000 किलोमीटर समुद्र तट से लेकर उत्तरी सीमाओं तक 10 से अधिक निगरानी उपग्रह सतत देश की सीमाओं पर नज़र रखे हुए हैं। ड्रोन, उपग्रह और सेंसर डेटा को जोड़कर एक ऐसा खुफिया नेटवर्क तैयार हुआ है जो रीयल-टाइम निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अगली पीढ़ी की रक्षा- भारत का भविष्य एआई-सक्षम, ऑटोनॉमस और नेटवर्क-इंटीग्रेटेड रक्षा प्रणालियों में निहित है। सैन्य निर्णयों में तेज़ी, सटीकता और सुरक्षा लाने के लिए AI का एकीकरण ज़ोरों पर है। भारत इन अत्याधुनिक प्रणालियों के क्षेत्र में विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनता जा रहा है।

विजयी राष्ट्र की ओर बढ़ता भारत- ऑपरेशन सिंदूर न केवल एक सैन्य सफलता थी, बल्कि यह उस मानसिकता और तकनीकी क्रांति का प्रतिनिधित्व करता है, जो भारत को एक वैश्विक शक्ति में बदल रही है। यह एक प्रतीक है उस जुनून का, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'आत्मनिर्भर भारत' के रूप में परिभाषित किया है। आज भारत का लक्ष्य केवल आत्मनिर्भर होना नहीं, बल्कि वैश्विक रूप से अपरिहार्य बनना है।

अंतिम विचार- भारत की अगली उड़ान

क्या भारत वैश्विक रक्षा नवाचार का केंद्र बन पाएगा

क्या ड्रोन और एआई की शक्ति भारत को अगली पीढ़ी की सुरक्षा में नेतृत्व प्रदान करेगी? क्या 'मेक इन इंडिया' केवल नारा नहीं, बल्कि वैश्विक विश्वास बन पाएगा?

इन प्रश्नों का उत्तर अब भारत के हाथ में है – और 'ऑपरेशन सिंदूर' इसकी शुरुआत है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

चाय-बिस्किट ग्रहण करने का भद्र तरीका

व्यंग्य

संजय तैलंग
(वरिष्ठ पत्रकार और व्यंग्यकार)

चाय के साथ बिस्किट का लुफ्त उठाना कौन नहीं चाहेगा। शेड वाली छत या बालकनी में रिमझिम बारिश के बीच बिस्किट को गर्म चाय में डुबो-डुबो कर खाने का जो आनन्द है, उसे शब्दों में बयां करना संभव नहीं है। गर्म चाय के साथ कुरकुरे मीठे और नमकीन बिस्किट जब चाय में डुबकी लगाकर मुंह तक पहुंचते हैं, तो उनका वह कुरकुरापन जाता रहता है और वे नर्म-मुलायम होकर पूरे मुंह में फ़ैल जाते हैं। चाय में डुबकी लगाकर आए नर्म-मुलायम बिस्किट को धीरे-धीरे निगलने का नाम निर्मल आनंद है।

वैसे आज के भद्र समाज में चाय के साथ बिस्किट डुबो कर खाना असभ्य आचरण माना जाता है। इसे फूहड़ तरीका भी कहा जाता है। आजकल बिस्किट के साथ चाय ग्रहण करने का तरीका सर्वथा अलग है, जिसे सोफिस्टिकेटेड तरीका कहा जाता है। पश्चिम से हमारे देश के तथाकथित भद्र लोगों तक पहुंचे इस तरीके में बिस्कुट की छोटी सी बाइक लेकर चाय के कप से धीरे से सिप करना होता है। इसे भला भद्र तरीका कैसे कहा जा सकता है, जिसमे न तो चाय का पूरा आनंद मिले और न ही बिस्किट का। जो अपने घर में चाय और बिस्किट अपने अंदाज में (डुबो-डुबो कर) खाते हैं, वे भी चार भद्र लोगों के बीच बैठने पर (मजबूरी में) नए जमाने के तरीके अपनाते देखे जा सकते हैं।

मुझे आज तक यह समझ में नहीं आया कि चाय में बिस्कुट डुबोकर खाना असभ्य तरीका कैसे हो गया! किसने यह बेतुका नियम बना दिया कि दोनों (चाय और बिस्कुट) अलग-अलग और नजाकत के साथ ग्रहण किए जाएं। अरे जो स्वाद और मजा पुराने तरीके में है, वह नए और अजीबो-गरीब तरीके में कैसे हो सकता है। हम चाय-बिस्कुट स्वाद के लिए ग्रहण कर रहे हैं या किसी को दिखाने या सर्टिफिकेट प्राप्त करने के लिए! आप चाय-बिस्किट खाने के सर्वश्रेष्ठ तरीके के बारे में से किसी से भी पूछ लीजिए, यदि वह ईमानदारी से जवाब देगा, तो जवाब 'पुराना तरीका' ही होगा।

वैसे भी चाय में बिस्किट डुबो कर खाने को जो लोग फूहड़ तरीका मानते हैं, उनकी बुद्धि पर तरस आता है। उनकी जानकारी के लिए बताना चाहूंगा कि चाय के साथ बिस्किट खाने का यह तरीका कोई मामूली तरीका नहीं है, अरे यह तो एक ऐसी कला है जो हर कोई नहीं जानता। इसे फूहड़ तरीका बताने वालों की जानकारी के लिए बता दें, कि गर्म चाय में बिस्किट कितनी देर डुबोना है, ताकि वह नर्म होकर मुंह के रास्ते आसानी से उदर में समा जाए। यदि जल्दी निकाल लिया तो वह सख्त रह जाएगा और मुंह के लिए परेशानी बनेगा। इसके विपरीत यदि ज्यादा देर तक डुबोकर रखा तो बिस्कुट गलकर चाय की प्याली की तह में समा जाएगा। ऐसे में चाय के साथ बिस्किट खाने का लुत्फ जाता रहेगा। तो है न यह कला बताइए!

चाय-बिस्किट की बात चली है तो मुझे एक पुराना किस्सा याद हो आया। मध्यप्रदेश और राजस्थान की सीमा के एक गांव का है यह किस्सा। मैं उस छोटे से गांव में किसी काम से पहुंचा, तो वहां चाय की गुमटी पर लिखा था-'नेस्केफ -10 रुपए'। मुझे अच्छा लगा छोटे से गांव में काफी मिल रही है। आगे बढ़ने पर दूसरे गांव पहुंचा, तो वहां भी चाय की गुमटी पर बोर्ड दिखा 'नेसकॉफी-15 रुपए'। अब मेरी जिज्ञासा बढ़ गई यह जानने के लिए अगले और इंटीरियर के गांव में भी क्या कॉफी मिलेगी और उसका नाम क्या होगा! सड़क से काफी अंदर एक और गांव में पहुंचा तो चाय की गुमटी पर लगे बोर्ड ने चौंका दिया। बोर्ड पर लिखा था 'नसे की कॉफी-5 रुपए'। मैंने सचाई जानने के लिए 5 रुपए की 'नसे की कॉफ़ी' ऑर्डर कर दी। चाय वाले ने कॉफी के केक का छोटा सा टुकड़ा निकाल कर पीसा और गर्म पानी में मिला दिया। फिर बहुत सारी शकर और थोड़ा सा दूध मिला कर डिस्पोजेबल कप में सर्व कर दिया। कॉफी बनाने का यह पुराना तरीका मुझे अच्छा लगा, और साथ ही नाम से पैदा हुआ कंफ्यूजन भी दूर हो गया। उस डिस्पोजेबल में कॉफ़ी के टेस्ट जैसा ही कुछ था।

दृष्टिकोण

गंगा पाण्डेय

संवेदनहीनता की राजनीति का बढ़ता संकट

जब किसी आतंकी हमले में निर्दोष आम नागरिक मारे जाते हैं, तो देश की संवेदना उनके साथ होनी चाहिए। ऐसे समय में जनता के प्रतिनिधियों की जिम्मेदारी होती है कि वे न केवल शोक में सहभागी बनें, बल्कि पीड़ितों को संबल भी दें। परंतु जब ऐसे प्रतिनिधि उल्टे पीड़ितों को ही अप्रत्यक्ष रूप से दोषी ठहराएं, तो यह न केवल नैतिक पतन को दर्शाता है बल्कि समाज में अराजकता और असहिष्णुता को भी बढ़ावा देता है। रामचंद्र जांगड़ा का यह बयान न केवल असंवेदनशील था, बल्कि आतंकवाद जैसे जटिल मुद्दे पर उनकी अज्ञानता का भी प्रमाण था।

लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक अमूल्य अधिकार है, परंतु जब यह स्वतंत्रता संवेदनहीनता का रूप ले ले, तब वह न केवल सामाजिक ताने-बाने को चोट पहुंचाती है, बल्कि मानवता के मूल्यों को भी अपमानित करती है। हाल ही में पहलगाम में हुए आतंकी हमले के संदर्भ में भाजपा के राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा के बयान ने इसी तरह की असंवेदनशीलता को उजागर किया। उनके अनुसार, यदि हमले में मारे गए लोग औरतों की तरह नहीं बल्कि 'वीरांगनाओं' की भांति प्रतिक्रिया करते तो शायद वे मारे नहीं जाते और आतंकी भी मारे जाते। यह बयान केवल पीड़ितों के प्रति उपेक्षा ही नहीं दर्शाता, बल्कि आतंकवाद की जटिलता को भी सरलीकृत कर एक अजीब तरह का दोषारोपण प्रस्तुत करता है।

जब किसी आतंकी हमले में निर्दोष आम नागरिक मारे जाते हैं, तो देश की संवेदना उनके साथ होनी चाहिए। ऐसे समय में जनता के प्रतिनिधियों की जिम्मेदारी होती है कि वे न केवल शोक में सहभागी बनें, बल्कि पीड़ितों को संबल भी दें। परंतु जब ऐसे प्रतिनिधि उल्टे पीड़ितों को ही अप्रत्यक्ष रूप से दोषी ठहराएं, तो यह न केवल नैतिक पतन को दर्शाता है बल्कि समाज में अराजकता और असहिष्णुता को भी बढ़ावा देता है। रामचंद्र जांगड़ा का यह बयान न केवल असंवेदनशील था, बल्कि आतंकवाद जैसे जटिल मुद्दे पर उनकी अज्ञानता का भी प्रमाण था।

उनका कहना था कि अगर महिलाएं वीरांगनाओं की तरह लड़तीं, तो हमला टाला जा सकता था। यह कथन न केवल लिंगभेदपूर्ण है, बल्कि व्यावहारिक यथार्थ से भी परे है। आतंकवादी हमले योजनाबद्ध, सुसंगठित और अत्याधुनिक हथियारों से लैस होते हैं। आम नागरिक, विशेषकर महिलाएं, जिनके पति आतंक का शिकार हो चुके हों, उनसे ऐसी वीरता की अपेक्षा करना एक प्रकार की क्रूर विडंबना है। यह उन स्त्रियों के दु:ख और मानसिक आघात को नकारने जैसा है, जिन्होंने अपने परिजनों को खोया है।

इस प्रकार का वक्तव्य केवल जांगड़ा का पहला मामला नहीं है। इससे पहले भी अनेक बार नेताओं ने आतंकवादी हमलों या किसी राष्ट्रीय आपदा के बाद ऐसे बेतुके और अपमानजनक बयान दिए हैं। कभी पीड़ितों के पहनावे पर सवाल उठाया जाता है, तो कभी उनकी जीवनशैली को दोषी ठहराया जाता है। इन सबके पीछे एक ही मानसिकता कार्यरत है- सत्ता के घमंड में चूर, आम जनता के दु:ख से विमुख, और घटनाओं को राजनीतिक लाभ की दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति। यह प्रवृत्ति न केवल अमानवीय है, बल्कि लोकतंत्र के मूल्यों के भी विपरीत है।

यह भी देखा गया है कि जब ऐसे बयान सार्वजनिक आलोचना का शिकार होते हैं, तो नेता या तो बयान से मुकर जाते हैं या उसे तोड़-मरोड़ कर 'गलत तरीके से प्रस्तुत किए जाने' का आरोप लगा देते हैं। किंतु प्रश्न यह है कि क्या एक जनप्रतिनिधि को यह अधिकार है कि वह पीड़ितों की पीड़ा को अपमानित करे और फिर 'स्पष्टीकरण' के माध्यम से खुद को निर्दोष घोषित कर दे? क्या यह देश की जनता के साथ एक प्रकार का मजाक नहीं है?

इस समूचे प्रकरण से एक गहरा और खतरनाक संकेत मिलता है। वह यह कि कुछ नेता देश की गंभीर परिस्थितियों को, चाहे वह आतंकवाद हो, साम्प्रदायिक हिंसा हो या कोई प्राकृतिक आपदा, एक मनोरंजन या वक्तव्यबाजी का अवसर मान बैठते हैं। वे न तो स्थिति की गंभीरता को समझते हैं, न ही पीड़ितों की मनोदशा को। उन्हें केवल अपने एजेंडे को आगे बढ़ाना है, चाहे वह सामाजिक विमर्श को भटकाना हो या मीडिया में चर्चा में बने रहना।

रामचंद्र जांगड़ा जैसे नेता यदि राज्यसभा के सदस्य हैं और महत्वपूर्ण मामलों पर बहस का हिस्सा हैं, तो यह हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली की एक विडंबना है। यह सोचने पर विवश करता है कि क्या ऐसे लोग सचमुच इस योग्य हैं कि वे जनता की आवाज़ बनें? या फिर वे केवल संसद की गरिमा को अपने बेलगाम बोलों से चोट पहुंचाने का काम कर रहे हैं?

ऐसे में यह ज़रूरी हो जाता है कि राजनीतिक दल भी अपने सदस्यों की भाषा, सोच और बयानों पर निगरानी रखें। केवल चुनाव जिताना ही किसी पार्टी का उद्देश्य नहीं होना चाहिए, बल्कि संवेदनशीलता, समझदारी और सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देना भी उसका कर्तव्य होना चाहिए। यदि कोई नेता बार-बार इस तरह के विवादास्पद और अमानवीय वक्तव्य देता है, तो उस पर अनुशासनात्मक कार्रवाई आवश्यक होनी चाहिए।

साथ ही, मीडिया की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। मीडिया को ऐसे बयानों को सनसनी की तरह परोसने के बजाय, उनकी गंभीर आलोचना करनी चाहिए और समाज में यह संदेश फैलाना चाहिए कि पीड़ितों के दु:ख का उपहास किसी भी सूरत में स्वीकार्य नहीं है। साथ ही, समाज को भी सजग रहकर यह पहचानने की ज़रूरत है कि नेता का काम भाषण देना नहीं, बल्कि दु:ख के समय जनता के साथ खड़ा रहना है। अंतत: यह सवाल बार-बार उठता है कि क्या बेलगाम बोल किसी नेता की पहचान का पर्याय बन गए हैं? क्या वे समाज में केवल विवाद खड़ा करके अपनी उपस्थिति दर्ज करवाना चाहते हैं? या फिर वे इस भ्रम में हैं कि संवेदनहीनता ही राजनीति का नया औजार बन गई है? इस प्रश्न का उत्तर हम सबको मिलकर देना होगा, एक सजग नागरिक के नाते, एक संवेदनशील समाज के हिस्से के रूप में।

संवेदनशीलता, सहानुभूति और मानवीयता, ये तीन मूल्य किसी भी राष्ट्र की आत्मा होते हैं। यदि हमारे जनप्रतिनिधि ही इन मूल्यों का अपमान करने लगें, तो यह केवल राजनीति का पतन नहीं, बल्कि सभ्यता के क्षरण की ओर संकेत है। अत: यह आवश्यक है कि समाज, मीडिया, और राजनीति, तीनों मिलकर ऐसी सोच और ऐसे वक्तव्यों का विरोध करें जो पीड़ितों को ही दोषी ठहराने की धृष्टता करते हैं। अब समय आ गया है जब जनता यह स्पष्ट कर दे कि उसे प्रतिनिधि चाहिए प्रवक्ता नहीं, संवेदना चाहिए, बयान नहीं और नेतृत्व चाहिए, उपहास नहीं। तभी हम एक संवेदनशील, उत्तरदायी और मानवीय लोकतंत्र की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

आयोजन

लोकेन्द्र सिंह

लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक हैं।

संघ कार्यक्रम में अरविंद नेताम के जाने पर विवाद अकारण

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सबके लिए खुला संगठन है। इसके दरवाजे किसी के लिए बंद नहीं है। कोई भी संघ में आ सकता है। कोई विपरीत विचार का नेता, सामाजिक कार्यकर्ता या विद्वान व्यक्ति जब संघ के कार्यक्रम में शामिल होता है, तब उन लोगों को आश्चर्य होता है, जो संघ को एक 'क्लोज्ड डोर ऑर्गेनाइजेशन' समझते हैं। जो संघ को समझते हैं, उन्हें यह सब सहज ही लगता है। इसलिए नागपुर में आयोजित संघ शिक्षावर्ग 'कार्यकर्ता विकास वर्ग-2' के समापन समारोह में जब मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ के जनजाति वर्ग के कद्दावर नेता अरविंद नेताम को आमंत्रित किया गया, तब संघ को जाननेवालों को यह सहज ही लगा लेकिन संघ के प्रति संकीर्ण सोच रखने वाले इस पर न केवल हैरानी व्यक्त कर रहे हैं अपितु वितंडावाद भी खड़ा करने का प्रयास कर रहे हैं।

हालांकि, उनके वितंडावाद की हवा स्वयं जनजातीय नेता अरविंद नेताम ने यह कहकर निकाल दी कि 'वनवासी समाज की समस्याओं और चुनौतियों को संघ कार्यक्रम के माध्यम से रखने का सुअवसर मुझे मिला है'। उन्होंने संघ के संबंध में एक महत्वपूर्ण टिप्पणी यह भी की है कि 'इस संगठन में चिंतन-मंथन की गहरी परंपरा है। भविष्य में जनजातीय समाज के सामने जो चुनौतियां आने वाली हैं, उसमें आदिवासी समाज को जो संभालनेवाले और मदद करनेवाले लोग/संगठन हैं, उनमें हम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को मानते हैं'। सुप्रसिद्ध जनजातीय नेता अरविंद नेताम् पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और पीवी नरसिम्हा राव सरकार में मंत्री रहे हैं। उल्लेखनीय है कि संघ के कार्यक्रमों में महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव अंबेडकर और जय प्रकाश नारायण से लेकर श्रीमती इंदिरा गांधी एवं प्रणब मुखर्जी तक शामिल हो चुके हैं। संघ ने कभी किसी से परहेज नहीं किया। संघ अपनी स्थापना के समय से ही सभी प्रकार के मत रखने वाले विद्वानों से मिलता रहा है और उन्हें अपने कार्यक्रमों में आमंत्रित करता रहा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संवाद में गहरा विश्वास है। वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत कहते हैं कि 'अगर हम विचारों को एक किला बनाकर उसके अंदर अपने आपको बंद कर लेंगे, तो यह व्यावहारिक नहीं होगा'। संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार प्रतिष्ठित राजनेता थे। कांग्रेस, समाजवादी एवं कम्युनिस्ट नेताओं के साथ उनका गहरा परिचय था। संघ का दर्शन कराने के लिए डॉक्टर साहब लगातार विभिन्न विचारों के विद्वान व्यक्तियों एवं सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ताओं से मिलते थे और उन्हें संघ में आमंत्रित करते थे। वे उस समय की चुनौतियों के संबंध में सबसे विचार-विमर्श करके समाधान के मार्ग तक पहुँचने का प्रयास करते थे। संघ के वर्तमान अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर अपनी पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : स्वर्णिम भारत के दिशा-सूत्र' में लिखते हैं कि 'किसी विषय पर विभिन्न मत हो सकते हैं, किंतु जब हम समाज के प्रत्येक वर्ग से मिलते हैं, संवाद करते हैं, तो अवश्य ही समाधान निकलता है'।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 1930 के दशक से ही समाज जीवन में सक्रिय लोगों को अपने कार्यक्रमों में बुलाता रहा है। दरअसल, एक और महत्वपूर्ण बात है यह कि संघ को विश्वास है कि जब तक कोई संघ से दूर है, तब तक ही वह संघ का विरोधी हो सकता है। लेकिन जैसे ही वह संघ के निकट आता है और संघ को जानने-समझने लगता है, तब वह संघ का विरोधी हो ही नहीं सकता। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो इस बात को सिद्ध करते हैं। भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन और लोकनायक जयप्रकाश नारायण भी संघ के आमंत्रण पर आ चुके हैं। लोकनायक जयप्रकाश नारायण सम्मानित समाजवादी नेता थे। प्रारंभ में संघ को लेकर उनके विचार आलोचनात्मक थे। लेकिन जब उन्होंने संघ को नजदीक से देखा तब उनके विचार पूरी तरह बदल गए। उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि 'यदि आरएसएस फासीवादी संगठन है तो जेपी भी फासीवादी है'। प्रख्यात समाजवादी नेता राम मनोहर लोहिया और संघ के पदाधिकारियों के साथ मित्रतापूर्ण संवाद रहा है। आचार्य विनोबा भावे ने कहा है कि 'मैं संघ का विधिवत सदस्य नहीं हूँ, फिर भी स्वभाव से, परिकल्पना से मैं स्वयंसेवक हूँ'। परम पावन दलाई लामा संघ के अनेक कार्यक्रमों में शामिल होते रहे हैं, उनका भी कहना है कि 'मैं संघ का समर्थक हूँ। अनुशासन, देशभक्ति और समाज सेवा के लिए यह संगठन जाना जाता है'। वर्ष 1977 में आंध्रप्रदेश में आए चक्रवात के समय स्वयंसेवकों के सेवा कार्यों को देखकर वहां के सर्वोदयी नेता श्री प्रभाकर राव ने तो संघ को नया नाम ही दे दिया था। उनके अनुसार- 'आरएसएस अर्थात् रेडी फॉर सेल्फलेस सर्विस'।

रिपब्लिकन पार्टी ऑफ़ इंडिया के नेता और दलित नेता दादासाहेब रामकृष्ण सूर्यभान गवई तथा कम्युनिस्ट विचारों वाले जस्टिस वीआर कृष्णा अय्यर भी संघ के कार्यक्रमों में आ चुके हैं। मीनाक्षीपुरम में कुछ हिंदुओं द्वारा धर्म परिवर्तन कर इस्लाम स्वीकार किए जाने की घटना के बाद श्री गवई ने स्वयं संघ के कार्यक्रम में आने की इच्छा व्यक्त की थी और अपने विचार रखे थे। केरल की पहली कम्युनिस्ट सरकार में मंत्री रहे जस्टिस वीआर कृष्णा अय्यर ने स्थानीय विरोधों के बावजूद तत्कालीन सरसंघचालक से संपर्क किया और बाद में पत्रकारों के सामने अपने विचार रखे थे।

अभी हाल के वर्षों में देखें तो, नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी, डीआरडीओ के पूर्व डायरेक्टर जनरल विजय सारस्वत, एचसीएल के प्रमुख शिव नाडर, नेपाल के पूर्व सैन्य प्रमुख रुकमंगुड कटवाल जैसे व्यक्तित्व संघ के विजयादशमी उत्सव में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हो चुके हैं।

संघ के वर्ग एवं शाखा में महात्मा गांधी

वर्ष 1934 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शीत शिविर वर्धा में महात्मा गांधी के आश्रम के पास ही लगा था। गांधीजी ने शिविर को देखने इच्छा प्रकट की। वर्धा के संघचालक अप्पाजी जोशी ने शिविर में उनका स्वागत किया। महात्मा गांधी ने बड़ी बारीकी से शिविर का निरीक्षण किया। उन्होंने अप्पाजी से पूछा कि इस शिविर में कितने हरिजन हैं? अप्पाजी ने जवाब दिया- 'यह बताना कठिन है, क्योंकि हम सभी को हिंदू के रूप में ही देखते हैं। इतना हमारे लिए पर्याप्त है। बाद में उनकी भेंट संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार के साथ हुई। संघशिक्षा वर्ग में जाने की यह बात स्वयं महात्मा गांधी ने एक सार्वजनिक कार्यक्रम में कही।'

16 सितंबर, 1947 की सुबह दिल्ली में संघ की शाखा पर जाकर महात्मा गांधी ने स्वयंसेवकों से संवाद किया। उन्होंने कहा- बरसों पहले मैं वर्धा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक शिविर में गया था। उस समय इसके संस्थापक श्री हेडगेवार जीवित थे। स्व. श्री जमनालाल बजाज मुझे शिविर में ले गये थे और वहां मैं उन लोगों का कड़ा अनुशासन, सादगी और छुआछूत की पूर्ण समाप्ति देखकर अत्यन्त प्रभावित हुआ था। संघ एक सुसंगठित, अनुशासित संस्था है।

संघ शिक्षा वर्ग में डॉ. भीमराव आंबेडकर

समाज को समरसता के सूत्र में पिरोकर उसे संगठित और सशक्त बनाने वाले महानायकों में से एक डॉ. भीमराव आंबेडकर भी संघ के प्रणेता डॉ. हेडगेवार के संपर्क में थे। बाबा साहेब 1937 और 1939 में संघ शिक्षा वर्ग में गए थे। 1937 में करहाड शाखा (महाराष्ट्र) के विजयादशमी उत्सव पर बाबा साहब का भाषण हुआ। इस दौरान वहां 100 से अधिक वंचित और पिछड़े वर्ग के स्वयंसेवक थे। जिन्हें देखकर डॉ. आंबेडकर को आश्चर्य तो हुआ ही बल्कि भविष्य के प्रति उनकी आस्था भी बढ़ी।

सन् 1939 में एक बार फिर बाबा साहब पुणे के संघ शिक्षा वर्ग के सायंकाल के कार्यक्रम में आए थे। यहाँ उनकी भेंट राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक एवं तत्कालीन सरसंघचालक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार से हुई। इसी प्रकार, संघ से प्रतिबंध हटाने में डॉ. अंबेडकर का जो सहयोग प्राप्त हुआ, उसके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करने के लिए तत्कालीन सरसंघचालक माधवराव गोलवलकर ने सितंबर 1948 में दिल्ली में उनसे भेंट की।

संघ के कार्यक्रम में इंदिरा गांधी

वर्ष 1963 में स्वामी विवेकानंद जन्मशती के अवसर पर कन्याकुमारी में 'विवेकानंद शिला स्मारक' निर्माण के समय भी संघ ने सभी राजनीतिक दलों के प्रमुख राजनेताओं एवं सामाजिक संगठनों के प्रमुख व्यक्तियों को आमंत्रित किया। स्मारक निर्माण के समर्थन में विभिन्न राजनीतिक दलों के 323 सांसदों के हस्ताक्षर एकनाथ रानाडे जी ने प्राप्त किये थे। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने एकनाथ रानाडे जी के आमंत्रण पर 'विवेकानंद शिला स्मारक (विवेकानंद रॉक मेमोरियल)' के उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल हुईं।

प्लास्टिक को न कहें, प्रकृति को हाँ कहें

पर्यावरण

प्रवीण कक्कड़

पौधे लगाने, पानी बचाने और अन्य पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों के लिये हम काफी बातें करते हैं लेकिन क्या वाकई में हम अपने इस पृथ्वी को बचाना चाहते हैं। अगर आपका जवाब हां है तो हमें चिंतित होने की जरूरत है क्योंकि पर्यावरण संरक्षण को लेकर हमारे प्रयास नाकाफी हैं। पर्यावरण के लिए आज सबसे बड़ा खतरा बन चुका है प्लास्टिक प्रदूषण।

5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस है। इस साल के विश्व पर्यावरण दिवस की थीम 'प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करना' है, जो इस गंभीर मुद्दे की अहमियत को दर्शाती है। प्लास्टिक बेशक हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया है, लेकिन अब यही प्लास्टिक हमारे अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा ख़तरा बन गया है। अगर हमने समय रहते प्लास्टिक के ख़िलाफ़ कोई ठोस कदम नहीं उठाए, तो शायद बहुत देर हो जाएगी।

प्लास्टिक प्रदूषण- एक साइलेंट किलर

1. प्लास्टिक क्यों है खतरनाक?

- अपघटन में सैकड़ों साल- एक प्लास्टिक बैग को गलने में 450 से 1000 साल लगते हैं।

- समुद्रों का दुश्मन- हर साल 11 मिलियन टन प्लास्टिक समुद्र में जाता है, जो लगभग 2,200 एफिल टावर्स के वजन के बराबर है।

- माइक्रोप्लास्टिक का खतरा- यह छोटे-छोटे कण हमारे भोजन, पानी और यहाँ तक कि हमारे खून में भी पाए जा चुके हैं।

2. हमारी लापरवाही के परिणाम

- जीव-जंतुओं की मौत- समुद्री कछुए, व्हेल और पक्षी प्लास्टिक को भोजन समझकर खा लेते हैं, जिससे उनकी मौत हो जाती है।

- मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव- प्लास्टिक में मौजूद केमिकल्स कैंसर, हार्मोनल असंतुलन और प्रजनन संबंधी समस्याएँ पैदा कर सकते हैं।

हम क्या कर सकते हैं?

1. प्लास्टिक का उपयोग कम करें

- रीयूजेबल बैग और बोतलें इस्तेमाल करें- हर साल 500 अरब प्लास्टिक बैग्स का उपयोग होता है, जिनमें से अधिकांश एक बार इस्तेमाल के बाद फेंक दिए जाते हैं।

- सिंगल-यूज प्लास्टिक से बचें- प्लास्टिक स्ट्रॉ, कटलरी और कप का विकल्प चुनें।

2. रीसाइक्लिंग को अपनाएँ

- प्लास्टिक वेस्ट को अलग करें- भारत में केवल 60 प्रतिशत प्लास्टिक कचरा ही रीसाइकिल हो पाता है।

- इनोवेटिव आइडियाज़ को सपोर्ट करें- प्लास्टिक से टाइल्स, थर्माकोल और अन्य उपयोगी चीजें बनाने की तकनीकें विकसित हो रही हैं।

3. जागरूकता फैलाएँ

- सोशल मीडिया का उपयोग करें- #BeatPlasticPollution जैसे हैशटैग के साथ अपने अनुभव शेयर करें।

- स्कूल और कम्युनिटी में कार्यक्रम आयोजित करें- नुक्कड़ नाटक, पोस्टर प्रतियोगिताएँ और स्वच्छता अभियान चलाएँ।

आपका एक कदम, पृथ्वी के लिए वरदान

हम सभी को यह समझना होगा कि प्लास्टिक प्रदूषण कोई दूर की समस्या नहीं है, यह हमारे दरवाज़े तक पहुँच चुकी है। लेकिन अगर सार्थक पहल की जाए तो इसे रोका जा सकता है! इस विश्व पर्यावरण दिवस पर, आइए संकल्प लें कि हम अपनी दिनचर्या में छोटे-छोटे बदलाव करेंगे। क्योंकि जब सभी मिलकर चलेंगे, तो प्लास्टिक प्रदूषण को हराना कोई मुश्किल काम नहीं होगा।

धर्म और पर्यावरण

राजेन्द्र वैश्य

लेखक पृथ्वी संरक्षण के अध्यक्ष हैं।

गंगा दशहरा का वैज्ञानिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण

भारत में त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं होते, बल्कि वे समाज और प्रकृति के साथ हमारे संबंधों को भी दर्शाते हैं। गंगा दशहरा एक ऐसा पर्व है जो धार्मिक श्रद्धा के साथ-साथ पर्यावरणीय चेतना से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। यह पर्व गंगा नदी के पृथ्वी पर अवतरण की स्मृति में मनाया जाता है, पर यदि इसे आधुनिक संदर्भ में देखा जाए, तो यह जल और पर्यावरण संरक्षण का सशक्त संदेश देता है। भारत एक सांस्कृतिक और धार्मिक विविधताओं वाला देश है जहाँ हर त्योहार न केवल श्रद्धा का प्रतीक होता है, बल्कि उसके पीछे गहरी ऐतिहासिक, सामाजिक और पर्यावरणीय चेतना भी छुपी होती है।

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को स्वर्ग से उतरकर सूर्यवंशी राजा भगीरथ के पुरखों का उद्धार करने के लिए गंगा देवाधिदेव शिव की जटाओं से होती हुई धराधाम में अवतरित हुईं। गंगा पृथ्वीवासियों को देवलोक का दिव्य प्रसाद है। स्कंद पुराण के अनुसार जिस दिन पृथ्वी पर गंगावतरण हुआ, उस दिन दस योग थे। ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, बुध का दिन, हस्त नक्षत्र, व्यतिपात, गर और आनंद योग और कन्या राशि मे चन्द्रमा तथा वृष राशि मे सूर्य। इसी कारण इस दिन किया गया गंगास्नान 'दशहरा' अर्थात् दश पापों का हरण करने वाला माना जाता है। धरती पर अवतरण के बाद गंगा भारतीय जन मानस के मन-प्राण मे बस गयी। हम गंगा को माँ का दर्जा देते है। मान्यता है कि गंगा पतितपावनी है, उसके निर्मल जल से हमारे सारे पाप धुल जाते है। गंगा न सिर्फ जगत को पाप-ताप से मुक्ति देतीं है बल्कि लोगों की भूख-प्यास भी मिटाती है। गोमुख से गंगासागर तक गंगा देश की लगभग आधी आबादी की आजीविका गंगा पर निर्भर है। कृषि, पर्यटन, साहसिक खेलों, उद्योगों के विकास एवं पुरोहितों की रोजी-रोटी में गंगा की अहम भूमिका है।

देश को एक सूत्र में बांधने का श्रेय गंगा नदी को है। गंगा हमारे लिए पवित्र नदी है। गंगा सभी भारत वंशियों के लिए प्रेरक भी है और प्रेरणा भी। शहनाई के शहंशाह उस्ताद विस्मिल्लाह खां का वह प्रसंग सर्व विदित है कि जब उन्हें अमेरिका में बसने का प्रस्ताव दिया गया तो उनका जवाब था यहां गंगा को ले आओ तो मैं भी आ जाऊंगा यानी गंगा के बगैर समूचा वैभव व्यर्थ है। एक बार अमेरिका में कुछ पत्रकारों ने स्वामी विवेकानंद से प्रश्न किया था- आपके देश में किस नदी का पानी सबसे अच्छा है? स्वामी जी मुस्कुरा कर बोले- यमुना! इस पर एक पत्रकार ने आश्चर्य जताते हुए कहा, पर आपके देश में तो गंगा नदी का पानी सबसे शुद्ध माना जाता है। इस पर स्वामी जी ने उत्तर दिया- कौन कहता है गंगा नदी है? वो तो हमारी मां हैं, जो जन्म देने वाली मां की तरह भारत भूमि के सभी जड़-चेतन प्राणियों एवं वृक्ष-वनस्पतियों का भरण पोषण करती हैं। यदि हम तार्किक दृष्टिकोण से देखें तो गंगा दशहरा एक ऐसा पर्व है, जो समाज को जल संरक्षण और स्वच्छता का संदेश भी देता है। गंगा जैसी नदी, जो करोड़ों लोगों के जीवन का आधार है, उसके प्रति श्रद्धा जताकर हम जल स्त्रोतों की महत्ता को स्वीकारते हैं। गंगा दशहरा हमें यह सोचने को प्रेरित करता है कि यदि हम धार्मिक भावनाओं से प्रेरित होकर गंगा की सफाई और संरक्षण के लिए कार्य करें, तो यह एक सतत विकास का मार्ग बन सकता है। इस दिन स्नान, दान, और व्रत का विशेष महत्व है, जिसे पापों से मुक्ति का मार्ग बताया गया है। किंतु तार्किक दृष्टिकोण से देखें तो यह आत्मनियंत्रण, संयम और सामाजिक सेवा के प्रतीक हैं - जो एक स्वस्थ और संतुलित समाज के लिए आवश्यक हैं। आज जब गंगा जैसी नदियाँ प्रदूषण की मार झेल रही हैं, तो गंगा दशहरा की सार्थकता और बढ़ जाती है। यह पर्व हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या गंगा केवल एक धार्मिक प्रतीक है या हमारे जीवन और अस्तित्व का आवश्यक आधार भी?

केवल पर्वों पर गंगा की पूजा करना पर्याप्त नहीं, बल्कि उसके संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास करना भी हमारी जिम्मेदारी है।गंगा के प्रति स्वामी जी के यह श्रद्धा भरे उद्गार आज भी सनातन जीवन मूल्यों में आस्था रखने वाले हर भावनाशील भारतीय को अनुप्राणित करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में कहा है धन्य देश सो जहँ सुरसरी अर्थात वह देश धन्य है, जहां श्री गंगा जी विद्यमान है। भारत भूमि का स्वाभिमान है माँ गंगा। भारतीय संस्कृति की प्राण है, भक्तो की मान है, ज्ञानियों के लिए ज्ञान का आधार है माँ गंगा। नि:संदेह गंगा हिंदू सभ्यता और संस्कृति की सबसे अनमोल धरोहर है। नदी नहीं, मां हैं गंगा, जो हमें राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोती हैं। लोक आस्था के अनुसार जीवन में एक बार भी गंगा में स्नान न कर पाना जीवन की अपूर्णता का द्योतक माना जाता है। मगर बहुआयामी उपयोगिता व गहन धार्मिक आस्था के बावजूद हम मनुष्यों के पापपूर्ण कृत्यों के चलते मां गंगा प्रदूषण की मार से बुरी तरह कराह रही है।

मां गंगा हम भारतीयों को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोती हैं। लाखों भारतीयों का पेट भरती हैं। आर्य-अनार्य, वैष्णव-शैव, साहित्यकार-वैज्ञानिक सभी ने एकस्वर में इसके महत्व को स्वीकार किया है। आइए हम सब मां गंगा की शुद्धि व सुरक्षा के लिए संकल्पबद्ध होकर पूरे मन से प्रयास करें, तभी इस देवनदी का अवतरण दिवस मनाना सार्थक होगा।

संक्षिप्त समाचार

ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविरों का समापन समारोह आयोजित

रायसेन (निप्र)। रायसेन स्थित खेल स्टेडियम परिसर में ताइक्वांडो व फुटबॉल खेल के खेलों हेतु ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर (समर कैंप) का समापन तथा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। खेल और युवा कल्याण विभाग द्वारा ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर दिनांक 1 मई 2025 से रायसेन जिले में जिला मुख्यालय सहित सभी विकासखंड में 22 स्थानों पर 12 खेलों के प्रशिक्षण कैंपों का आयोजन किया गया। पुलिस अधीक्षक श्री पंकज कुमार पांडे के निर्देशन में जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी श्री जलज चतुर्वेदी द्वारा संचालित किए गए प्रशिक्षण शिविर में जिले भर में 1297 खिलाड़ियों ने विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों पर भाग लिया। प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक श्री पंकज पाण्डे ने कहा कि खिलाड़ियों ने अनुशासन में रहकर पूरे एक महीने तक खेलों को सीखा है। सभी खिलाड़ी आपस में एक साथ खेले हैं जिससे खिलाड़ियों में दोस्ती की भावना जन्म लेती है और खिलाड़ी आपस में बहुत अच्छे मित्र बन जाते हैं। पुलिस अधीक्षक श्री पाण्डे ने कहा कि खेल ऐसा माध्यम है जिससे खिलाड़ियों में देश प्रेम की भावना जागृत होती है और खिलाडी समाज में अपना श्रेष्ठ स्थान रखता है। सभी खिलाड़ी अपने-अपने खेलों को निखारने के लिए नियमित अभ्यास करते रहें और अपने जिला व अपने राज्य और राष्ट्र का नाम रोशन करते रहे। पुलिस अधीक्षक द्वारा सभी खिलाड़ियों को आगे खेलने के लिए अग्रिम शुभकामनाएं प्रेषित की गई। समारोह के प्रारंभ में में जिला खेल और युवा कल्याण अधिकारी श्री जलज चतुर्वेदी ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। समापन समारोह के अवसर पर विजेता व उपविजेता बालक एवं बालिकाओं को ट्राफियां प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही पूरे 1 महीने तक योग्य प्रशिक्षकों ने जो प्रशिक्षण दिया है उनमें दिनेश दिवाकर ताइक्वांडो प्रशिक्षक पुलिस लाइन रायसेन, वीएस बुंदेला फुटबॉल प्रशिक्षक खेल विभाग रायसेन, राजा रैकवार व मीना रैकवार वरिष्ठ खिलाड़ी व प्रशिक्षक को भी इस अवसर पर अतिथि के द्वारा ट्रैक शूट प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

ग्रामीणों को बारिश में भीगते देख उनके पास पहुंचे कलेक्टर

रायसेन (निप्र)। प्रति मंगलवार की भांति कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जनसुनवाई आयोजित की गई। जिसमें नागरिकों की समस्याओं तथा शिकायतों का समाधान किया गया। पेयजल समस्या लेकर ग्राम सीहोरा इमलिया से बड़ी संख्या में कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचे ग्रामीणों को बारिश में भीगते देख कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा गाड़ी से उतरकर उनके पास पहुंचे और उनकी समस्या जानी। ग्रामीणों ने बताया कि ग्राम में नलजल योजना के संचालन हेतु गठित समिति द्वारा ठीक तरीके से योजना का संचालन नहीं किया जा रहा है। ग्रामीणों द्वारा नल कनेक्शन की राशि प्रतिमाह जमा की जा रही है। लेकिन इसके बाद भी पिछले 15 दिवस से मोटर खराब होने के कारण पेयजल की सप्लाई बंद है। जिस कारण ग्रामीणों को बेहद परेशानी हो रही है। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा को ग्रामीणों ने बताया कि बार-बार बोलने के बाद भी मोटर ठीक नहीं करवाई जा रही है। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधिकारी को समक्ष बुलाकर तत्काल वस्तुस्थिति ज्ञात कर ग्रामीणों की पेयजल समस्या का भी शीघ्र समाधान करने के लिए निर्देशित किया। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा के निर्देशों के परिपालन में पीएचई अधिकारी ने समस्या के समाधान हेतु की गई कार्यवाही की जानकारी देते हुए बताया कि सीहोरा इमलिया के पंचायत सचिव और समिति के सदस्यों को निर्देशित किया गया है। मोटर ठीक करवाई जा रही है तथा दो दिवस में ग्राम में पेयजल वितरण शुरू हो जाएगा। साथ ही नलजल योजना के बेहतर संचालन हेतु नवीन समिति गठित की जाएगी। जनसुनवाई में प्राप्त अधिकांश आवेदन प्रधानमंत्री आवास योजना, खाद्यान्न पात्रता पर्ची, आर्थिक सहायता, शासन की योजनाओं का लाभ नहीं मिलने संबंधी थे, जिनका शीघ्र समाधान कराने के निर्देश अधिकारियों को दिए गए हैं। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में अपर कलेक्टर श्रीमती श्वेता पवार, डिप्टी कलेक्टर्स तथा अधिकारी उपस्थित रहे। अनुभागों से वीडियो कॉफ्रेंस के माध्यम से एसडीएम, जनपद सीईओ, सीएमओ सहित विकासखण्ड स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने पौधारोपण कर प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया

धार नगर के चाणक्यपुरी गरबा चौक परिसर में विभिन्न प्रजाति के पौधारोपण किया गया

धार। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान अंतर्गत विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून पर केंद्रीय राज्यमंत्री एवं धार महू लोकसभा क्षेत्र सांसद सावित्री ठाकुर ने धार नगर के चाणक्यपुरी गरबा चौक परिसर में विभिन्न प्रजाति के पौधारोपण किया गया तथा पौधा संरक्षण हेतु ट्रीगार्ड भी लगाई गई।

इस दौरान वन विभाग जिला अधिकारी ए.के चौहान, एसडीएम रोशनी पाटीदार क्षेत्रीय पार्षद रंजना राठौड़, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष कुसुम सौलंकी विशेष रूप से मौजूद रहें।

श्रीमती सावित्री ठाकुर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा शुरु किए गए एक पेड़ माँ के नाम अभियान में देश के नागरिक बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। 'एक पेड़ माँ के नाम' संकल्प के साथ रोपे जा रहे ये पौधे न केवल पर्यावरण संरक्षण का प्रतीक है, बल्कि मातृभूमि तथा मातृशक्ति के प्रति हमारी अगाध श्रद्धा का पर्याय है। प्रकृति संरक्षण की यह पहल, आने वाली पीढ़ियों के लिए एक हरित व स्वस्थ भविष्य की नींव रखेगी। यह बगीचा भी आप सभी के सहयोग से सबसे सुन्दर बगीचा बनेगा। कार्यक्रम में आए सभी लोगो ने वृक्षारोपण किया।

इस अवसर पर पर्यावण प्रेमी डॉ अमृत पाटीदार, जयराज देवड़ा , देवेंद्र रावल जसप्रित डंग, कमल सिंह सोलंकी, कपिल श्रीवास्तव गौरव तोरनिया अजय राठौड़ गिरीश गेरेना सतीश रघुवंशी जयराज देवड़ा विजय बारिया पुष्पा राठौड़ रीमा राठौर सीमा पांडे सीमा सोनी प्रज्ञा ठाकुर निशा शर्मा विजय बारिया रतन भाभर समेत चाणक्यपुरी रहवासी उपस्थित रहे।

धार गायत्री शक्तिपीठ पर श्रृद्धा के साथ मनाया गया गायत्री जंयती पर्व

शक्ति पीठ पर शिव परिवार की भी की गई प्राण प्रतिष्ठा

धार। धार गायत्री शक्तिपीठ पर गायत्री जंयती (गंगा दशहरा) का पर्व गुरुवार को श्रृद्धा, भक्ति और हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर , गंगा दशहरा पर धार गायत्री शक्तिपीठ पर शिव परिवार प्राण प्रतिष्ठा भी की गई।

यह जानकारी देते हुए गायत्री शक्तिपीठ के प्रमुख ट्रस्टी रमेश चंद्र सचान ने बताया कि शिव परिवार प्राण प्रतिष्ठा झाबुआ से आए आचार्य झाबुआ गायत्री शक्ति पीठ के प्रमुख श्री घनश्याम दास बैरागी और श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाई गई। शिव परिवार प्राण प्रतिष्ठा समारोह पश्चात पंचकुंडीय गायत्री यज्ञ का क्रम प्रारंभ हुआ। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं द्वारा गायत्री महामंत्र और महामृत्युंजय मंत्र से यज्ञ में आहुतियां दी गई। यज्ञ कार्य प्रज्ञा बैरागी द्वारा संपन्न करवाया गया। यज्ञ पूर्णाहूति पश्चात भोजन प्रसादी का आयोजन हुआ जिसमें बड़ी संख्या में गायत्री परिजनों ने सहभागिता की।

पठारी क्षेत्र में मूर्ति कला का हो रहा पुनरुत्थान, क्षेत्र को मिलेगा रोजगार और पहचान

विदिशा (निप्र)। विदिशा जिले की तहसील पठारी क्षेत्र में अद्भुत पत्थर से बेशकीमती मूर्तियों का निर्माण किया जा रहा है। श्रद्धा आस्था और भक्ति की केंद्र बन रही मूर्तियां भक्तों और कला प्रेमियों की पहली पसंद बन रही है। जो स्थापत्य वास्तु और मूर्ति कला संरक्षण और संवर्धन कर पुनः उत्थान कर रही हैं। विदिशा जिले की तहसील पठारी के ग्राम सैदपुर में पत्थर मूर्तियों का निर्माण किया जा रहा है। यह मूर्तियां ग्राम सैदपुर के लाल , पीले और भूरे रंग के अद्भुत पत्थर से बेशकीमती मूर्तियों का निर्माण किया जा रहा है। हिंदू, जैन और बौद्ध धर्म की मूर्तियों का निर्माण किया जा रहा है,जिसमें खास तौर पर जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों की मूर्तियां बनाई जा रही है।

कलेक्टर श्री गुप्ता ने की थी सराहना : कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने विगत दिनों पठारी क्षेत्र में भ्रमण के दौरान उन्होंने सुकृति कला केंद्र सैदपुर पहुंच कर अद्भुत मूर्तियों की जमकर सराहना की थी। कलेक्टर श्री गुप्ता ने पठारी के भ्रमण दौरान इन मूर्तियों को बनाने वाले कलाकारों के हुनर को देखा और होंसला अफजाई किया था।

ऐसे हुई मूर्ति निर्माण की शुरुआत : पत्थर खदान मालिक डिंपल सिंघई ने बताया कि पठारी क्षेत्र से पूरे देश में जैन मंदिरों के फाउंडेशन बनाने वाले पत्थर ब्लॉक भेजे जाते हैं। 2018-19 में खजुराहो में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने मूर्ति निर्माण के लिए पत्थर की मांग की। जिसमें अंतरराष्ट्रीय लेबोरेटरी में सैदपुर खदान का पत्थर का गुणवत्ता युक्त चयन किया गया। इसके बाद से मुनिश्री दुर्लभ सागर जी महाराज की प्रेरणा से मूर्तियों का निर्माण प्रारंभ हुआ।

ऐसे बनती है मूर्तियां : आर्किटेक्चर प्रियंक जैन, मुख्य कलाकार रंजीत बेहरा और उत्तम मलिक ने बताया कि मूर्ति निर्माण के लिए विशेष मुहूर्त में पत्थर को वैदिक विधि से आमंत्रित किया जाता है। पत्थर की पूजा अर्चना करने के पश्चात पत्थर की कटिंग की जाती है। इसके बाद पत्थर को मूर्ति का रूप देने के लिए ड्राइंग करके तराशा जाता है। इसके बाद फिर ड्राइंग करके नक्काशी की जाती है। मूर्ति पर डिजाइन बनाकर सफाई, घिंसाई और पॉलिश कर चिन्ह अंकित अंतिम रूप दिया जाता है। मूर्ति निर्माण के दौरान कलाकार कठोर नियम और सिद्धांतों का पालन करते हैं।

जीवंत और संजीदा दिखती है मूर्तियां : मुख्य रूप से नागर शैली स्थापत्य कला के लिए बनाई जा रही मूर्तियों में मथुरा शैली और गंधार शैली का अनूठा संगम नजर आता है। 9 ताल के आधार पर बनाई जा रही लाल, पीले और भूरे रंग के पत्थर की मूर्तियों में अद्भुत आकर्षण नजर आता है। 1 फुट से लेकर 13 फुट तक की भीमकाय मूर्तियों का निर्माण उड़ीसा, कोलकाता, चेन्नई, राजस्थान और मध्य प्रदेश के कुशल कलाकारों के द्वारा किया जा रहा है। जिसमें जैन मूर्तियों में ध्यान मग्न अवस्था, विशाल बंद नेत्र, घुंघराले केश, सुडोल कंधे, गोद में दोनों हाथ रखे हुए तीर्थंकरों के हृदय पर श्री वत्स चिन्ह प्रतिमाओं की शोभा बढ़ाते है। किसी-किसी प्रतिमा में हाथ की उंगलियां मुड़ी हुई नजर आती हैं।

ब्राह्मण समाज ऑफ इंडिया म.प्र. के महासचिव पद पर वरिष्ठ पत्रकार ज्ञानेंद्र त्रिपाठी नियुक्त

धार। ब्राह्मण समाज ऑफ इंडिया के संस्थापक एवं प्रधान महासचिव पंडित उत्तम प्रकाश तिवारी दिल्ली द्वारा ब्राह्मण समाज ऑफ इंडिया मध्य प्रदेश के प्रांतीय अध्यक्ष कैप्टन राज द्विवेदी की सहमति से ब्राह्मण समाज ऑफ इंडिया के प्रदेश महासचिव पद पर वरिष्ठ पत्रकार ज्ञानेंद्र त्रिपाठी को नियुक्त किया गया है। तथा आशा व्यक्त की है कि ब्राह्मण समाज के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पूरी निष्ठा व लगन से अपने दायित्व का निर्वहन करेंगे। श्री त्रिपाठी के प्रदेश महासचिव नियुक्त किए जाने पर इष्ट मित्रों, शुभचिंतकों एवं समाज जनों ने बधाई दी है तथा प्रधान महासचिव उत्तम प्रकाश तिवारी का आभार माना है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सिंदूर का पौधा रोपा

भोपाल । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विश्व पर्यावरण दिवस पर उज्जैन में दताना एयर स्ट्रिप पर सिंदूर के पौधे का रोपण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पौधा रोपकर प्रदेशवासियों को मानव जीवन के लिए प्रकृति के संरक्षण का महत्वपूर्ण संदेश दिया। इस अवसर पर उज्जैन के प्रभारी मंत्री श्री गौतम टेटवाल, विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा और जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

शासकीय गर्ल्स कॉलेज की पूर्व छात्रा कुमारी पूजा शर्मा का सहायक प्राध्यापक पद पर चयन हुआ

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में अपने पहले ही प्रयास में सफल हुई कुमारी पूजा शर्मा

विदिशा (निप्र)। राजमाता विजयराजे सिंधिया शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय विदिशा की पूर्व छात्रा कुमारी पूजा शर्मा का चयन सहायक प्राध्यापक पद के लिए किया गया। मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित लिखित और मौखिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद कुमारी पूजा शर्मा का चयन सहायक प्राध्यापक हिंदी के पद के लिए हुआ है। कुमारी पूजा शर्मा ने महाविद्यालय से हिंदी विषय में स्नातकोत्तर किया था और अपने पहले ही प्रयास में सहायक प्राध्यापक के रूप में चयनित होने में सफल हुई। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. नीता पांडेय ने चयनित कुमारी पूजा शर्मा को बधाई दी और प्रसन्नता जताते हुए कहा कि यह हमारे महाविद्यालय के लिए गौरव की बात है। यह विदिशा जिले के लिए भी एक उपलब्धि की तरह है। उन्होंने यह भी कहा कि इससे अध्ययनरत छात्राओं को प्रेरणा मिलेगी। कुमारी पूजा शर्मा ने भी अपनी सफलता में महाविद्यालय एवं प्राध्यापकों के योगदान को महत्वपूर्ण माना। महाविद्यालय की यह छात्रा अब शीघ्र ही प्रदेश के महाविद्यालय में शिक्षण करती नजर आएगी।

विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत किसानों को दी जा रही है योजनाओं एवं तकनीकों की जानकारी

सीहोर (निप्र)। भारत सरकार के निर्देशानुसार जिले में 29 मई से 12 जून तक किसानों के कल्याण को कृषि को उन्नत बनाने के लिए विकसित कृषि संकल्प अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत जिले में तीन दलों का गठन किया गया है। प्रत्येक दल में कृषि वैज्ञानिक, कृषि विभाग, पशुपालन एवं डेयरी विभाग, मत्स्य विभाग, उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों को सम्मिलित किया गया है। अभियान के अंतर्गत गठित दलों द्वारा प्रतिदिन जिले के तीन विकासखण्ड की नौ पंचायतों में भ्रमण कर कृषकों को कृषि, पशुपालन, मत्स्य एवं उद्यानिकी विभाग की नवीन योजनाओं, कृषि यंत्रीकरण, खरीफ मौसम की तैयारी बीजोपचार, पशुपालन एवं उद्यानिकी फसलों के सम्बंध में तकनीकी मार्गदर्शन एवं उन्नत कृषि तकनीकी की जानकारी प्रदान की जा रही है। किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के उप संचालक श्री केके पांडे ने बताया कि अभियान के तहत सीहोर विकासखंड की ग्राम पंचायत बिजोरी, महोड़िया, तथा मोगराराम में अधिकारियों के दलों द्वारा भ्रमण किया गया। इसी प्रकार आष्ठा विकासखंड की ग्राम पंचायत झिलेला, कुर्ली कलॉ तथा लाखिया तथा बुधनी विकासखण्ड महागांव, मर्दानपुर एवं आवंलीघाट, बांया, माथनी एवं जहांजपुरा में वैज्ञानिक एवं अधिकारियों के दलों द्वारा भ्रमण किया गया। विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत आष्ठा की ग्राम पंचायतों में आयोजित कार्यक्रम में आष्ठा विधायक श्री गोपाल सिंह इंजिनियर ने किसानों को विभिन्न योजनाओं का लाभ लेने तथा तकनीकी अपनाकर उन्नत खेती के लिए प्रोत्साहित किया। विभाग द्वारा 04 जून को सीहोर विकासखंड की ग्राम पंचायत बरखेड़ी, वमूलिया तथा धामनखेड़ा, आष्ठा विकासखंड की भंवरी कलॉ, करमनखेडी तथा फूडरा, बुधनी विकासखंड की खेरी, सलकनपुर तथा बोरी में कृषि वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों के दल द्वारा भ्रमण किया जायेगा।

कलेक्टर श्री जैन ने शिक्षा विभाग की बैठक में अधिकारियों को निर्देश

सभी बच्चों का स्कूल में प्रवेश दिलाएं कोई भी बच्चा स्कूल जाने से न छूटे

हरदा (निप्र)। स्कूल जाने योग्य सभी बच्चों को स्कूलों में प्रवेश दिलाएं और प्रयास किया जाए कि कोई भी बच्चा स्कूल जाने से छूटे नहीं। यह निर्देश कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित शिक्षा विभाग की बैठक में अधिकारियों को दिये। उन्होने बैठक में निर्देशित किया कि विभागीय अमले के माध्यम से 6 से 18 वर्ष की आयु के सभी बच्चों का सर्वे कर शाला से बाहर के बच्चों को शाला में प्रवेश के लिये प्रेरित कर उनका प्रवेश कराएं। उन्होने बैठक में बिना किसी कारण से अनुपस्थित अधिकारियों का एक दिन का वेतन काटने के निर्देश जिला शिक्षा अधिकारी को दिये। बैठक में जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती सविता झानिया, जिला शिक्षा अधिकारी श्री डी.एस. रघुवंशी, जिला परियोजना समन्वयक जिला शिक्षा केन्द्र श्री बलवंत पटेल सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

बैठक में कलेक्टर श्री जैन ने जिला शिक्षा अधिकारी श्री रघुवंशी को छात्रवृत्ति के लिये विद्यार्थियों के बैंक खाते अपडेट कराने के निर्देश दिये। उन्होने कहा कि कोई पात्र विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लाभ से वंचित न रहे, यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होने निर्देशित किया कि पीएम श्री विद्यालयों में नियमानुसार टेण्डर प्रक्रिया के माध्यम से विद्यार्थियों को सुविधाएं उपलब्ध कराएं। उन्होने बैठक में डीपीसी श्री पटेल को सार्थक एप के माध्यम से शिक्षकों की उपस्थित दर्ज कराने के निर्देश भी दिये। उन्होने कहा कि सार्थक एप की उपस्थिति के आधार पर ही शिक्षकों का माह जुलाई का वेतन आहरित किया जाए। कलेक्टर श्री जैन ने सीएम हेल्पलाइन की समीक्षा के दौरान निर्देशित किया कि कोई भी शिकायत नॉट अटेण्डेन्ट नहीं होना चाहिए। उन्होने एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत विद्यालयों में पौधरोपण कर वायुदूत एप पर फोटो अपलोड कराने के निर्देश भी अधिकारियों को दिये। उन्होने अधिकारियों को विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का परीक्षण के निर्देश दिये।

विकसित कृषि संकल्प अभियान का क्रियान्वयन

विदिशा (निप्र)। विदिशा जिले मे किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग तथा कृषि संबद्ध विभाग द्वारा खरीफ पूर्व विकसित कृषि संकल्प अभियान का संचालन 29 मई से 12 जून 25 तक किया जा रहा है। अभियान का उद्देश्य कृषकों को खरीफ पूर्व तैयारी के लिए उन्नत एवं वैज्ञानिक तकनीकों, नवीन अनुसंधानों एवं राज्य सरकार की योजनाओं, प्राकृतिक खेती, जल प्रबंधन फसल विविधिकरण, पशुपालन, उद्यानिकी, मछली पालन एवं कृषि यंत्रीकरण की जानकारी से अवगत कराना है, जिससे कृषकों की आय में वृद्धि हो और वे सतत् कृषि पद्धतियों को अपना सकें। जिले में इस अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु तीन दलों का गठन किया गया है, जिसमें किसानो द्वारा बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे हैं एवं अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर रहे हैं। अब तक प्रथम दल द्वारा विकासखंड विदिशा के 18 ग्रामों में दूसरा दल विकासखंड बासौदा के 18 ग्रामों एवं तीसरा दल विकासखंड कुरवाई एवं सिरोंज के 18 ग्रामों में शिविरों का आयोजन किया गया है। जिसमें 3457 किसानों ने शिविर में पहुंचकर कृषि की उन्नत तकनीक एवं मिटटी की जांच, बीज, खाद, सिंचाई, कृषियंत्र, फसल अवशेष प्रबंधन एंव ड्रोन आदि की जानकारी शिविर में उपस्थित कृषि वैज्ञानिको एवं अधिकारियों से प्राप्त की। किसानों द्वारा बताया गया की ऐसे शिविरों का आयोजन पंचायत स्तर पर दोनों सीजन रबी एंव खरीफ से पूर्व किया जाना चाहिये। इस अभियान का नियंत्रण एवं अनुश्रवण उपसंचालक कृषि जिला विदिशा, जिला नोडल अधिकारी एवं भारतीय मृदा विज्ञान भोपाल, केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान भोपाल एंव कृषि विज्ञान केन्द्र रायसेन के वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा किया जा रहा है।

तेज रफ्तार डंपर ने स्कूटी सवार को रौंदा,मौत

सीहोर। सीहोर जिले के रेहटी क्षेत्र में बुधवार दोपहर को एक तेज रफ्तार डंपर ने स्कूटी सवार को रौंद दिया था। हादसे में उसकी मौके पर ही मौत हो गई थी। हादसे के एक दिन बाद गुरुवार को घटना का वीडियो सामने आया है। इसमें ट्रक के पिछले पहिए में युवक कुचलते हुए दिखाई दे रहा है। पुलिस ने आरोपी डंपर चालक को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार, जिले के ग्राम गोड़ी गुराडिया निवासी मोहन उइके (40) बुधवार को किसी काम से बुधनी के रेहटी आया था। इस दौरान दोपहर को एक तेज रफ्तार डंपर ने उसकी स्कूटी को टक्कर मार दी। इस दौरान मोहन सड़क पर गिर गया और ट्रक के पिछला पहिया उसके ऊपर से गुजर गया।

कमर के ऊपर चढ़ा डंपर का पहिया -हादसे में मोहन की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई थी। टक्कर मारकर डंपर चालक मौके से फरार हो गया था, जिसे पुलिस ने पकड़ लिया है। बुधवार को हादसे का वीडियो सामने आया जिसमें डंपर का पहिया स्कूटी सवार के कमर के ऊपर से चढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। पुलिस हादसे की जांच कर रही है। स्थानीय लोगों ने बताया कि नगर के कुछ व्यापारियों ने सड़क तक अपनी दुकान का समान रखा हुआ है, जिससे आए दिन हादसे होते रहते है। लोगों ने प्रशासन से अतिक्रमण हटाने की मांग की है। बुधनी एसडीओपी रवि शर्मा ने बताया घटना में आरोपी देवास निवासी डंपर चालक अजय पिता शिवलाल सहरिया निवासी को गिरफ्तार कर लिया है। डंपर जब्त कर उससे पूछताछ और आगे की कार्रवाई की जा रही है।

विकसित कृषि संकल्प अभियान के संचालन में नहीं छोड़ें कोई कसर: कृषि मंत्री कंषाना

भोपाल (नप्र)। कृषि मंत्री श्री एदल सिंह कंसाना ने कहा कि 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' को सफल बनाने के लिए हर स्तर पर पूर्ण समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ कार्य किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अभियान का प्रभावी प्रचार-प्रसार किया जाए, जिससे अधिकाधिक कृषकों तक शासन की योजनाओं और नवाचारों की जानकारी पहुंचे और वे लाभान्वित हो सकें।मंत्री श्री कंषाना ने यह बात समीक्षा बैठक के दौरान कही।कृषि मंत्री श्री कंसाना ने बताया कि यह अभियान29 मई से प्रारंभ होकर 12 जून तकसंचालित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य किसानों के साथ सीधा संवाद स्थापित करना, उन्नत कृषि तकनीकों, नवीन किस्मों और विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में उन्हें जागरूक करना है। इसके माध्यम से किसानों को फसल उत्पादन बढ़ाने, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने, और नई कृषि तकनीकों के उपयोग के लिए प्रेरित किया जा रहा है। मंत्री श्री कंसाना ने कहा कि यह अभियान किसानों की आय में वृद्धि, खेती को लाभकारी बनाने और आत्मनिर्भर कृषि व्यवस्था की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। सभी संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी इसे पूरी प्रतिबद्धता के साथ लागू करें।अभियान के अंतर्गत कृषि-ड्रोन प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन कृषि विज्ञान केंद्र , आयशर संस्थानों एवं इफको द्वारा किया जा रहा है। आईसीटी माध्यमों से किसानों को योजनाओं की जानकारी दी जा रही है। आयसर वैज्ञानिक, कृषि, बागवानी, पशुपालन एवं मत्स्यपालन विभागों के अधिकारी, प्रगतिशील किसान, कृषि उद्यमी, एफपीओ, एफआईजी, तथा स्व-सहायता समूहों के सदस्य अभियान में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं। बैठक में कृषि सचिव श्री एम. सेलवेन्द्रन, कृषि संचालक श्री अजय गुप्ता, उप संचालक श्रीमती रश्मि बर्गीस सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

राहुल गांधी के 'लंगड़ा' शब्द पर दिव्यांग स्विमर नाराज

पद्मश्री सतेंद्र लोहिया बोले- हम भी देश के नागरिक, हमारा भी आत्मसम्मान; बयान पर स्पष्टीकरण दें

भिंड (नप्र)। लोकसभा में विपक्ष के नेता और पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने भोपाल में अपने भाषण में लंगड़ा शब्द का इस्तेमाल किया। उनके इस बयान पर अंतरराष्ट्रीय पैरा स्विमर और पद्मश्री से सम्मानित सतेंद्र सिंह लोहिया ने आपत्ति ली है।राहुल गांधी के सार्वजनिक बयान पर नाराजगी जताते हुए लोहिया ने कहा कि लंगड़ा शब्द का इस्तेमाल दिव्यांगों के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाने वाला है। उन्होंने एक्स पोस्ट पर लिखा- आदरणीय राहुल गांधी जी, आप राष्ट्रीय स्तर के सम्माननीय राजनेता हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से आपका लंबे समय से आदर करता आया हूं। मैं एक अंतरराष्ट्रीय स्तर का पैरा स्विमर हूं, दिव्यांग हूं, और इस देश का एक जिम्मेदार नागरिक भी हूं।

'लंगड़ा' यह शब्द कानूनी रूप से भी आपत्तिजनक-लोहिया ने लिखा- हाल ही में भोपाल में राहुल गांधी ने 'लंगड़ा' शब्द का प्रयोग किया, जो अत्यंत असंवेदनशील है। उन्होंने इसे दिव्यांग जन अधिकार अधिनियम 2016 के खिलाफ बताते हुए कहा कि यह शब्द कानूनी रूप से भी आपत्तिजनक है और अब सरकारी भाषा में इसका प्रयोग नहीं होता। लोहिया ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए शब्द दिव्यांग का जिक्र करते हुए कहा, यह शब्द हमारी क्षमताओं को दर्शाता है, न कि हमारी चुनौतियों को।

भोपाल कमिश्नर ने मीटिंग ली

पं. खुशीलाल शर्मा आयुर्वेद अस्पताल में लगेंगे सीसीटीवी कैमरे

बीएससी नर्सिंग पाठ्यक्रम शुरू करने सहित कई विषयों पर चर्चा हुई

भोपाल (नप्र)। भोपाल के पं. खुशीलाल शर्मा आयुर्वेद अस्पताल एवं कॉलेज परिसर में सिक्योरिटी के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। गुरुवार को भोपाल कमिश्नर संजीव सिंह ने मीटिंग में यह बात कही। उन्होंने कहा कि सुरक्षा के लिहाज से जरूरी सभी उपाय किए जाएं।

कमिश्नर सिंह गुरुवार को संभागायुक्त ऑफिस के सभाकक्ष में संस्थान की कार्यकारिणी समिति की बैठक ले रहे थे। इसमें उन्होंने कैमरे लगाने के काम को प्राथमिकता से करने की बात कही। संस्थान में इंडोर स्पोर्टस कॉम्पलेक्स निर्माण के लिए प्राक्कलन प्रस्तुत किया गया।

बैठक में संभागायुक्त सिंह ने निर्देश दिए कि इंडोर स्पोर्टस कॉम्पलेक्स के लिए क्रय की जाने वाली सामग्री उच्च गुणवत्ता की हो एवं बेडमिंटन कोर्ट आदि का निर्माण अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के अनुरूप किया जाए। प्रयोगशालाओं में आवश्यक उपकरण एवं पुस्तकालय के लिए पुस्तकें खरीदी जाएं।

इस सत्र से नए नर्सिंग पाठ्यक्रम भी हो

मीटिंग में सत्र 2025-26 में बीएससी नर्सिंग पाठ्यक्रम प्रारंभ करने, संस्थान में कार्यरत अतिथि प्राध्यापकों, शिक्षक-कर्मचारियों आदि की वेतनवृद्धि, अनुकंपा नियुक्ति प्रदान करने, संस्थान चिकित्सालय में दैनिक उपयोग की सामग्रियां क्रय किए जाने, पीएंडटी विभाग में ऑडियोमेट्री मशीन क्रय, लिफ्ट के एनुअल मेंटेनेंस, एक्स रे मशीन की कार्योत्तर स्वीकृति, डीप फ्रीजर क्रय, आदि के संबंध में प्रस्ताव रखे गए। साथ ही कई निर्णय भी लिए गए।

मेपकास्ट द्वारा पूरे प्रदेश में पैंतीस सहयोगी संस्थाओं के माध्यम से मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

भोपाल। मध्य प्रदेश काउंसिल ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी में आज विश्व पर्यावरण दिवस बड़े उत्साह और जागरूकता के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन परिषद के महानिदेशक डॉ. अनिल कोठारी जी के प्रेरणादायक वक्तव्य के साथ हुआ। अपने संबोधन में, डॉ. कोठारी ने सभी उपस्थित विद्यार्थियों को घर के अंदर और बाहर, पर्यावरण की रक्षा के लिए पांच संकल्प लेने का आह्वान किया।

कार्यक्रम की शुरुआत विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण को कैसे बचा सकते हैं की थीम पर आधारित एक पेंटिंग प्रतियोगिता के साथ हुई, जिसमें कुल 35 विद्यार्थियों ने भाग लिया और अपनी रचनात्मकता के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के महत्व को दर्शाया। इसके पश्चात, ग्लोबल वार्मिंग और अभिनव पर्यावरण संरक्षण के उपाय विषय पर एक व्यावहारिक कार्यशाला (हैंड्स-ऑन वर्कशॉप) आयोजित की गई, जिसकी विशेषज्ञ मिस नीलू थीं। इस कार्यशाला में बच्चों ने विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से यह जाना कि कैसे उनके छोटे-छोटे प्रयास भी पर्यावरण को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। कार्यशाला के दौरान, समुद्र में अम्ल की बढ़ती मात्रा के प्रभावों को समझाने के लिए एक रोचक प्रायोगिक प्रदर्शन किया गया। इसमें एक अंडे और सिरके का उपयोग करके यह बताया गया कि कैसे सिरका अंडे की कैल्शियम परत को घोल देता है, ठीक उसी तरह जैसे समुद्र में अम्ल की मात्रा बढ़ने पर हमारी समुद्री जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

इसके उपरांत, पर्यावरण संरक्षण पर एक लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया, तथा मिट्टी से पॉटरी बनाने की कार्यशाला का भी आयोजन हुआ जिसकी विधि बच्चों को पॉटरी विशेषज्ञ श्री अशोक भारद्वाज ने सिखाई। इस कार्यशाला में सभी बच्चों ने अलग-अलग तरीके से पॉटरी बनाना व उसकी बनाने की विधि सीखी।

कार्यक्रम के समापन पर परिषद के वैज्ञानिकों डॉ प्रवीण दिघरी, इंजी. विकास शेन्डे, डॉ. सुनील गर्ग, श्री पंकज गोधारा ने बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के लिए पांच महत्वपूर्ण प्रण दिलाए। बच्चो ने खुद ही यह पांच प्राण तय किये?

1. घर में अनावश्यक बिजली नहीं जलाएंगे
2. जितना आवश्यक हो उतना ही खाना थाली में लेंगे
3. अनावश्यक पानी नहीं बहायेंगे
4. स्वच्छता बढ़ाने आसपास का कचरा डस्टबिन में ही डालेंगे
5. अपने आसपास के लोगों को पर्यावरण संरक्षण हेतु जागृत करेंगे

प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए और सभी बच्चों को एक-एक पौधा भी भेंट किया गया, ताकि वे घर जाकर अपने नाम से एक पौधा लगा सके और उसकी देखभाल कर सकें।

यह पूरा कार्यक्रम मेपकास्ट के साइंस पॉपुलराइजेशन प्रभाग और सेंटर फॉर क्रिएटिव लर्निंग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया । यह कार्यक्रम पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने और युवा पीढ़ी को प्रकृति के संरक्षण के लिए प्रेरित करने में मील का पत्थर साबित हुआ।

पर्यटन विभाग अब कंडम बसों में बनाएगा पिंक टॉयलेट

प्रदेश की पहली पिंक टॉयलेट कन्वर्ट बस पचमढ़ी में लोकार्पित, ओरछा में भी रखी जाएंगी

भोपाल (नप्र)। एक समय सड़कों पर दौड़ीं बसें कंडम होने के बाद टॉयलेट के काम आएंगी। पर्यटन विभाग ने इन बसों को महिलाओं के उपयोग के लिए पिंक टॉयलेट के रूप में तैयार करने का निर्णय लिया है। प्रदेश की पहली पिंक टॉयलेट का दो दिन पहले पचमढ़ी में लोकार्पण हो चुका है, जबकि जल्द ही ओरछा में भी ऐसी ही टॉयलेट स्थापित होगी। इसका संचालन स्व-सहायता समूह करेंगे और जरूरत पड़ने पर इसे एक से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकेगा।

प्रदेश के बड़े शहरों में यातायात व्यवस्था के उपयोग में आने वाली कई बसें अब कंडम हो चुकी हैं। जिनका इस्तेमाल अब सवारी परिवहन में नहीं किया जा सकता है। ऐसी बसों का उपयोग पर्यटन विभाग करेगा। इसमें टॉयलेट बनाए जाएंगे, जो महिला एवं पुरुष इस्तेमाल कर सकेंगे। इन टॉयलेट के पास कैफेटेरिया भी बनाए जाएंगे। ऐसी ही एक बस को पचमढ़ी में पर्यटन विभाग के प्रमुख सचिव शिवशेखर शुक्ला ने लोकार्पित किया है।

शुक्ला ने कहा कि बगैर किसी सरकारी खर्च के इस तरह की चार पिंक टॉयलेट बसों को तैयार करके पचमढ़ी और ओरछा में रखा जाएगा, जो पर्यटन के लिए पहुंचने वाली महिलाओं के लिए उपयोगी होंगे।

सब प्रदूषणों की जड़ मानसिक प्रदूषण : बीके नीता

भोपाल। सुख शांति भवन में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें पर्यावरण और मानसिक शुद्धता के गहरे संबंध पर प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम में डॉ. संजीव जयंत (वरिष्ठ चिकित्सक, हमीदिया अस्पताल) ने इस वर्ष की थीम बीट प्लास्टिक पोल्यूशन पर सारगर्भित विचार साझा किए। उन्होंने बताया कि प्लास्टिक प्रदूषण से बचाना से लड़ना अब विकल्प नहीं बल्कि जरूरत है भारत वर्ष में उन्होंने सिंगल उसे प्लास्टिक का बहिष्कार करने का आवाहन करते हुए कहा कि अकेले भारतवर्ष में डेढ़ करोड़ टन प्लास्टिक प्लास्टिक कचरा उत्पन्न हो रहा है रीसायकल नहीं हो पता है। हम सभी को मिलकर प्रदूषण मुक्त जीवन शैली अपनाने की आवश्यकता है। क्योंकि प्लास्टिक बायोडिग्रेडेबल पदार्थ नहीं है। ना यह मिट्टी मिलता है,ना पानी में घुलता है और जलाने पर भी इसका प्रभाव और भी दुष्कर होता है। इसके इस्तेमाल से होने वाली घातक बीमारियां भी निरंतर गंभीर रूप से बढ़ती जा रही है जैसे कि कैंसर । वही इस अवसर पर सुख शांति भवन की निदेशिका आदरणीय राजयोगिनी नीता दीदी जी ने कहा संपूर्ण ब्रह्मांड में पृथ्वी के बिना कहीं भी जीवन यापन संभव है क्योंकि जीवन के लिए आवश्यक संसाधन जैसे ऑक्सीजन,पानी, वायु इत्यादि केवल पृथ्वी पर उपलब्ध है परंतु आज मनुष्य अनैतिकता के चलते अपनी ही संरचना को नष्ट कर रहा है,जिससे पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीवो के जीवन भी संकट में आ गया है। सभी प्रतिभागियों को प्रकृति-संरक्षण की प्रतिज्ञा कराई। उन्होंने कहा, हर पौधा, आत्मा की तरह जीवंत है। जब हम एक पौधा लगाते हैं, तो हम धरती के साथ रिश्ते को मजबूत करते हैं।

इस अवसर पर भ्राता रामकुमार जी ने कहा कि, बाहरी प्रदूषण से पहले हमें अपने मन के प्रदूषण को शुद्ध करना होगा। क्रोध, चिंता, ईर्ष्या जैसे मानसिक विकार ही बाहरी प्रदूषण का कारण बनते हैं। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग ध्यान को मानसिक और पर्यावरणीय शुद्धता का प्रभावशाली उपाय बताया।

साथ ही आर्किटेक्ट दुर्गा जी ने सभी से नारे लगवाए

हमेशा साथ में ले कपड़े का थैला,
प्लास्टिक थैली से ना करें देश को मैला,
समृद्ध भविष्य के लिए है जरूरी,
सिंगल यूज़ प्लास्टिक से बनाएं अब दूरी

कार्यक्रम में सभी ने मिलकर पौधारोपण किया और धरती माता के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उसका संरक्षण करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम का उद्देश्य केवल पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना नहीं था, बल्कि आत्मा और प्रकृति के बीच के अटूट रिश्ते को पहचानना भी था।

सहकारिता विभाग पूरी प्लानिंग के साथ सोसायटी और परिसरों में लगायें पौधे

मंत्री सारंग ने अपेक्स बैंक परिसर में लगाया अशोक वृक्ष

भोपाल। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा है कि सहकारिता विभाग पूरी प्लानिंग के साथ हर सोसायटी और विभागीय परिसरों में पौधरोपण करें। उन्होंने इसके लिये राज्य संघ और बीज संघ को इसकी जिम्मेदारी दी। उन्होंने कहा कि दीर्घकालीन और छायादार सहित उपयोगी प्रजाति के पौधो का रोपण किया जाये। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि मास्टर प्लान इस तरह का हो कि संरक्षण और संवर्धन के साथ साल भर में लाखों पौधे लगे। मंत्री श्री सारंग ने गुरूवार को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक पेड़ माँ के नाम कार्यक्रम के तहत अपेक्स बैंक परिसर में अशोक का पौधा रोपा। अपर मुख्य सचिव श्री अशोक वर्णवाल ने भी पौधरोपण किया।

सनातन धर्म पर्यावरण का देता है संदेश-मंत्री श्री सारंग ने कहा कि पर्यावरण का संरक्षण-संवर्धन करना और आगे आने वाली पीढ़ी को जागरूक करना हमारी जिम्मेदारी है। हमारी संस्कृति, सनातन, दर्शन, धर्म, विचार सब पर्यावरण से जुड़ा हुआ है। पर्यावरण का अर्थ है पेड़, पौधे, पहाड़, नदियाँ और ईको सिस्टम से मनुष्य पशु-पक्षी सब जुड़े हैं। भारतीय संस्कृति नदी को वॉटर बॉडी नहीं मानती, हमारा अध्यात्म दर्शन नदी को माँ मानता है। नर्मदा मैया और गंगा मैया की हम अर्चना करते है, पर्वत को भगवान स्वरूप पूजते है। गोवर्धन पर्वत और कामतानाथ जी की हम परिक्रमा करते है। महिलाएँ साल भर में 5-6 ऐसे त्यौहार मनाती है जिसमें पेड़ों की परिक्रमा की जाती है। हरतालिका तीज जैसे त्यौहारों का विशेष महत्व है। यही नहीं भगवान का वाहन पशु-पक्षी हैं। शिवजी जहां एक ओर नाग को धारण किये है वहीं जटाओं के जरिये माँ गंगा को पृथ्वी पर लाये है। हमारा पूरा दर्शन, सनातन, धर्म, विचार पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता है।

विकास हो विरासत के साथ-मंत्री श्री सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विकास की बात की तो विरासत को साथ लेकर चलने की बात की। विकास का मतलब पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचें और पेड़ भी नहीं कटे। कारखाने लगना विकास और भविष्य की लिये जरूरी है। इसलिये मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कैबिनेट के माध्यम से निर्णय लिया कि जितना औद्योगिक क्षेत्र बने उतना वन भी लगाया जाये। प्रधानमंत्री श्री मोदी एक पेड़ माँ के नाम का संदेश यही है कि पृथ्वी माँ को चिरस्थायी बनाने के लिये पौधरोपण करें।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एम्स भोपाल में जागरूकता अभियान का आयोजन

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें इस वर्ष की थीम प्लास्टिक प्रदूषण का अंत के संदर्भ में पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण के महत्व पर व्यापक चर्चा की गई। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था लोगों को प्लास्टिक के उपयोग को कम करने, पुन: उपयोग एवं रिसाइक्लिंग को अपनाने के साथ-साथ अपने आस-पास अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करना, ताकि पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। वृक्षारोपण न केवल वायु को शुद्ध करता है, बल्कि जल संरक्षण और जैव विविधता के संवर्धन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस कार्यक्रम में एम्स भोपाल के फैकल्टी सदस्य, रेजिडेंट डॉक्टर, नर्सिंग अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्रगण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, प्लास्टिक प्रदूषण हमारे पर्यावरण के लिए एक गंभीर चुनौती है, जिसे समाप्त करना आज हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। प्लास्टिक का अनियंत्रित उपयोग न केवल भूमि और जल स्रोतों को प्रदूषित करता है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव डालता है। वृक्षारोपण जैसे प्राकृतिक उपायों के माध्यम से हम पर्यावरण को पुनर्जीवित कर एक स्वस्थ जीवन सुनिश्चित कर सकते हैं। इसलिए हमें मिलकर प्लास्टिक के उपयोग को न्यूनतम करने और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। यह पहल आम जनता को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने तथा दैनिक जीवन में सतत और सकारात्मक कदम उठाने के लिए प्रेरित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

आर्मी जवान ने सगाई के बाद शादी तोड़ी

भोपाल (नप्र)। भोपाल में आर्मी जवान ने दहेज में 15 लाख रुपए कैश देने की डिमांड पूरी नहीं करने से नाराज होकर शादी तोड़ दी। पीड़ित पक्ष ने महिला थाने में इसकी शिकायत की थी। शिकायत की जांच के बाद पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर ली है। पुलिस आरोपी को गिरफ्तारी का नोटिस देने की तैयारी में है। थाना प्रभारी अंजना दुबे ने बताया कि 28 वर्षीय युवती नगर निगम में कर्मचारी है। जनवरी-2025 में उसका रिश्ता राजू शर्मा से पक्का हुआ था और कुछ समय पहले सगाई हुई है। राजू आर्मी में जवान है। युवती के परिवार वाले शादी की तारीख तय करने की तैयारी में थे। इस बीच राजू और उसके घर वालों ने दहेज में 15 लाख रुपए और बाइक की डिमांड कर दी। लड़की वालों ने इसमें असमर्थता जताई।

युवती के पिता की हो चुकी है मौत-युवती ने लड़के वालों से साफ कहा-उसके पिता इस दुनिया में नहीं है। शादी की जिम्मेदारी उसी पर है। ऐसे में 15 लाख रुपए की डिमांड पूरी करना मुश्किल होगा। इतना पता होने के बाद भी आरोपी का मन नहीं बदला और रिश्ता खत्म कर दिया।

गंगा दशहरा के शुभ मुहूर्त पर करुणाधाम आश्रम द्वारा धर्मशाला का भूमि पूजन

भोपाल। श्री पंढरपुर धाम में धर्मशाला का विधि विधान से भूमि पूजन किया गया। आश्रम के श्री शाश्वत शांडिल्य ने बताया कि पीठाधीश्वर गुरुदेव श्री सुदेश शांडिल्य महाराज और ममतामयी श्रीमाँ श्रीमती शाण्डिल्य ने धर्मशाला का विधि विधान से भूमि पूजन किया। इसके बन जाने से श्रद्धालुओं को सुविधा होगी। करुणाधाम आश्रम भक्तों की सेवा के लिए धर्मशाला का निर्माण प्रारंभ कर दिया है। जल्द ही धर्मशाला श्रद्धालुओं की सेवा के लिए तैयार होगी। इस मौके पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

राइट क्लिक

हर इवेंट का सियासी श्रेय लेने की सोच का नतीजा है बेंगलुरू हादसा

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरू में आईपीएल में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (आरसीबी) की जीत का जश्न अगर मातम में तब्दील हो गया और स्टेडियम के बाहर मची भगदड़ में 11 निर्दोष लोगों की जानें चली गईं तो इसके पीछे प्रशासनिक लापरवाही है ही, असल कारण खेल में मिली जीत को परोक्ष रूप से राजनीतिक विजय में तब्दील करने की घटिया सोच है। कर्नाटक में फिलहाल कांग्रेस की सरकार है, लेकिन दुर्भाग्य से आज भारत में कोई भी राजनीतिक पार्टी इस निम्नस्तरीय सोच और उसे जल्द से जल्द राजनीतिक रूप से भुनाने की दूषित मानसिकता से मुक्त नहीं है। वरना कोई कारण नहीं था कि आईपीएल फाइनल के दूसरे ही दिन आनन- फानन में बिना समुचित प्रबंध और आयोजना के आरसीबी की विक्ट्री परेड निकाली जाए, गनीमत थी कि पुलिस के इंकार के बाद वह रद्द हो गई और कार्यक्रम स्टेडियम में विजेता टीम के स्वागत तक सीमित हो गया। स्वागत भी ऐसा, जिसे स्वीकार कर अब आरसीबी टीम खुश होने के बजाए शर्मिंदा ज्यादा है। आज राजनेताओं की संवेदनाएं कितनी कुंद हो चुकी है, यह इस बात का निकृष्ट उदाहरण है कि जब सारा देश मीडिया के माध्यम से जिस चिन्ना स्वामी स्टेडियम के बाहर भगदड़ में कुचले मृत शरीरों और घायलों को निकाले जाते देख रहा था, वहीं स्टेडियम के भीतर आरसीबी टीम को मिली जीत की ट्रॉफी हाथों में उठाकर कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी. शिवकुमार गदगद हो रहे थे। उसी दौरान राज्य के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया भी विजेता टीम के साथ फोटो सेशन करवा कर प्रसन्न थे। क्या सरकार के सूचना तंत्र ने सीएम और डिप्टी सीएम को बाहर घट रहे इस भयंकर हादसे की तत्काल सूचना नहीं दी होगी, क्या स्टेडियम के भीतर स्वागत करवा रहे खिलाड़ियों को भी बाहर हो रही भगदड़ की जरा भी भनक नहीं लगी होगी? आज जब हर आदमी, हर दूसरे मिनट सोशल मीडिया चेक करने की लत से पीड़ित है, क्या तब स्टेडियम के अंदर मौजूद कोई भी व्यक्ति बाहर दम तोड़ते खेल प्रशंसकों की पीड़ा से संवेदित नहीं था? कायदे से तो भगदड़ की पहली सूचना मिलते ही आयोजकों को तत्काल स्वागत समारोह रद्द कर हादसे में मृत लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त कर कार्यक्रम समाप्त कर देना चाहिए था। लेकिन ऐसा करने के बजाए कर्नाटक के डीसीएम सफाई दे रहे थे कि हादसे की जानकारी मिलने के बाद कार्यक्रम 10 मिनट में ही निपटा दिया गया? लेकिन दस मिनट भी क्यों? इसका जवाब न तो कर्नाटक सरकार के पास है और न ही इसकी मूल आयोजक बताई जा रहे आरसीबी टीम की फ्रेचाइंजी कंपनी यूनाईटेड स्पिरिट्स लि. के पास है। हालांकि रात में कंपनी की ओर से मृतकों के प्रति शोक व्यक्त करने की औपचारिकता निभाई गई।

सवाल यह भी उठ रहा है कि आरसीबी ने भले ही 18 साल बाद आईपीएल ट्रॉफी उठाई हो, लेकिन विजेता टीम का भव्य स्वागत करने की इतनी जल्दी क्या थी? बताया जा रहा है कि यह सब इसलिए किया गया कि आरसीबी फ्रेंचाइजी कंपनी सभी विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित कर इसे अपने पक्ष में मेगा इवेंट में तब्दील करना चाहती थी। दूसरे, टीम के चार विदेशी सदस्यों को स्वदेश लौटने की जल्दी थी, इसलिए भी ताबड़तोड़ तरीके से यह जश्न आयोजित किया गया। चूंकि इस टीम के नाम के साथ बेंगलुरू भी जुड़ा हुआ है, इसलिए इसे कन्नड अस्मिता और वर्चस्व के साथ जोड़ने का परोक्ष राजनीतिक प्रयोग भी हुआ। जबकि हकीकत में आरसीबी न तो किसी कन्नड व्यक्ति की कंपनी है और न ही टीम में कोई कन्नड खिलाड़ी है। मूलत: इस टीम की मालिक बैंक घोटाले में भगोड़े विजय माल्या के पास थी। विजय जरूर कन्नडिगा हैं। लेकिन बाद में उन्होंने यह कंपनी ब्रिटिश मल्टीनेशनल कंपनी जायंट डिएगो को बेच दी है। अब यूनाइटेड स्पिरिट्स उसी एमएनसी की सहायक कंपनी है। यही नहीं, इस टीम के 11 में से चार खिलाड़ी तो विदेशी हैं और बाकी 7 सात गैर कन्नड और गैर कर्नाटकी हैं। टीम की कप्तानी मप्र के रजत पाटीदार के पास है तो टीम के हीरो विराट कोहली दिल्ली के हैं।

बावजूद इस हकीकत के यह माहौल बनाया गया कि यह जीत कर्नाटक की महाविजय है। ये हाइप बनाया गया कि आरसीबी टीम ने आईपीएल (जो अपने आप में पैसे का ही पूरा खेल है) ट्रॉफी जीत कर इतिहास रच दिया है। अघोषित रूप से इसमें अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में आरसीबी द्वारा पंजाब किंग्स को हराने का सियासी आत्मिक सुख भी शामिल था।

आरसीबी और राज्य सरकार के इस 'कर्नाटक गौरव इवेंट हाइप' में मीडिया भी बराबरी से हिस्सेदार था। लिहाजा यह तस्वीर पेंट की जाने लगी कि आईपीएल की जीत किसी अंतरराष्ट्रीय ट्रॉफी जीतने से कमतर नहीं है। सोशल मीडिया में तो यह जीत पागलपन की तरह छा गई। यही कारण था कि बेंगलुरू के अधिकांश युवा विजेता टीम और अपने नेताओं की एक झलक पाने के लिए भीड़ में कुचले जाने के लिए भी तैयार हो गए। यहां एक सवाल यह भी है कि जिन खिलाड़ियों को खेलते हुए महीने भर से लोग तकरीबन रोज टीवी पर देख रहे हैं, सोशल मीडिया पर उनके सारे कारनामे वायरल हैं, बावजूद इसके युवा सीधे उन्हें देखने के लिए इस तरह क्यों पगलाए रहते हैं? ऐसा कौन सा आकर्षण है, जो सेलेब्रिटी खिलाड़ी के करीब जाकर या उसे छूकर ही पूरा हो सकता है, जबकि पूरी विजेता टीम एक बंद बस में हाथ हिलाते गुजरने वाली थी। यानी बाहर से ज्यादा कुछ नहीं दिखना था, फिर भी तीन लाख से ज्यादा लोग, जिनमें ज्यादातर युवा थे, सब काम छोड़कर स्टेडियम के बाहर क्यों जमा हो गए? इनमे से कई तो पेड़ों पर चढ़कर और जिसे जहां जगह मिले वहां घुसकर खिलाड़ियों को देखना चाहता था। ऐसा पागलपन तो उस समय भी नहीं देखने को मिला था, जब भारत ने 1983 में पहली बार कपिलदेव के नेतृत्व में वन- डे वर्ल्ड कप जीता था। तब टीवी नया- नया आया ही था और सोशल मीडिया का अता पता नहीं था। हर भारतीय खुश था, लेकिन संयत भाव से। युवाओं की निर्बुद्ध दीवानगी के इस यक्ष प्रश्न का उत्तर शायद यही है कि सोशल मीडिया के गुलाम हो चुके युवा अपने चहेते स्टार के साथ या उसके अगल बगल, विचित्र मुद्राओं में फोटो खिंचवा कर उसे जल्द से जल्द सोशल मीडिया में पोस्ट कर ज्यादा से ज्यादा लाइक्स और व्यूज की खयाली दुनिया के स्वर्गिक आनंद उपभोगना चाहते हैं। यह तर्कातीत ऐहिक दुनिया है। दुर्भाग्य से इन तमाम सोशल मीडिया वीरों में चंद लोगों को छोड़ दें तो कोई भी आज विराट कोहली या रजत पाटीदार बनने के लिए पसीना बहाना और अडिग साधना नहीं करना चाहता। क्योंकि उसमें मेहनत लगती है, मोबाइली जिंदगी को दूर रखना पड़ता है। जबकि वो एक फोटो खिंचवाकर ही क्षणभर में विराट बनने का क्षणिक सुख भोगकर ही संतुष्ट हैं। रील बनाने के लिए जान गंवाने का जोखिम उठाना, बिना सोचे समझे कहीं भी वीडियो बनाना और तुरंत सोशल मीडिया पर पापुलर हो जाने की अजब और निरर्थक जिद भी बेंगलुरू हादसे का बड़ा कारण है। अफसोस कि राजनीति पार्टियां भी इसी 'थोथे इंवेट कल्चर' को न सिर्फ पोषित कर रही हैं, बल्कि उसे सत्ता प्राप्ति और श्रेयार्जन का मटेरियल मान रही हैं। आरसीबी जश्न के मातम में तब्दील होने को ही दोष क्यों दें, ऑपरेशन सिंदूर को राजनीतिक रूप से भुनाने और उसे हर संभव तरीके से खारिज करने का सियासी खेल भी इसी मानसिकता से उपजा है। राजनीतिक दांव पिट जाए तो उसे हादसा कहना और हादसे पर फिर राजनीतिक रोटियां सेंकना अब इस देश की सियासी फितरत बन चुकी है।

यूं हमेशा की तरह कर्नाटक सरकार ने इस हादसे की न्यायिक जांच के आदेश दिए हैं। उसकी रिपोर्ट आने के बाद कुछ कार्रवाई हो भी हो सकती है या उसे ठंडे बस्ते में डाला सकता है। मृतकों के परिजनों और घायलो को मुआवजे का ऐलान हो ही चुका है। बेंगलुरू की नई सुबह भी वैसी अफरा तफरी भरी है। बुधवार के हादसे को लेकर राजनीतिक पार्टियां एक दूसरे को दोषी ठहरा कर हादसे पर राजनीति न करने का सुभाषित पेलती रहेंगी। हकीमत मेंउधर प्रशासन से लेकर आईपीएल की आयोजक बीसीसीआई तक ने पूरे आयोजन से पल्ला झाड़ लिया है। जिंदगी भर का दर्द सिर्फ उनके हिस्से में रहना है, जिनके युवा बेटे, बेटी, बहन- भाई इस भगदड़ में अपनी जान हमेशा के लिए गंवा बैठे। आरसीबी की जीत को अब वो विजेता टीम भी शायद ही सेलिब्रेट कर पाए, जो यह सोचकर खुश थी कि जश्न का यह मौका 18 साल बाद आया है। घोर मातम में तब्दील हो चुके जीत के इस जश्न पर महान क्रिकेट खिलाडी और आरसीबी प्लेयर विराट कोहली की अत्यंत मार्मिक पोस्ट है कि मेरे पास कहने के लिए शब्द नहीं हैं। मैं पूरी तरह टूट चुका हूं। लेकिन क्या नेताओं राजनीतिक भूख टूटी है? क्या जीवन के हर पल को इवेंट में बदलने की कुबुद्धि बदली है? क्या सोशल मीडिया वीरों की पल में फेमस होने के लिए किसी भी हद तक जाने की मूर्खतापूर्ण जिद टूटी है? शायद नहीं!

मध्यप्रदेश की टूरिज्म पॉलिसी निवेशकों के अनुकूल है : प्रमुख सचिव शुक्ला

दुनिया में हेल्थ एंड वेलनेस बहुत बड़ा सेक्टर है : प्रमुख सचिव सिंह

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश की टूरिज्म पॉलिसी एवं वातावरण निवेशकों के अनुकूल है। उज्जैन नगरी हार्ट ऑफ स्पिरिचुअल इंडिया है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में सरकार ने टूरिज्म पॉलिसी 2025 लागू की है। इसके तहत 10 से 30 प्रकार की अनुमतियां ऑनलाईन समय-सीमा में उपलब्ध कराई जा रही है। पर्यटन के क्षेत्र में हॉटल, रिसॉर्ट, और अन्य प्रकार की पर्यटन सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए पूंजी-निवेश पर 15 से 30 प्रतिशत का अनुदान दिया जा रहा है। निवेशक स्पिरिचुअल एवं वेलनेस के क्षेत्र में निवेश के लिए आगे आएं, उन्हें शासन द्वारा हर संभव सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएंगी। यह बात प्रमुख सचिव पर्यटन श्री शिव शेखर शुक्ला ने गुरूवार को उज्जैन में 'स्पिरिचुअल एंड वेलनेस समिट-2025' में पैनल डिस्कशन सत्र को संबोधित करते हुए कही।

मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम, मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास निगम एवं आनंद विभाग के संयुक्त तत्वावधान में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में इस स्पिरिचुअल एंड वेलनेस समिट-2025 के दौरान दो सत्रों में पैनल डिस्कशन हुआ। जिसमें विषय विशेषज्ञों ने सार्थक चर्चा की। प्रथम सत्र के पैनल डिस्कशन में योगा निसर्ग एण्ड वैदिक योगा स्कुल के संस्थापक स्वामी चैतन्य हरी जी, एवीएन ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ रमेश वारियर, अपोलो आयुर्वेद पोजेक्ट लीडर डॉ. मेघा केएल, लाईसॉर होटल्स के डायरेक्टर श्री मुकुन्द

प्रसाद, इकोनोमिक्स टाईम्स की एडिटर सुश्री दीपशिखा, प्रमुख सचिव पर्यटन श्री शिव शेखर शुक्ला, प्रमुख सचिव औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन तथा आनंद विभाग श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह ने भाग लिया।

प्रथम सत्र के पैनल डिस्कशन में प्रमुख सचिव श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि दुनिया में हेल्थ एवं वेलनेस सेक्टर बहुत बड़ा है। देश में मध्यप्रदेश ही एकमात्र राज्य है जहां आनंद विभाग है। उज्जैन आध्यात्मिक कला, संस्कृति एवं विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन काल से ही पहचाना जाता रहा है। प्रशासनिक क्षेत्र में भी सम्राट विक्रमादित्य ने इस नगरी को विशेष पहचान दिलाई है। यह आध्यात्मिकता एवं वेलनेस का केन्द्र है। प्रमुख सचिव श्री सिंह ने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मध्यप्रदेश हमेशा नवाचारों के लिए जाना जाता है। उन्होंने निवेशकों से कहा कि आपके सुझावों पर अमल किया जाएगा।

कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह ने सिंहस्थ 2028 को ध्यान में रखते हुए आध्यात्मिक नगरी उज्जैन में किए जा रहे व्यापक विकास एवं निर्माण कार्यों उन्होंने तैयारियों के बारें में प्रजेंटेशन के माध्यम से विस्तार से अवगत कराया और उज्जैन के समग्र विकास के लिए कार्ययोजना पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि उज्जैन में सिंहस्थ को ध्यान में रखते हुए सुगम आवागमन की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही है। सदावल में 4 हेलिपेड का निर्माण कार्य जारी है, क्षिप्रा नदी को अविरल प्रवाहमान बनाने के लिए कान्ह डायवर्सन क्लॉज डक्ट परियोजना पर तेजी से काम किया जा रहा है, क्षिप्रा नदी पर दोनो ओर 29 कि.मी नए घाट बनाए जा रहे है। सिंहस्थ मेला क्षेत्र में 2,376 हेक्टेयर में नगर विकास योजना पर कार्य किया जा रहा है। सड़क, सीवेज, पेयजल, बिजली आदि बुनियादी सुविधाओं के स्थाई स्वरूप से विकास एवं विस्तार पर विशेष तौर पर कार्य किया जा रहा है। उन्होंने निवेशको से आवाह्न किया कि वे उज्जैन को स्पिरिचुअल एवं वेलनेस सेंटर का हब बनाने में निवेश के लिए आगे आए।

बिल्डिंग वेलनेस इकोसिस्टम एण्ड वर्क फोर्स विषय पर दूसरे सत्र के पैनल डिस्कशन में प्रमुख सचिव श्री संदीप यादव, वीपी कैरली आयुर्वेदिक ग्रुप की सुश्री मोना वालिया, तिरुपति एस्टेट्स के डायरेक्टर श्री महेश पारयानी ,आईआईएम इंदौर के डायरेक्टर श्री हिमांशु राय, ताईवान इंडिया आयुर्वेद ऐसोसिएशन के सहसंस्थापक श्री शुभम अग्निहोत्री, स्पोर्टस फिटनेस कोच श्री विजय ठक्कर, आयुष मंत्रालय भारत सरकार की संयुक्त सचिव सुश्री कविता गर्ग, इकोनॉमिक्स टाईम्स के श्री आशुतोष सिन्हा ने भाग लिया और विस्तार से चर्चा की। प्रमुख सचिव श्री संदीप यादव ने कहा कि देश में मध्यप्रदेश में सबसे अच्छी वेलनेस पॉलिसी है। उज्जैन में रोजाना एक लाख से अधिक दर्शनार्थी आते है। कार्यक्रम का संचालन सुश्री शिखा सिंह ने किया तथा सत्र के अंत में सूत्रधार सुश्री दीपशिखा एवं श्री आशुतोष सिन्हा ने मंचासीन विषय विशेषज्ञों एवं पेनलिस्टों को स्मृति चिन्ह भेंट किए। इस अवसर पर जन प्रतिनिधि, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी और बड़ी संख्या में स्पिरिचुअल वेलनेस समिट में भाग लेने देश व प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए, निवेशक एवं प्रतिभागी उपस्थित थे।

एमपी में प्री-मानसून में आंधी-बारिश का मौसम

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में गुरुवार को भी प्री-मानसून की एक्टिविटी देखने को मिल रही थी। दोपहर 3 बजे से रायसेन में तेज बारिश शुरू हो गई थी। मौसम विभाग ने ग्वालियर, रतलाम समेत कुल 27 जिलों में आंधी-बारिश का यलो अलर्ट जारी किया है। मानसून के आने से पहले जून के पहले सप्ताह में प्रदेश में गर्मी का असर रहता है। भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर-जबलपुर समेत कई शहरों में दिन का तापमान 40 डिग्री के पार पहुंच जाता है, लेकिन इस बार ऐसा नहीं है। इन शहरों में पारा 40 डिग्री से नीचे ही है। वहीं, यहां बारिश का दौर चल रहा है। अगले 4 दिन भी आंधी-बारिश का अलर्ट है।

मौसम विभाग के अनुसार, गुरुवार को ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, अशोकनगर, विदिशा, सागर, कटनी, उमरिया, डिंडोरी, मंडला, सिवनी, पांढुर्णा, बैतूल, हरदा, खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, बड़वानी, अलीराजपुर, रतलाम, मंदसौर और नीमच में आंधी-बारिश का अलर्ट है। यहां पर आंधी की रफ्तार 40 से 50 किलोमीटर प्रतिघंटा तक रह सकती है।

मध्यप्रदेश में पिछले 24 घंटे के अंदर कुल 35 जिलों में तेज आंधी के साथ बारिश हुई। जिन जिलों में बारिश हुई, उनमें इंदौर, धार, खंडवा, झाबुआ, बड़वानी, खरगोन, बुरहानपुर, भोपाल, सीहोर, रायसेन, राजगढ़, विदिशा, रीवा, सिंगरौली, सीधी, मऊगंज, सतना, रतलाम, उज्जैन, शाजापुर, आगर-मालवा, देवास, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, मंडला, कटनी, जबलपुर, दमोह, सागर, पन्ना, छतरपुर, अशोकनगर और बालाघाट शामिल हैं।

उज्जैन में वेलनेस निवेश को मिला मुख्यमंत्री डॉ. यादव का प्रोत्साहन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन में स्पिरिचुअल और वेलनेस समिट में वेलनेस क्षेत्र के निवेशकों से वन-टू-वन चर्चा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निवेशकों को मध्यप्रदेश में निवेश के लिए खुले दिल से आमंत्रित किया और

राज्य की अनुकूल निवेश नीतियों पर प्रकाश डाला। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निवेशकों को मध्यप्रदेश में निवेश के लिए प्रोत्साहित किया। सभी निवेशकों ने मध्यप्रदेश की निवेश अनुकूल और प्रगतिशील नीतियों की सराहना की और प्रदेश में निवेश के लिए संकल्प लिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव से अरबिंदो हॉस्पिटल ग्रुप के चेयरमैन डॉ. विनोद भंडारी, लीजर होटल्स ग्रुप के डायरेक्टर श्री मुकुंद प्रसाद, शतायु आयुर्वेद के सीईओ और एमडी डॉ. मृत्युंजय स्वामी, मेफ़ेयर ट्रैवल्स के एमडी श्री शरद थडानी, लाभम ग्रुप के डायरेक्टर श्री युगांश सोनी, शांतिगिरी आश्रम के जोनल हेड स्वामी चितासुधन ज्ञान तपस्वी, रॉयल ऑर्किड होटल के डायरेक्टर श्री सुदीप रॉय, एरा हॉस्पिटैलिटी के संस्थापक श्री शिवंदर सिंह, सीएचएल हॉस्पिटल ग्रुप के डायरेक्टर श्री राजुल भार्गव, लेटेन्ट डेवकॉन के डायरेक्टर श्री देवांग कपाडिया, जिंदल नेचरक्योर इंस्टीट्यूट के चीफ एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर श्री सुधीर एम.वी., ट्रैवलपैक के चेयरमैन श्री अशोक पटेल, हार्टफुलनेस इंटरफेथ प्रोग्राम्स एंड इवेंट के डायरेक्टर श्री त्रिलोचन चावला और सनसेट डेजर्ट कैंप के सीईओ और एमडी श्री हितेश्वर सिंह सिसौदिया ने वन-टू-वन चर्चा की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में, मध्यप्रदेश वेलनेस और आध्यात्मिक पर्यटन के केंद्र के रूप में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। निवेशकों के इस उत्साहजनक प्रतिसाद से प्रदेश में रोजगार सृजन और आर्थिक विकास को नई गति मिलने की उम्मीद है, जिससे मध्यप्रदेश को वैश्विक वेलनेस मानचित्र पर एक प्रमुख स्थान मिल सकेगा।

सिकल सेल रोग अनुसंधान के लिए चिकित्सक आगे आएं: राज्यपाल

शादी के पूर्व जेनेटिक कार्ड मिलान जरूर किया जाये, राज्यपाल सिकल सेल सेंसेटाइजेशन कार्यक्रम में हुए शामिल

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने कहा कि सिकल सेल उन्मूलन प्रयासों में शोध और अनुसंधान पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। चिकित्सा की विभिन्न पद्धतियों के द्वारा रोग उन्मूलन के लिए समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हमारे वनों में प्रचुर मात्रा में जड़ी-बूटियां उपलब्ध है। आवश्यकता शोध और अनुसंधान के द्वारा उनकी उनकी उपयोगिता के प्रमाणीकरण की है।

राज्यपाल श्री पटेल गांधी मेडिकल कॉलेज में आयोजित सिकलसेल सेंसेटाइजेशन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन गांधी मेडिकल कॉलेज की एलुमिनाई द्वारा किया गया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल भी मौजूद रहे।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि सिकल सेल के उन्मूलन प्रयासों के लिए सबके साथ और सबके प्रयासों की एकजुट आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर सिकल सेल की जागरुकता में सक्रिय सहभागिता करें। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि वर्ष 2047 तक सिकल

सेल उन्मूलन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जागरुकता ही सबसे बड़ा टूल है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति सिकल सेल के लक्षणों, उपचार और संभावनाओं के प्रति स्वयं जागरूक हो। फिर जागरूकता दूत के रूप में अपने आस-पास, और समुदाय को जागरूक करें।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि नई पीढ़ी को सिकल सेल एनीमिया से बचाने के लिए वर-वधू शादी के पूर्व सिकल सेल जेनेटिक कार्ड का मिलान ज़रूर करें। गर्भावस्था में जरूरी जाँचे कराए। संतान के जन्म के 72 घंटे के भीतर उनकी सिकल सेल एनीमिया की जाँच अवश्य करें। राज्यपाल श्री पटेल ने सिकल सेल से पीड़ित बच्चों एवं उनके परिजनों से आत्मीय मुलाक़ात की। उनकी कुशल क्षेम जानी। सभी को अच्छे खान-पान, व्यायाम और पौष्टिक आहार लेने की सलाह दी।

उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शहडोल से प्रारम्भ हुए सिकल सेल उन्मूलन मिशन- 2047 के तहत प्रदेश सरकार के प्रयासों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सिकल सेल जाँच की गहनता को बढ़ाने, प्रदेश के सभी मेडिकल कॉलेजों में प्रीनेटल टेस्टिंग के सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस की स्थापना की जाएगी। सांसद श्री आलोक शर्मा ने सिकल सेल उन्मूलन की प्रतिबद्धता के लिए केंद्रों एवं राज्य सरकार के सघन प्रयासों की विस्तार से जानकारी दी और सराहना की।

राज्यपाल श्री पटेल का कार्यक्रम में पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया। राज्यपाल श्री पटेल को सिकल सेल जागरूकता पर आधारित किताब और एच.पी.सी.एल. की डायग्नोस्टिक किट भेंट की गई। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर राज्यपाल श्री पटेल को एलुमिनाई एसोसिएशन के प्रतिनिधियों द्वारा पौधे भेंट किए गए। उन्होंने इन पौधों को गांधी मेडिकल कॉलेज परिसर में रोपण के लिए दे दिया।